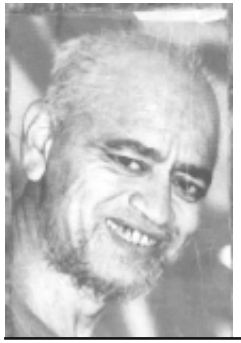

संस्कार सागर

• वर्ष : 20 • अंक : 235 • नवम्बर 2018

• वीर नि.संवत 2545 • विक्रम सं. 2074 • शक सं. 1939

लेख

- चातुर्मास में निगाह साधु चर्या पर 08
- जैन तीर्थ नैनागिरि में संस्थापित संयम कीर्ति स्तंभ 12
- मिट्टी के दीपक में समाया है मनुष्य की जिंदगी का बुनियादी सच 14
- समाज के प्रति विद्वानों का दायित्व 18
- सकरात्मक सोचें, सफलता पाएँ-राष्ट्र संत 22
- जैन व्यक्तित्वडॉ.जगदीश चन्द्र जैन 25
- भगवान महावीर की योग ध्यान विद्या है दीपावली महापर्व 39
- हिन्दी जैन साहित्य में राजुल आख्यान का विकास 44
- आचार्य श्री वीरसेन स्वामी का अवदान 47

बाल कहानी

- डॉक्टर की सिगरेट 59

कविता

- मसान में घर के 11
- वो लूटते रहे उम्र भर चमन के लिये 16
- माँ 24
- दीप मालिका आओं गृह-गृह 26
- मानवता का दीप जले 59

कहानी

- गाँव उजड़ जायेगा 41

नियमित स्तंभ

• **पाती पाठकों की** : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 16
• चलोदेखें यात्रा : 24 • • डाकटिकटों पर जैन इतिहास : 25 आगम दर्शन :27 • पुराण प्रेरणा : 31
• माथा पच्ची : 31• कैरियर गाइड : 32 • दुनिया भर की बातें : 33 • इसे भी जानियेः 37
•दिशा बोध : 38 • आओसीखें : जैन न्याय : 40 • हमारे गौरव : 57 • हास्य तरंग : 58
• बाल संस्कार डेस्क : 59 • संस्कार गीत व बाल कविता : 60 • समाचार : 61

प्रतियोगिताएं **:अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा :65 : वर्ग पहेली : 66**

प्रेरणा – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
ऐलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर–89895 05108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़–94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर–9826548159

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर–95425053111
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस–9575634441
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली–9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली–94128 89449
ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर–8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर–97938 21108
अभिनंदन सांधेलीय, पाटन–9425863244
डॉ. पंकज जैन, भोपाल–9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, साढूमल–9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर – 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर–9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ, इन्दौर (म.प्र.)

✲ आंतरिक सज्जा ✲
आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का
बाकी सदस्यता शुल्क
जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर सहयोग करें । बकाया राशि में त्रुटि हो तो सुधार हेतु हमें सूचित करें।

सदस्यता शुल्क
-आजीवन : **2100/-** (15 साल)
परम संरक्षक : **15000/-**

अपनेशहर के
- स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (संस्कार सागर)
  खाता क्र. 63000704338 (IFSC : SBIN0030463)
- भारतीय स्टेट बैंक (ब्र. जिनेश मलैया)
  खाता क्र. 30682289751 (IFSC : SBIN0011763)
- ओरिएन्टल बैंक ऑफ कामर्स
  खाता क्र.07882151004198(IFSC:ORBC0100788)
- आईडीबीआई बैंक (श्री दिगंबर जैन युवक संघ)
  खाता क्र. 155104000037022
- आईसीआईसीआय बैंक (श्री दिगम्बर जैन युवक संघ)
  खाता क्र. 004105013575 (IFSC : ICIC0000041)

में भी अपनेपूर्ण पतेसहित राशि जमा कर हमारे कार्यालय कोसूचित कर सकतेहैं।

कार्यालय
संस्कार सागर
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर –10
फोन नं. : 0731–2571851, 4003506
मो. : 89895-05108, 8717924109
website :www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

◆ लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
◆ संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
◆ कथा–साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होतेहैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
◆ पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

•श्री दिगम्बर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर–10 से प्रकाशित एवं मोदी प्रिंटर्स (76, बी–1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

पाती पाठकों की....

• सम्पादक महोदय, कश्मीर की एक पीढ़ी ने तो सिनेमाघर देखे तक नहीं है नब्बे के दशक में आतंकवाद की ऐसी आग फैली की कहीं सिनेमाघरों को जला दिया गया तो कहीं बन्दूक के डर से उनपे ताले लटक गये यह वहीं कश्मीर है कि जहाँ तीस वर्ष पहले कोई भी फिल्म की शूटिंग कश्मीर में हुए बिना अधूरी मानी जाती थी इसी कारण कश्मीर की जनता फिल्म जगत से अपनी निकटता महसूस करती थी यह आतंकवाद का नंगा नाच खुशियों को छीनकर दहशत का माहोल बना चुका है कश्मीर में अमन कब आयेगा यह तो कहना कठिन है किन्तु प्रधानमंत्री नरेन्द्रमोदी ने आतंकवाद को सफाया करने का अभियान चला रखा है यह एक आशा की किरण है।

सुगम जैन सांवरमति (गुजरात)

• सम्पादक महोदय, विगत दिनों बड़वानी के पास तलोन गांव में संतोष जाट का शव खेत के बीच में मिला संतोष के जेब से निकली हिसाब की डायरी में संतोष पिता गोपाल के बीच बीस हजार रूपये के लेन-देन का मामला तथ्य सामने आया पुलिस के सामने संतोष पिता भगवान ने अपने मित्र संतोष गोपाल की हत्या की। और शव को खेत में पटक दिया। मानवता की हद तब गुजरी जब मात्र बीस हजार की पीछे एक किसी इंसान की निर्मम हत्या कर दी गई हो। और वह मानवता के बीच दोस्ती को कलंकित करने के लिए एक बुरा उदाहरण बन गया हो आज कल दोस्ती के हाथ बढ़ाकर लेन-देन करने वाले नकली साहूकार कई मिल जाते हैं। इनसे सावधान रहने की आवश्यकता है। अन्यथा मानवता कलंकित होतीहै।

अंशुल पारासर (लटेरी)

• सम्पादक महोदय, अक्टूबर माह का संस्कार सागर पढ़ा इस अंक में आचार्य विद्यासागर जी महाराज के चिंतन में निमित्त अकिंचित्कर शीर्षक से लेख पढ़ा लेख की सरल सुबोध शैली ने मुझे सम्मोहित लिया था। निमित्त के बिना कार्य नहीं होता है परन्तु निमित्त कार्य का कर्त्ता नहीं होता है। इस सीधे सपाट नियम को स्वीकार करने के बाद कोई भी विवाद शेष नहीं रह जाता है प्रस्तुत लेख में अनेक ग्रंथों के संदर्भ और तर्क प्रस्तुत किये गये हैं।

निमित्त को अकिंचित्कार मानने से जहाँ लोक व्यवहार का लोप होता है वहीं जैन सिद्धांत में सांख्य मत का अकर्तावाद प्रवेश कर जाता है। अतः निमित्त अकिंचित्कर मानने से जैन सिद्धांत का अपलाप ही होता है।

श्रीमति अर्चना जैन सांवरमति (गुजरात)

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर के अक्टूबर अंक 234 में मेरी दृष्टि कहानी शूटिंग पर टिक गई कहानी बाल मनोविज्ञान की कसौटी अनूठी और खरी उतर रही है। जब भी बच्चों की इच्छा किसी भी कार्य करने की होती है। उसे यदि शक्ति के साथ रोका जाता है तो बच्चे चोरी छुपे अपनी इच्छा पूरी कर लेते है उन्हें फिर पकड़ने का डर सताने लगता है और फिर वे पलायन कर जाते हैं। उस पलायन के दरम्यान दुर्घटना घटित होने की सम्भावना होती है। कहानी की कथावस्तु क्रमबद्ध और सटीक है पात्रों का चरित्र चित्रण बहुत सजीव है। अतः बच्चों की भावनाओं को समझकर ही उनके साथ व्यवहार करना चाहिए।

अंशुल जैन (इन्दौर)

भक्ति तरंग
कर्म का परदा

हे जिन मेरी, ऐसी बुधि कीजै ॥ टेक ॥
रागद्वेष दावानलतें बचि, समतारसमें भीजै ॥1॥ हे जिन ॥
परको त्याग अपनपो निजमें, लाग न कबहूँ छीजै ॥2॥ जिन.॥
कर्म-कर्मफल माहि न राचै, ज्ञानसुधारस पीजै ॥ 3 ॥ जिन. ॥
मुझ कारज के तुम कान वर, अरज दौल की लीजे ॥4॥

हे जिनेन्द्र देव ! मेरी ऐसी बुद्धि हो जिसमें रागद्वेष रूपी अग्नि से बचकर समतारूपी रस में भीज जाऊँ।

स्व से परे जो पर है, अन्य है उसको छोड़कर में अपनी आत्मा में ही रमण करूँ और वह आदत लग मेरी कभी भी न छूटे मेरी ऐसी बुद्धि हो।

कर्म और उसके फल की ओर मेरी कभी रूचि न हो और में सदैव ज्ञानरूपी अमृत का पान करता रहूँ अर्थात् अपने ज्ञान स्वरूप में सदा लीन रहूँ, मेरी ऐसी बुद्धि हो।

निज रूप की, स्वरूप की पहचान के लिए मुझे सम्यकदर्शन सम्यकज्ञान व सम्यकचारित्र की प्राप्ति हो। इसके लिए आप ही श्रेष्ठ कारण हो, साधन हो अर्थात्, आपका गुण चिंतवन मुझें अपने गुणों की प्रतीति कराता रहें। दौलतराम कहते हैं कि यह ही उनकी विनती है, अरज है, उसे स्वीकार कीजिए।

संस्कार प्रवाह

समाज संगठन आज की जरूरत

वर्तमान जैन समाज की संगठन की स्थिति उदाहरण देने योग्य नहीं, पंथ-जाति क्षेत्र और श्रमण संघों के खेमो में बाँटता हुआ जैन समाज अपने वजूद को सुरक्षित करने में संर्घषरत है। जैन शरीर के मोह को छोड़कर साधना पथ का उपदेश देता है। लगभग 300 जातियाँ जैन धर्म का अनुकरण कर रही है। लेकिन बिडंबना यह है कि किसी भी संगठन को जैन धर्म अनुयाई 300 जातियों का व्यवस्थित ज्ञान नहीं है। तथा किसी भी संगठन में इस बात का उत्साह नहीं है कि वे इन जातियों की व्यवस्थित जानकारी जुटा सकें। वर्तमान कम्प्यूटर युग भी अपनी ऐसी छवी नहीं बनाना चाहता है। जो जैन धर्म मानने वाली साधर्मी जातियों का मसीहा बन जाए। मानवता विचार को सर्वोच्च मानने वाला एक न एक दिन सम्पूर्ण जातियों को एक छत के नीचे कर सकता है। काम कठिन भले ही परन्तु असम्भव नहीं है। बस जरूरत किसी जुनूनी इंसान की है।

जाति पंथ और क्षेत्र के आधार पर हम अपने साधर्मियों को तोड़ने का काम व खूबी कर रहे हैं। किन्तु साधर्मियों को जोड़ने का काम अभी तक कोई भी नहीं कर पाया है। किसी भी साधर्मियों को तोड़ना सरल है। किन्तु जोड़ना कठिन है। महापुरुष तो वो ही माना जाता है जो नफरत की कैंची को फेककर प्रेम के सुई धागे को लेकर घूमने लगता है। सचमुच में आज ऐसे कोई संत की जरूरत है जो जाती पंथ के मोह से ऊपर उठकर सबके भले की बात सोचे जितनी संख्या में धर्म के तीर्थ बन रहे है। क्या उसके एक अंश में भी समाज के साधर्मियों को जोड़ने का ईमानदारी से प्रयास हो रहा है ? इस सवाल का जबाब सकारात्मक नहीं फैलता है। नफरत फैलाने का काम मन्दिर और मूर्ति के नाम पर होता है। साधू समाज दूसरे के दोष देखने में अपनी बुद्धि तत्परता से चलाते है। किन्तु जैन धर्म की रक्षा के प्रश्न पर चिंतित तो सभी दिखते हैं। परन्तु किसी भी प्रयास की शुरुवात नहीं करते हैं।

किसी भी पंथ जाति का अस्तित्व मिटाया नहीं जा सकता है। किन्तु मतभेदों का समन्वय मिल बैठकर अवश्य हो सकता है।

संतरे की हर कली अपने आप में प्रथक प्रथक होती है। किन्तु संतरे का छिल्का ऐसा कार्य करता है कि वह सब कलियों को अपने में समेटे हुए रखता है। जाति पंथ के सम्मान को ज्यादा महत्व दिया जाता है। जब कि सच यह है कि महत्वपूर्ण जाति पंथ संघ नही होता है। किन्तु धर्म सर्वोपरि सम्मानीय होता है। क्योंकि धर्म का सम्बंध आचार विचार से होता है। जाति का सम्बंध शरीर से होता है। पंथ का सम्बंध अहंकार और स्वार्थ से होता है। जबकि धर्म सम्बंध अमूर्त अमरतत्व आत्मा से होता है। धर्म जीवन का अनुप्राण है। उसका सम्मान हर व्यक्ति को हर परिस्थिति का परिणाम माना जाता है। धर्म के आधार पर समाज रचना जब खड़ी हो जाती है। तो समाज संगठन साहसता का विषय बन जाता है।

राष्ट्रीय जैन संगठन अनेक हैं किन्तु वे मात्र अपने ही कुए में कसरत कर रहे हैं न तो वे सम्पूर्ण जैन जातियों से सम्पर्क कर पा रहे हैं और न ही वे समाज संगठन की दिशा में कोई भी रूची लेते हैं। घर बैठने से कभी-भी समाज संगठन मजबूत नहीं हुआ है।

समाज संगठन बनाने के लिए सतत् सम्पर्क और सप्ताह में एक दिन का एकत्री करण संगठन में जान फूक देता है। अतः जैन समाज का संगठन बनाने के लिए कटिबद्ध होने का समय आ चुका है। आग लगने के बाद कुआं खोदना कोई बुद्धिमानी का परिचय नहीं है। समस्या आने पर संगठन की बात करना अलग बात है। और समस्या आने के पूर्व संगठन बनाने की बात करना सदैव महत्वूपर्ण होती है। अतः देखना यह है कि वह कौन- सा शुभ अवसर होगा जब जैन समाज जाति पंथ संघ भेद क्षेत्र वाद से ऊपर उठकर सार्वजनिक स्थलों अपने संगठनों का परिचय देगी।

चातुर्मास में निगाह साधु चर्या पर

❊ डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन भारती (बुरहानपुर म.प्र.)❊

वर्तमान में भारतवर्ष के अनेक गांव, नगरों में चातुर्मास हेतु साधुजन-आचार्य, उपाध्याय, आर्यिका, ऐलक, क्षुल्लक, क्षुल्लिका विराजमान हैं । जिन गाँवों और नगरों में यह साधु विराजमान हैं वहाँ की समाज इसे अपना अहोभाग्य मान रही है । उसने लाखों-करोड़ों रूपये खर्च कर मंगल कलश स्थापना की बोलियां ली हैं । उसके मन में साधुओं के प्रति अगाध श्रद्धा है, उनके जैसा बनने का भाव भी है अतः वह साधुचर्या पर अपनी निगाह रखती है, कहीं पैनी तो कहीं सहज । साधुओं को भी इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि उसके पास दो आँखें हैं लेकिन उसे हजारों आँखें देख रही हैं । अतः कोई ऐसी चूक हो जाए जो आगम (शास्त्र), लोक, कानून तथा नैतिकता के विरूद्ध हो । आज जमाना भले ही पारदर्शिता का हो किन्तु साधु तो साधु-वेशधारी ही अच्छा लगता है। जनता उसे भगवान मानती है । भगवान का आशीर्वाद के लिए उठा हुआ हाथ उसे अच्छा लगता है किन्तु यदि उस हाथ में धन-पैसा, रसीद कट्टा, मोबाईल हो तो उसे बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता, भले ही साधु उसका उपयोग उसके हित के लिए कर रहा हो । मेरा साधु एवं श्रावक समाज से आग्रह है कि वह अपनी अपनी चर्या को देखें और चर्या पर निगाह रखे । अच्छी हो तो अनुकरण करें और शिथिल हो तो उसे सुधारने के लिए निवेदन करें। यदि निवेदन नहीं स्वीकार किया जाता है तो अखिल भारतीय संर्पूण समाज को अवगत करायें। कुछ सावधानियां यहाँ अपेक्षित हैं -

1. जिस स्थान पर साधु विराजमान हैं वहाँ नियमित रूप से वैतनिक या सेवाभावी धर्म के प्रति जागरूक व सतर्क जैन व्यक्ति को रखें ताकि वह इस बात पर निगाह रखे कि साधु की चर्या उसके विपरीत तो नहीं है।

2. साधु के आहार, प्रवास आदि की समुचित व्यवस्था करे । प्रदर्शन से बचे । साधु की महिमा बढ़ाने के लिए धार्मिक, वैचारिक एवं सांस्कृतिक आयोजनः जो दिन में साधु की उपस्थिति में हो सकें वह आयोजित करे।

3. किसी भी साधु के कहने पर, आदेश देने पर भी उन्हें मोबाइल न दे। यदि उनके पास पूर्व से मोबाइल है तो उसे समिति के पास जमा कर ले । यदि ऐसा करेंगे तो रीचार्ज के लिए प्रश्न ही नहीं उठेगा।

4. कुछ साधु ऐसा कहते है कि मुझे भक्तों से बात करनी है, धार्मिक अध्ययन करना है तो उनसे कहें कि मैं अपने मोबाइल पर स्पीकर ऑन करके बात करा देता हूँ। ऐसा मैं इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि आज के समय और प्रवृत्ति को देखते हुए यह कहना मुश्किल है कि साधु मोबाइल का किसी भी रूप में उपयोग नहीं करेंगे ?

5. साधु के निकट वैयावृत्ति आदि के लिए जाने वाले श्रावकों से निवेदन है कि वे साधु को व्हाट्सएप पर आये अनावश्यक, आत्मकल्याणी अधार्मिक या विवाद बढ़ाने वाले संदेशों को कदापि न बताएं। इससे बताने वाले को साधु चर्या में बाधा पहुँचाने का दोष लगेगा और साधु को विकथा में पड़ने का।

6. जो साधु वर्तमान में एकलविहारी होकर चातुर्मास कर रहे हैं उनसे निवदेन करें कि वे चातुर्मास के बाद सीधे अपने दीक्षा गुरु के पास जाएं । समाज के प्रबुद्धजन उन्हें विहार कराते हुए गुरू के निकट तक ले जाएं और

उनसे निवेदन करें कि वे या तो इन साधु को अपने पास रखें या किसी ज्येष्ठ साधु के पास भिजवाएं। जिनके गुरु नहीं हैं वे अन्य आचार्य की शरण में जायें। दो एकल बिहारी साधु भी मिलकर संघ बना सकते हैं।

7. वर्तमान चातुर्मास काल में किसी भी मुनि को किसी के भी कहने पर, आदेश पत्र पर आचार्य पद न दें। भले ही साधु कुपित हो। यह कितनी विडंबना है कि जिन अकेले साधु के लिए समाज ने आचार्य बना दिया उनके निधन (समाधि) होने पर उनका आचार्य पद किसी मुनि को दे दिया गया । यहाँ प्रश्न है कि दिवंगत आचार्य कौन सी शिष्य परम्परा (संघ) छोड़ गये थे जिसके लिए प्रायश्चित, अध्ययन या व्यवस्था हेतु आचार्य बनाने की आवश्यकता थी ? आजकल मुनि दीक्षा जैसी आचार्य बनाने की भी होड़ चल रही है । आर्यिकाएं तक आचार्य पद बँटवा रही हैं । इसके बदले में वे नवनियुक्त आचार्य उचित अनुचित का विवेक भूलकर शाब्दिक अभिवादन की मर्यादा तक भूल रहे हैं। एक पत्र के द्वारा आचार्य बनाए गये साधु की संदेहास्पद मृत्यु का प्रकरण लोग भूले नहीं है । मेरा तो एकल विहारी आचार्यों से भी निवेदन है कि वे अपने आचार्य पद का स्वेच्छा से त्याग करें यदि उनके गुरू हों तो उन्हें समर्पित कर साधु संघ में रहकर साधु जीवन का लाभ लें।

8. जिन साधु संघो के संचालक अजैन व्यक्ति हैं , रात्रि में भोजन करने वाले हैं, उन्हें न तो वेतन दें और न साधु के साथ रहने दें।

9. यदि किसी साधु संघ में गाड़ी है तो उसे चार माह तक अपने नगर में न चलने दें। उसमें ईधन न भरवायें।

10. आमंत्रण पत्र-पत्रिका में साधु के साथ अनेकानेक उपाधियां न लगायें। एक-दो उपाधियां जिनसे उन साधु की पहचान सिद्ध होती हो। उन्हीं का उपयोग करें। देखने में आ रहा है कि संत शिरोमणि अनेक हो रहे हैं जो न शाब्दिक दृष्टि से सहीं है और न व्यावहारिक दृष्टि से क्योंकि शिरोमणि एक ही होता है, अनेक नहीं । वर्तमान में जितने साधु हैं वे भारतगौरव तो हैं ही, विश्व गौरव भी है, फिर कोई भारतगौरव क्यों ? आर्यिका शिरोमणि, गणिनी शिरोमणि, साधु शिरोमणि, क्षुल्लक शिरोमणि, योगगुरु, गुरुमाँ, धर्मयोगी, भावलिंगी, अध्यात्मशिरोमणि, आचार्य सम्राट, युवाहृदय सम्राट आदि उपाधियों का क्या औचित्य है ? मूलाचार भगवती आराधना, अनगारधर्मामृत, तत्वार्थसूत्र, समयसार, अष्टपाहुड़, नियमसार, प्रवचनसार आदि ग्रंथों में यह उपाधियाँ कहाँ हैं ?

11. साधु संघों में लड़कियों, महिलाओं को अकेले ना जाने दें। दर्शन करते समय एक निश्चित दूरी से दर्शन करने के लिए कहें। साधुओं के चरणों का स्पर्श करने के लिए स्पष्ट मना करें। अध्ययन के लिए भी अकेले न भेजें अपितु समूह में अध्ययन की व्यवस्था करें।

12. जिन साधुओं का आचरण किसी भी दृष्टि से संदेहास्पद हो, अयोग्य हो वहाँ विशेष निगरानी रखें ताकि समाज अप्रिय स्थिति से बच सकें।

13. हमारे धर्म की पहचान हमारे गुरु हैं यदि वे ही अनाचार में लिप्त होंगे तो धर्म कैसे चलेगा ? आज का कानून और कानून के रखवाले वैसे भी हमारे साधुओं की चर्या के पक्ष में तभी तक हैं जब तक वे निर्दोष हैं। अतः हमारी विशेष जिम्मेदारी बन जाती है कि हम किसी को हस्तक्षेप करने का अवसर न दें।

14. साधुओं से स्पष्ट निवेदन करें कि वे किसी भी जाति या धर्म के विरूद्ध न बोलें । किसी भी राजनैतिक दल विशेष या नेता

विशेष का प्रचार न करें। आरक्षण के विपक्ष में विचार न रखें। बूचड़खाने बंद करवाने, गौ हत्या रूकवाने, मांस निर्यात बंद करने आदि आंदोलन को सीमित दायरे में ही चलायें। ऐसी कोई प्रतिज्ञा न करें कि जो न तो सरकार पूरी कर सके और न ही समाज पूरी करवा सके। साधु को स्वयं के तप के अलावा, उपसर्ग के अलावा अन्य किसी भी स्थिति में अनशन करने या अनशन की धमकी देने से रोकें।

15. जिस स्थान पर चातुर्मास हो रहा है, वहाँ जरूरत होने पर ही दान आदि एकत्रित करें। यदि अन्य स्थानों के लिए साधु दान की प्रेरणा देते हैं तो प्राप्त राशि को स्वयं तीर्थ क्षेत्रों, शैक्षणिक या परोपकारी संस्थाओं में सीधे जमा करवायें। साधु के हाथ में या संघ संचालन-संचालिका के हाथ में न दें।

16. प्रातः सायं भ्रमण एवं आहारचर्या में साधु के साथ श्रावकजन अवश्य जाएं।

17. चातुर्मास के प्रथम पक्ष में ही विभिन्न जैनेतर समाजों के प्रमुखों, प्रबुद्धजनों को आमंत्रित कर साधु का परिचय दें, साधुचर्या का परिचय दें, उनकी अहिंसक वृत्ति का परिचय दें और सहयोग की अपील करें। ऐसा करने पर सभी समाजें उनका सम्मान करेंगी और कहीं-कहीं नग्न विचरण को लेकर या खुले में शौच आदि को लेकर जो भ्रांति या अप्रिय स्थिति बनती है वह नहीं बनेगी।

18. स्थानीय प्रशासन, पुलिस आदि को साधु के प्रवास एवं समस्त कार्यक्रमों, चर्या आदि की जानकारी दें तथा समुचित व्यवस्था की मांग करें।

19. साधु संघों एवं आर्यिका संघों के रूकने की अलग-अलग भवनों में व्यवस्था करें। ब्रह्मचारी भाईयों एवं बहिनों की भी अलग-अलग भवनों में ठहरने की व्यवस्था करें।

20. साधु को उतने ही उपकरण दें जितनी की आवश्यकता है। आजकल जूट के भरे चटाई के गद्दों और तकियों का जो चलन प्रारंभ हुआ है उस पर विराम लगाएं। साधुओं को वाहन में न चलने दें, उनके वाहन न खीचें।

21. जिस स्थान पर साधु संघ ठहरा हो वहाँ पर किसी भी स्थिति में कूलर या ए.सी. नहीं चलने दें। यदि पहले से कक्ष में ए.सी लगा हो तो उसे भी कपड़े से पैक कर दें। हो सकता है स्थान विशेष गर्म हो तो कक्ष के किसी एक कोने का जिसके नीचे साधु नहीं बैठे हों वहाँ पंखा चला सकते हैं।

22. प्रायः देखने में यह आता है कि संघ संचालिकाएं या संघस्थ बहिनें आहार चर्या में बहुत हस्तक्षेप करती हैं उन्हें सम्मानित तरीके से ऐसा करने से रोकें।

23. साधुओं के रोग आदि के शमन हेतु आयुर्वेदिक चिकित्सक से परामर्श लें और तदनुसार दवा दें।

24. यदि साधु कुछ ग्रंथ लेखन आदि करते हैं तो योग्य विद्वान् से सम्पादन के लिए कहें। योग्य विद्वान से सम्पादित होने पर ही उक्त ग्रंथ को प्रकाशित करवायें।

25. जो साधु जिस गुरु का नाम अपने गुरु के रूप में बताते हों उनसे जाकर एक बार अवश्य मिलें और यह सुनिश्चित करें कि वह उनके ही शिष्य हैं।

26. जिन साधुओं पर दोषारोपण हुए हैं या पूर्व में जिनके आचरण संदेहास्पद प्रतीत हुए हैं और वे वर्तमान में आपके नगर में है तो दो-चार प्रबुद्धजन मिलकर उन्हें समझाएं कि वे इन चार माह में अपनी चर्या में इस प्रकार सुधार करें कि पूर्व जैसी स्थिति न बने। आप साधु हैं आपका आचरण भी साधु होना चाहिए।

27. वृद्ध साधुओं का विशेष ध्यान रखें। उनके रोग आदि होने पर स्वयं सेवा करें। ऐसा

बिल्कुल भी न करें कि उनके पूर्व गृहस्थावस्था के परिवारीजनों को बुलवाकर यह न कहें कि आप ही इन्हें सँभालें।

28. साधु के संभावित शिथिलाचार को श्रावक ही रोक सकते हैं। उन्हें दीक्षा के समय की तरह अपरिग्रही रख सकते हैं। आज यदि ऐसा कहें कि हम आपके गुरु से शिकायत करते हैं तो हो सकता है कि वह गुरु की आज्ञा में ही न हो। अतः आगम को गुरु मानकर और उसका पालनकर्ता या पालन करवाने वाला स्वयं को मानकर साधु की चर्या को आगम सम्मत बनाने में सहयोग करें।

यदि आप ऐसा करेंगे तो साधु रूपी भगवान के आप सच्चे भक्त कहलाएंगे। मेरे यह विचार किसी साधु विशेष के विरोध के लिए नहीं है। हम तो यह चाहते हैं कि हमें किसी का विरोध साधु शिथिलाचार के कारण न सहना पड़े। थोड़ी लिखी, अधिक समझना।

कविता

मसान में घर के

✻ इन्द्रकुमार बाकल (इन्दौर) ✻

कड़ी कड़ी जोड़कर,
बिटा बनाया है इस
दुनियाँ में रहने के लिये,
और कुछ बचा कहने के लिए ?

समुद्रों-सा पानी पी गए,
पर्वतों-सा अन्न खाकर
फिर भी कुछ न कर सके,
ये मनुष्य योनि पाकर ?

तू किस लिए आया था,
शांति से तूने कभी सोचा ?
आज ये किया कल वो कर लूँ,
जिंदगी भर खाता रहेगा गोचा।

तन मन धन आज तूने,
सब कुछ तो पाया है,
पूर्व जन्मान्तरों की समझ,
ये तेरी सारी माया है।

धन, बल, विद्या बुद्धिसागर,
सब तेरे पास हे डुबकी लगा ले,
एक न एक दिन तर जाएगा,
अन्यथा जीते जी मर जाएगा।

आज तू कितना कुछ भी करले,
कैसे भी कितना मन भर ले
एक न एक दिन ये तेरे ही घर के
भाग आऐंगे तुझे मसान में धर के।

जैन तीर्थ नैनागिरि में संस्थापित संयम कीर्ति स्तंभ

❊ सुरेश जैन (आई.ए.एस)भोपाल ❊

श्री मन्नाकनरेन्द्र वन्दित पदः श्री पार्श्वनाथः प्रभु,
र्यत्रागत्य शशास भव्यनिकरं सद्धर्मतत्वं चिरम् ।
तप्तवा यत्र तपः प्रतिग्ममचिरं याताः शिवं शाश्वतं,
वरदत्तादि मुनीश्वरा गुणधारा ध्वस्ताष्टकर्मव्रजाः ।।
नमामो रेशन्दी गिरि मघविघाताय खलु तम् ।।

-नैनागिरि स्तुति

लक्ष्मी से युक्त इन्द्रों तथा चक्रवर्तियों से जिनके चरण वन्दित थे ऐसे पार्श्वनाथ भगवान ने जहाँ आकर बहुत समय तक भव्य जीवों के समूह को समीचीन धर्म की देशना दी और जहाँ कठिन तप तपकर गुणों के धारक इन्द्रदत्त, गुणदत्त, वरदत्त, सायरदत्त और मुनीन्द्रदत्त मुनिराज अष्टकर्मों के समूह को नष्ट कर शीघ्र ही अविनाशी मोक्ष को प्राप्त हुये थे। निश्चय से पाप नष्ट करनें के लिए उस नैनागिरि (रेशन्दीगिरि) जैन तीर्थ को हम प्रणाम करते हैं।

दीक्षा सुशिक्षाप्रमुखैः प्रयत्नैः, संपोषितानां सुतनिर्विशेषं ।
निर्ग्रंथ प्रियशिष्यकल्याणभूमिः, नैनागिरिं तं तीर्थं नमामि ।।

- नैनागिरि वंदना

दीक्षा श्रेष्ठ कल्याणकारी शिक्षा आदि प्रयाासों द्वारा निर्ग्रंथ आचार्यों ने जिन प्रियशिष्यों का पुत्रवत् संपोषण किया है, उनकी कल्याणकारी भूमि श्री नैनागिरि तीर्थ की मैं वन्दना करता हूँ।

2. गत शताब्दि में आध्यात्मिक क्रांति के जनक आचार्य विद्यासागर जी के बुन्देलखण्ड के हृदय स्थल में नैनागिरि (रेशंदीगिरि) तीर्थ पर तीन चातुर्मास तथा चार शीतकालीन प्रवास हुये है। उन्होंने नैनागिरि में 25 से अधिक मुनि, आर्यिका, क्षुल्लक एवं क्षुल्लिकाओं को दीक्षा प्रदान की है और शताधिक युवक/ युवतियों को आजीवन ब्रम्हचर्य व्रत दिए है। विद्यासागर जी के संयम स्वर्ण दीक्षा वर्ष में विशाल संयम कीर्ति स्तंभ स्थापित किया गया है।

3. आचार्य श्री के शिष्य वरिष्ठ मुनिवर प्रमाणसागर जी के गत दशाब्दि के अस्सी के दशक में ब्रह्मचारी के रूप में नैनागिरि में रहकर असाधारण साधना की हैं। उनके दार्शनिक चिंतन का सूत्रपात नैनागिरि की वरदत्त गुफा में और समीपस्थ सिद्ध शिला पर बैठकर हुआ है। उन्होंने पूरे देश में शताधिक कीर्ति स्तंभों की स्थापना के माध्यम से जैन संस्कृति को चिरस्थायी स्वरूप प्रदान किया है। और अपने गुरु की कीर्ति में शताधिक गुनी वृद्धि की है। हमने और हमारे साथी, नैनागिरि तीर्थ के न्यासी तथा सुप्रसिद्ध पर्यावरण विशेषज्ञ डॉ. एस के जैन ने प्रमाणसागर जी से नैनागिरी में संयम कीर्ति स्तंभ स्थापित करने के लिए निवेदन किया और उन्होंने तुरंत ही सहर्ष अपनी स्वीकृति प्रदान की। उनकी प्रेरणा तथा हमारे आग्रस से हमारे अभिन्न मित्र और देश के सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री पन्नालाल जी बैनाड़ा, आगरा द्वारा इस समुन्नत संयम कीर्ति स्तंभ की स्थापना की गई हैं। निश्चित ही यह स्तंभ गुरुदेव विद्यासागर जी की मुक्त हँसी, खुशी और यादों की खुशबू पेरे देश में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में सहस्त्रों वर्षों तक फैलाता रहेगा।

4. यह उल्लेखनीय है कि संयम कीर्ति स्तंभ का भूमि पूजन 7 मई, 2017 को आर्यिका तपोमूर्ति जी के सान्निध्य में श्री अशोक कुमार जी जैन, ठेकेदार बण्डा और उनके साथियों द्वारा किया गया हैं। उन्होंने तथा बण्डा की पूरी जैन समाज ने कीर्ति स्तंभ के स्थल को विकसित करने के लिए और संबधित कार्य संपन्न कराने हेतु पूर्ण सहयोग देने का आवश्वासन दिया है। अतः उन सबको हार्दिक साधुवाद।

5. भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के अध्यक्ष तथा बैनाड़ा जी के समधी माननीय श्री निर्मल जी सेठी ने नौका में बैठकर महावीर सरोवर के दक्षिण तट पर 1 नवम्बर 1981 को नैनागिरि में आचार्य श्री की प्रेरणा से समवसरण मंदिर का शिलान्यास किया था। शिलान्यास के कुछ समय बाद अस्सी के दशक में ही समवसरण मंदिर के निर्माण के लिए श्री निरंजनलाल एवं श्री रतनलाल बैनाड़ा ने बड़ी राशि प्रदान की थी। आपके द्वारा श्री सिंघई सतीशचन्द्र केशरदेवी जैन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, नैनागिरि को भी सहयोग प्रदान किया गया था।

6. भूतल पर स्थित इस कीर्ति स्तंभ से जैन संस्कृति की कीर्ति थल के साथ-साथ जल और नभ में भी फैलेगी। हमारे मुनिवरों , प्रतिष्ठाचार्यों और विद्वानों की राय के अनुसार पूरे देश में निर्मित कीर्ति स्तंभों में भगवान पार्श्वनाथ के समवसरण क्षेत्र के केन्द्र बिन्दु पर स्थापित इस कीर्ति स्तंभ की लोकेशन सर्वोत्तम है । विशाल चौबीसी मंदिर में भगवान पार्श्वनाथ की विशाल खड्गासन मूर्ति के बाई और स्थापित यह स्तंभ वरदत्त वन के उत्तरी प्रवेश तथा महावीर सरोवर के दक्षिणी तट की पहाड़ी पर स्थित है। हमारे खगोल वैज्ञानिकों और ज्योतिर्विदों ने बताया है कि जब सूर्य दक्षिणायन होगा तक पूरा कीर्ति स्तंभ महावीर सरोवर में प्रतिबिंबित होगा। सूर्य के उत्तरायण होते ही सूर्य की पूरी किरणों से कीर्ति स्तंभ आलोकित हो उठेगा। गत शताब्दि के सत्तर और अस्सी के दशक में नैनागिरि में चलते-फिरते विद्यासागर जी की स्मृति को जीवंत करेगा। इस परिसर के सौन्दर्यीकरण के सभी कार्य शीघ्र ही पूर्ण किए जावेंगे।

7. यह संयम कीर्ति स्तंभ अक्षांश 24 डिग्री 18 मिनिट 22 सेकेण्ड एवं देशांश 79 डिग्री 7 मिनिट 7 सेकेण्ड के बीचोबीच समुद्र की सतह से 470 मीटर (1542 फीट) ऊँचाई पर स्थित है। विन्ध्याचल की प्रचीनतम पर्वत श्रेणियों में सेमरा पठार नदी के उत्तरी तट पर स्थित नैनागिरि पर्वत पर मकराना मार्बल से बना श्वेत रंग का यह स्तंभ 31 फीट ऊँचा है। इस विशाल स्तंभ में आचार्य श्री की दीक्षा से लेकर अब तक की साधना यात्रा को आकर्षण चित्रों और संस्कृत तथा हिन्दी भाषा के और चुने हुए सुन्दर शब्दों के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है। इस कीर्ति स्तंभ में आचार्य श्री के आध्यात्मिक जीवन की पूरी झलक दिखाई देती है।

8. नैनागिरि असीम प्राकृतिक ऊर्जा का केन्द्र है। यहाँ विद्यमान शक्ति संपन्न ऊर्जा के कण हमारी कष्टदायक और नकरात्मक तरंगो को नष्ट कर देते हैं। अतः इस आलेख के पाठको से विनम्र आग्रह है कि वे नैनागिरि पधारें। भगवान पार्श्वनाथ के दर्शन कर आत्मिक शांति तथा आनन्द प्राप्त करें और अपने जीवन का चतुर्मुखी विकास करें।

मिट्टी के दीपक में समाया है मनुष्य की जिंदगी का बुनियादी सच

❊ डॉ. सुनील जैन संचय (ललितपुर) ❊

दीपक की भांति मनुष्य की देह भी मिट्टी ही है, किन्तु उसकी आत्मा मिट्टी की नहीं है। वह तो इस मिट्टी के दीपक में जलने वाली अमृत ज्योति है। हालांकि मनुष्य लोभ, मोह, मद, अहंकार की मोटी परतों से दबा-ढका अपने स्वरूप को भूला बैठा है, वह स्वयं को मात्र मिट्टी की देह समझ बैठा है और मिट्टी की इस देह का श्रृंगार करने में इतना अलमस्त हो गया हैं कि आत्म ज्योति का चिरंतन सच अंधकार में कहीं खो गया है। दीपक की मिट्टी में ज्योति जब तक न उतरे वह अपनी सचाई से वाकिफ नहीं हो सकता। जैसे कि हम अपने वास्तविक स्वरूप से दूर-दूर तक रहने के कारण इंन्द्रियों से विनिर्मित देह में विचरण करने लगते हैं और इस भ्रम को सच मान लेते हैं। भ्रम का यह आवरण हमें सघन अंधकार में जीने को विवश करता है। इससे जिंदगी की घुटन और छटपटाहट फिर से तीव्र और घनी हो जाती है।

आज चारों ओर का वातावरण भयावह है और हरेक व्यक्ति आगे बढ़ने की होड में अपनों को ही पछाडना चाहता है। आज महाभ्रष्टाचारी, रिश्वतखोरी, आतंकवादी क्रियाशील हैं। इनकी करतूत और कारनामों से अतीत के सारे आतंक कमतर नजर आते हैं। क्या हमने कभी अपने उन भाईयों की ओर तनिक भी ध्यान देने का प्रयास किया है जिनको दो वक्त की रोटी भी सकून से नहीं मिल पा रही है, परिवार आर्थिक तंगी का शिकार है। हम लाखों करोड़ो रूपयों को पटाखों के चलाने में व्यर्थ ही खो देते हैं, जिससे हमारा पर्यावरण भी प्रदूषित तो होता ही है साथ ही अनेक घटनाएं जान-माल की हानि की भी देखी जाती हैं। क्या हमने कभी दीपावली पर यह संकल्प लेने का मन बनाया है कि अंधकार में जीने वाले उन लोगों के प्रति सहयोग करने की भावना भायी है। क्या जो हम पटाखों में लाखों रूपये व्यर्थ वर्बाद करते हैं वह धन अपने बेसहारा असहाय और गरीब भाईयों की जिंदगी में नया सेवरा भरने में नही लगा सकते ?

जीवन एवं समाज के इस अवसाद और अंधेरे को सदा-सर्वदा के लिए दूर करने के लिए दीपक के सच की अनुभूति का गहरा अनुभव आवश्यक है।

दीपावली पर दीपक जलाते समय दीपक के सच को समझना आवश्यक है। अन्यथा दीपावली की प्रकाशपूर्ण रात्रि के पश्चात् केवल वुझे हुए मिट्टी दीपक हाथों में रह जाएंगे, आकाशीय अमृत-आलोक खो जाएगा। दीपक का सच उसके स्वरूप में है। दीपक मरणशील मिट्टी का होकर भी इस ज्योति का अवतरण कर धारण करने का सबल माध्यम है। दीपक जलता है, आलोक बिखरेता है और तत्पश्चात् अपनी मरणशील मिट्टी में समा जाता है। मोल है जलते हुए प्रदीप्त दीपक का, मोल बुझे दीपकों का नहीं होता। दीपक का तात्पर्य है- अपनी वर्तिका में अग्नि को धारण कर प्रकाश बिखेरना। यह घटना आसाधारण है और साधारण है। तिल-तिल जलने-गलने का वह संकल्प, जो उसकी मरणशीलता में अमृत घोलता है। इस मिट्टी की ज्योति

तो अमृतमय आकाश की है। जो धरती का है, वह धरती पर ठहरा है, लेकिन ऊर्ध्वगामी ज्योति तो निरंतर आकाश की ओर भागी जा रही है।

जब तक अंतर गमन में दीपक का प्रेम, करूणा, दया, सेवा सहयोग एवं परोपकारिता वाला प्रकाश जगमगाएगा नहीं, मानवता के इस अंध एवं काले तमस् को दूर नहीं किया जा सकता है। जब तक मन नरभ्र गगन में स्वच्छ विचारों की रोशनी नहीं उठेगी, हृदय के धवल आकाश में भावनाओं का निर्मल प्रकाश नहीं फूटेगा, वैमनस्यता, अमानवीयता जैसी अहंकारी प्रक्रिया थमेगी नहीं। जिस दिन मानव के अंतर को दीपोत्सव पर्व की एक कोमल, जगमगाती रोशनी छू लेगी, उसी दिन से जीवन की कुहासा-निराशा छूटने लगेगी और जीवन आलोक का नया प्रतीक, पर्याय बन जाएगा। इस आलोक में ही जीवन का लक्ष्य दृष्टिगोचन हो सकता है और इस लक्षित लक्ष्य का सघन मर्म समझ में आ सकता है।

मिट्टी के दीपक में मनुष्य की जिंदगी का बुनियादी सच समाया है। ऐसा सच जो हमारा अपना है। ऐसा सच जिसमें हमारा अनुभव पल-पल धड़कता है। यह सच ही हमारी धरोहर एवं थाती है, जो कहता है कि तुम स्वयं ज्योति स्वरूप हो, आत्मस्वरूप हो। अपने अंदर की ओर झांको ! अंतर्यात्रा करो !! अंदर में ही सब कुछ समाया हुआ है दीपावली की अनेक पौराणिक कथाएं हैं। इस दिन भगवान राम आतंक के महापर्याय रावण का वध करके जब अयोध्या नगरी लौटे तो उनका स्वागत प्रकाश महोत्सव के रूप में हुआ। उस दिन हर आंगन में दीपों की कतार लगाई गई। जैनधर्म के अनुसार इस दिन तीर्थंकर महावीर स्वामी को निर्वाण की प्राप्ति हुई थी और गौतम गणधर को केवलज्ञान की उपलब्धि प्राप्त हुयी थी। इस अवसर पर जैन समुदाय निर्वाण लाडू चढ़ाकर और दीपक प्रज्जवलित कर अपनी खुशी का इजहार करता है। ऐसी अनेक और भी पौराणिक कथाएं है। इन कथाओं से हम सभी सुपरिचित हैं, परंतु परिचय की इस लंबी प्रक्रिया में हम यदि किसी चीज से अपरिचित रह जाते हैं तो इस महापर्व के गहरे मर्म से। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी दीपावली धूमधाम से मनाई जाएगा। श्रृंगार अपनी चरम सीमा को स्पर्श करेगा। उमंग एवं प्रकाश से मिश्रित इस महोत्सव में ऐसा होना तो समृद्धि का प्रतीक है।

दीपावली का मूल मर्म है कि दीपक का प्रकाश हमारे अंदर भी प्रकाशित हो और बाहर भी आलोकित हो। ज्योतिर्मय पर्व दीपावली ज्ञान का स्वागत तथा प्रज्ञा को आत्मसात करने का पर्व है। दीपक की तरह स्वयं जलकर अर्थात् संघर्ष कर आत्मा की शक्ति को पहचाना जा सकता है। आओ इस दीपावली हम एक ऐसा दीपक जलायें जो हमारे बुनियादी सच से हमें रूबरू करा सके।

है अगर विश्वास तो, मंजिल मिलेगी यकीनन।
भार्त यह है कि, बिन रूके चलना पड़ेगा।।
जिस तरह भी हो, अंधेरे की हुकूमत, उस जगह पर
दीप-सा जलना पड़ेगा।।

धनिया के आयुर्वेदिक गुण

संयम स्वास्थ्य योग

धनियाँ Coriandrum Sativum

पर्याय नाम- हिन्दी- धनियाँ, कोथमीर
संस्कृत- धान्यक, धानक, कुस्तुम्बुरी, कुस्तुम्बस
मराठी- धने, कोथमीर
गुजराती- घणा, कोथमीर
अंग्रेजी- कोरिअन्डर, Coriander
लेटिन- कोरिएण्ड्रम सेटिवम Coriandrum Sativum, किरिएण्ड्री फ्रूक्टस, Coriandri Fructus

उत्पत्ति स्थानः सम्पूर्ण भारत, यह बारहमासी पौधा है। ग्रीष्मऋतु में उपयोगी

उपयोगी अंग : पत्तीफल एवं बीज, पंचाङ्ग

गुण धर्म- ताजी हरी धनिया पत्ती भोजन को सुस्वाद एवं सुगंधित बनाती है। यह मधुर रस युक्त एवं शीतवीर्य होने से पित्तशामक एवं दाह प्रशमक है। पित्तज रोगों में धनिया पत्ती एवं पुदीना पत्ती को पीसकर शर्बत बनाकर मिश्री मिलाकर पीना लाभप्रद है। यह ग्रीष्मऋतु का उत्तम पेय है। इसके पत्र, फल एवं पंचाङ्ग औषधि कार्य में आते हैं। यह शीतल मधुर, तथा तृषा नाशाक हैं। धूप से व्याकुल एवं तृषित व्यक्ति इसकी चार पांच पत्तियाँ मुख में रखकर चूस ले तो तुरन्त आराम मिलता है। साथ ही कफ प्रकोप नहीं होता है। हरी धनियाँ पत्ती भोजन एवं सलाद को सजाने संवारने के साथ ही स्वाद एवं सुगंध को भी बढ़ाती हैं। मधुरस एवं शीतवीर्य होने से पित्तशामक एवं दाह (जलन) दूर करती है। शिरथूल, शोथ, विसर्प, कंठमाला, मिलाने के उपयोग से उत्पन्न शोथ पर (सूजन पर) हरी धनियाँ पत्ती को पीसकर लेप करते हैं। मुख पाक तथा गले के रोगों में धनिया के रस से कुल्ला करने में लाभप्रद है। उर्ध्वाङ्ग रक्तपित्त (नकसीर) में धनियाँ पत्ती पीस कर मस्तिष्क पर लेप करते हैं।

रासायनिक संगठन :- हरी धनियाँ के पत्तों में 85% पानी 6.5% कार्वोहाइड्रेट 0.14% कैलशियम 0.06 फासफोरस लोह तत्व विटामिन ए.बी.सी. पाये जाते हैं। फलों में उड़नशील तैल 1% स्थिर तेल 13% टेनिन मेलिन एसिड तथा क्षार पाए जाते हैं।

शुष्क धनियाँ प्रयोग- 1. अमाशय में पित्त की अम्लता को कम करती है। धनियाँ चूर्ण घी मिश्री के साथ सेवन करें या रात्रि में धनियाँ चूर्ण 10 ग्राम पानी में भिगोकर सुबह मसलकर छानकर मिश्री मिलाकर सेवन करें। प्रयोग करीब 1 माह नित्य करना चाहिये। ज्वर ठीक होने के बाद बढ़ी हुई व्यास एवं शांति के लिए यह प्रयोग लाभप्रद हैं । यह बच्चों एवं प्रसूता स्त्रियों एवं वृद्धों के लिए भी लाभ्रपद है।

2.छोटे बच्चों को खांसी, अजीर्ण, बदहज्मी या कब्ज हो जाये तो धनिया बीज चूर्ण या काढ़ा बनाकर घी शक्कर मिलाकर मिलायें।

3. प्रसूता स्त्री के पेट (पेट के निचले भाग) के दर्द को ठीक करने के लिए 1 से 2 चम्मच धनियाँ चूर्ण गुड़ मिलाकर खिलायें।

4. पेशाब करने में दर्द या जलन होने पर धनियाँ चूर्ण नारियल पानी से दें। सभी प्रकार के

मूत्ररोगों में लाभप्रद है।

5. गर्भवती स्त्री की उल्टियों पर धनियाँ का चूर्ण या काढ़ा बनाकर घी मिश्री मिलाकर खिलाने से लाभ होगा।

6. चेचक (मसूरिका) की अवस्था में धनियाँ का काढ़ा मिश्री मिलाकर पिलाने से या ताजे धनियाँ पत्ती का शर्बत बनाकर पिलाने से लाभ होता है। चेचक निकल जाने के बाद शारीरिक उष्णता की शांति के लिए रात्रि के समय धनियाँ जीरे एवं सौफ तीनों मिश्रण 20 ग्राम 1 गिलास जल में भिगों दें। सुबह मसलकर छानकर मिश्री मिलाकर मरीज को दें इससे शरीर की उष्णता दूर होती है। प्रयोग 1 सप्ताह तक लगातार करें।

7. नेत्रों में जलन या वेदना होने पर धनियाँ स्वरस में कपड़ा या रूई गीला का आंखों पर पट्टियों रखें एवं उक्त शर्बत पीने को दें इससे नेत्रामिष्पद दूर होता है। नेत्र ज्योति सबल होती है। स्वस्थ व्यक्ति भी हफ्ते में एक दो बार यह प्रयोग कर सकते हैं। गर्मी एवं मस्तिष्क की दुर्बलता के कारणों से नेत्रों के आगे अंधेरा सा छा जाता है या जाला आ जाता है ऐसी अवस्था में भी उक्त प्रयोग लाभप्रद है। इससे चक्कर आना एवं पर्याप्त नींद नहीं आना में भी लाभ होता है।

8. धनियाँ चूर्ण एवं मिश्री प्रातः सांय ताजे जल से एक ग्रास नित्य लेने से हृदय रोग में भी आराम मिलता है। या धनिया एवं सौफ दूध में उबालकर प्रति लेने से हृदय की वेचैनी आदि दूर होती है। क्लोरोस्टाल नियंत्रित रहता है। मन शांत रहता है। घबडाहट, पसीना, वैचेनी, दाह आदि में एवं मोनोपास के समय भी धनियाँ, सौंफ एवं जीरा समभाग लेकर चूर्ण कर मिश्री मिलाकर सादे पानी या चांवल के पानी से लेने से लाभ होता है। जिन स्त्रियों का गर्भाशय निर्बल होता है एवं गर्भपात की सम्भावना बनी रहती है उनके लिए भी यह शर्बत लाभप्रद है।

9. अरूचि होने पर धनियाँ, जीरा, सौंफ कालीमिर्च, पुदीना, सेंधा नमक, किसमिस या मुनक्का पीसकर नींबू का रस मिलाकर चटनी बनाकर भोजन के साथ सेवन करें।

10. धनियाँ में वात पित्त कफ तीनों दोषों की विकृति नाशक गुण होने से यह दूषित आहार विहार या अपथ्य के कारण रसोत्पत्ति के समय वात जन्य आदि को नष्ट करता है। पित्तवर्धक आहार से पित्तज विकृति जैसे जी मचलाना, वमन आदि हों तो अपने मधुर एवं शीतु ण से उन्हें शांत कर देता है। स्वक औषधियों के साथ देने से ऐठन थूल आदि उपद्रवों को कम करती है।

11. सभी प्रकार के ज्वरों (फेवर) पर धनियाँ, सौंफ एवं गिलोय का काढ़ा बनाकर रोगी को पिलाना चाहिए। इससे आम का पाचन होकर दाह, तृषा, मूत्र जलन एवं बैचेनी दूर होती है। एवं पसीना आकर ज्वर उतर जाता है। यदि ज्वर कम न हो रहा हो तो सिर्फ धनियाँ चूर्ण जल में भिगोकर 3 घंटे रखे फिर मसलकर छानकर मिश्री मिलाकर रोगी को पिलायें यह बालक वृद्ध प्रसूता, गर्भणी सभी के लिए उपयोगी है।

12. वात कफज ज्वर (इन्फ्यूऐन्जा) में धनियाँ, सोंठ, कालीमिर्च एवं चिरायता का क्वाथ कर मिश्री मिलाकर पिलायें।

13. धनियाँ सोंठ विल्वफल की मज्जा (वेलगिरी) नागर मोंथा एवं नेत्र वाला समभाग लेकर क्वाथ करें। यह क्वाथ दीपन पाचन ग्राही एवं आमशूल नाशक है। ज्वर अतिसार में लाभप्रद है एवं अतिसार, ग्रहणी और संग्रहणी में भी लाभप्रद है।

14. जमालघोटा एवं मिलावे के विष पर धनियाँ का हिम या शर्बत पिलाने से लाभ होता है। ताजे धनियाँ का स्वरस लगाने से और पिलाने से लाभ होता है।

समाज के प्रति विद्वानों का दायित्व

❊ डॉ. ज्योति बाबू जैन (राजस्थान) ❊

सम+अजाति= समाज अर्थात समान रहकर एक समान रीति, नीति, परम्परा और व्यवहार संस्कृति धारियों को समाज कहा जाता है। समान रहकर सुख दुःख में अविभाजित अनुभव करने वालों का संगठन समाज कहलाता है और उसका नेतृत्व करने वाला विद्वान होता है। विद्वान समाज में प्रकरण अनुसार बोलने वाला, भाव के अनुसार क्रिया करने वाला और शक्ति के अनुसार दान देने वाला होता है। शास्त्रकारों ने लिखा है-

प्रस्तावसदृशं वाक्यं सद्भावसदृशीं क्रियाम्।
आत्मशक्तिसमं दानं यो जानाति स पण्डित:॥

समाज और विद्वान धर्मरथ के सारथी हैं। विद्वानों का समय-समय पर उचित मार्गदर्शन आवश्यक है तो समाज की गंभीरता और विद्वानों से सहयोग लेने की भावना भी अपेक्षित है। आज समाज को उन्नति के लिए मार्गदर्शन और कुशल नेतृत्व की आवश्यकता है। समाज में व्याप्त मिथ्या मान्यताओं, श्रावक और साधुओं में व्याप्त शिथिलाचार, युवाओं की संस्कार हीनता, तीर्थ क्षेत्रों की समस्याएं, जटिल समस्याएं हैं। इनके निराकरण व समाधन हेतु विद्वानों और समाज के नेतृत्वपक्ष को एक साथ मिलकर गहन चिंतन करने की आवश्यकता है।

विद्वान का समाज के साथ आत्मा और शरीर की तरह का संबंध है। समाज विद्वान का शरीर है। समाज में वह पलता है और संस्कृति के क्षीर को पीकर वह समृद्धि तथा पृष्टि को प्राप्त करता है। उसका संरक्षण संबर्द्धन करना प्रत्येक व्यक्ति का धर्म है। प्रत्येक व्यक्ति अपने समाज के प्रति कृतज्ञ और विनयी होता है। फिर विद्वान का समाज के प्रति समर्पित होना स्वाभाविक ही है। यह महत्वूपर्ण नहीं कि समाज ने हमको क्या दिया ? महत्वपूर्ण यह है कि हमने समाज को क्या दिया। आज तक किसी विद्वान का समाज में इसलिए सम्मान नहीं किया कि समाज से उसने क्या लिया अपितु इसलिए जरूर हुआ कि समाज को उसने क्या दिया। सदा से ही वह समाज को देता रहा है, उसने दिया अधिक लिया कम है।

विद्वानों की बढ़ती संख्या और समाज में घटते संस्कार

यह प्रसन्नता का विषय है कि 20वीं सदी की अपेक्षा 21वीं सदी में युवा शास्त्री विद्वानों में वृद्धि हो रही है। प्रति वर्ष सांगानेर जयपुर लगभग अर्द्धशतक शास्त्री विद्वान तैयार होकर समाज को प्राप्त हो रहे हैं। लेकिन जिस गति से विद्वान तैयार हो रहे हैं, उससे कहीं अधिक गति से समाज में संस्कारों का अभाव भी हो रहा है। युवा पीढ़ी में संस्कारों के अभाव से संवेदनाएं खत्म हो रही हैं। आज का युवा जीव व जीवन के महत्व को नहीं समझता है। यहीं कारण है कि थोडी सी प्रतिकूलता में ही मरने मारने को तैयार हो जाता है।

हाल ही में समाज के लिए विचारणीय घटना घटित हुई जिसमें एक सप्ताह के अंदर समाज के दो युवाओं ने आत्महत्याएं कर ली। लगभग 20 वर्ष की एक लड़की ने संस्कार हीनता के अभाव अपनी माता से संक्षिप्त से विवाद के बाद आत्महत्या कर ली। वहीं दूसरे बीटेक आई टी के 24 वर्षीय छात्र ने अपने कॉलेज के डायरेक्टर पर चाकू से आत्मघाती हमला करने के बाद

स्वयं झील में कूदकर अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली। ऐसी अनेक घटनाएं समाज में आये दिन घटित हो रही है। इन विषम परिस्थितियों में समाज की संस्कृति, संस्कार, सभ्यता की रक्षा हेतु विद्वानों को समाज के साथ मिलकर गहन चिंतन करने की आवश्यकता है।

विद्वान दर्शक नहीं मार्गदर्शक बने-

ज्ञानार्णव में कहा है कि-

धर्मनाशे क्रियाध्वंसे सुसिद्धान्तार्थ विप्लवे।
अपृष्टैरपि वक्तव्यं तत्स्वरूपप्रकाशने॥

ऐसा नहीं कि समाज में व्याप्त विसंगतियों से विद्वत वर्ग अनजान है। हम विषय की गंभीरता को समझाते हुए भी मध्यस्थ भाव धारण किये रहते हैं। हमें यह भय रहता है कि समाज हमें ही हासिये पर खड़ा न कर दे। यही कारण है कि अनेक अप्रभावना के प्रसंगों में जैनधर्म के मर्मज्ञ विद्वान सब कुछ जानते हुए भी मौन रहते हैं। यह हमारा मौन समाज में व्याप्त दोषों को पोषण प्रदान करता है।

आज साधु एवं समाज में व्याप्त दोषों का उपगूहन और स्थितिकरण कम बल्कि प्रकाशन अधिक हो रहा है जिससे समाज को देश में अन्य धर्मावलब्मियों के बीच नीचा देखना पड़ता है और समाज की गर्दन लज्जा से झुक जाती है। इसलिए विद्वानों को चाहिए कि उनको भटके मार्ग का ज्ञान कराकर स्थिति करण करे। जो विद्वान दूसरों को सम्बोधित करते है उन्हें ही ज्ञानी कहा है, न बोलने वाले ज्ञानी तो घट में रखे हुए दीपक के समान हैं।

अथ विज्ञाः प्रकुर्वन्ति मेन्येषां प्रतिबोधनम्।
सर्वज्ञास्ते परे मूर्खाः यन्तेस्युर्घटदीपवत्॥

विद्वानों को कर्तव्य है कि जहाँ धर्म की हानि/अप्रभावना हो रही हो वहाँ अपने निजी स्वार्थ का त्याग कर समाज का मार्गदर्शन करें। विद्वानों के प्रियवचनों से सभी संतुष्ट होते हैं इसलिए ऐसे समय में विद्वानों का मौन रहना उचित नहीं है। कहा है-

प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति मानवाः। तस्मात् तदेव वक्तव्यं वचने का दरिद्रता॥

विद्वान परमार्थी बने-

हमारी पूर्व विद्वत परम्परा रही है कि विद्वानों ने कभी अपने स्वार्थ को नहीं परमार्थ को देखा। समाज हित में वे उदरपूर्ति मात्र में सरस्वती की सेवा में समर्पित रहे जिनमें वर्णी जी, पं. भूरामल जी, पं. दौलतराम जी, पं. टोडरमल जी, हीरालाल जी सिद्धांत शास्त्री आदि प्रमुख हैं। अनेक विद्वानों को समाज की उपेक्षाओं का शिकार भी होना पड़ा क्योंकि वे आजीविका हेतु समाज पर निर्भर थे। पूर्व के कई विद्वानों में अर्थ की सामर्थ्य न होने पर भी विपरीत परिस्थितयों में सरस्वती की उपासना, व समाज की सेवा की है। कविवर पं. भागचन्द्र जी की स्थिति को देखते हुए समाज ने जब उन्हें सहयोग करने की भावना व्यक्त की तो उन्होंने समाज से सहयोग लेने से मना कर दिया और उन्होने कहा कि मेरे से अभी लक्ष्मी रूठी है सरस्वती नहीं यदि सरस्वती भी रूठ गई तो फिर इस अभागे भागचन्द्र को कौन पूछेगा।

पूर्व सरस्वती पुत्रों की कुछ ऐसे ही स्थिति रही है। परन्तु आज 21वीं सदी में यह कहना उचित प्रतीत नहीं होता कि सरस्वती और लक्ष्मी का वास एक साथ नहीं होता। आज यह कहते हुए प्रसन्नता है कि आधुनिक विद्वान धीमान् ही नहीं अपितु श्रीमान् भी हैं। वे आज केवल समाज को ज्ञान ही नहीं अपितु आवश्यक होने पर दान भी दे सकते हैं। युवा विद्वानों के पास तो धी, श्री और सामर्थ्य भी है। वे समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकते हैं। बस आवश्यक है कि विद्वान निष्पक्ष और निर्लोभी होकर समाज का मार्गदर्शन करें।

विद्वान अवसरवादी नहीं यथार्थवादी बने-

लोभ और लोभ होने पर सत्य का अभाव हो जाता है। आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने चेतना के गहराव में लिखा है।

जिस वक्ता में धन कंचन की आस और पादपूजन की प्यास मौजूद है
वह जनता का जमघट देख अवसरवादी बनता है,
कथन का ढंग बदल देता है, आगम की भाल पर घूंघट लाता है,
जैसे झट से रंग बदल देता है गिरगिट।

विद्वान समाज का नेता है उस पर समाज और संस्कृति का ऋण है, तन मन और जीवन देकर इसकी संपन्नता को नष्ट होने से बचाना हम सब का कर्तव्य है। समाज की रचना कोई एक दिन का काम नहीं यह वह अंकुर है जो कई युगों में वृक्ष रूप होकर हमें फल और छाया प्रदान कर रहा है। इसके संरक्षण सर्वधन में युगों से अनेकों आचार्यों, विद्वानों, मनीषियों को योगदान रहा है। उन्होंने अपने चिंतन से संमार्ग खोजकर समाज को एक समान, रीति, नीति, परम्परा और संस्कार प्रदान किये हैं। पूर्व में समाज की उपरी पहचान रोटी, वेटी, व्यवहार से होती थी। किन्तु उसका अभ्यातंर स्वरूप सहधर्मी के प्रति वात्सल्य बंधुता से जाना जाता था।

पहले लोग अपने समान शील परिवारों के समूह में रहते थे। तो उनके सुख दुःख भी परस्पर में बटे हुए होते थे। परन्तु आज नगरों में होने से ऐसी समाजिकता के दर्शन ही नहीं होते है। आज की वास्वविकता यह है। कि निर्पेक्ष भाव से यदि विद्वान समाज का मार्गदर्शन करना चाहे तब भी समाजिक व्यक्तियों को रूचि के अभाव में विद्वान के लिए समय नहीं है। उनके पास विद्वान का यथोचित सम्मान भी नजर नहीं आता यही कारण है कि विद्वान भी कर्तव्यविमुख हो रहे हैं। फिर भी इस स्थिति में राष्ट्र कवि की पंक्तियां दृष्टव्य है-

आदर मिले या न मिले, इसकी कोई परवाह नहीं।
फल भी मिले या न मिले, इसकी कोई चिंता नहीं।
कर्तव्य करने के लिए, यह मनुष्यभव धारण किया।
ऋणमुक्त होने के लिए कर्तव्यपथ स्वीकृत किया।।

आज न समाज को विद्वान से और न ही विद्वान को समाज से विशेष अपेक्षा रही है। क्योंकि समाज श्रेष्ठियों पर, और विद्वान नौकरियां पर आश्रित है। आज समाज का दृष्टिकोण धीमानों से हटकर श्रीमानों की ओर बढ़ रहा है। पूर्व में जो विद्वान समाज का नेतृत्व करता था। आज वह सहयोगी मात्र रह गया है। इस स्थिति में भी **एते सत्पुरुषाः परार्थ घटकाः स्वार्थ**

परित्यज्यये नीति के अनुसार विद्वानों को अपने गौरव बनाये रखने की आवश्यकता है। विद्वान अपने निजी स्वार्थ का परित्याग का समाज का मार्गदर्शन करें। क्योंकि जो अधिकार को प्राप्त कर भी उपकार नहीं करते उसे नीति कारों ने धिक्कार दिया है-

अधिकार पदं प्राप्य नोपकारं करोति यः।
अकारो लुप्यतामेति, ककारो द्वित्वतां भवेत्।

विद्वान अपनी ओर से ही समाज के लाभ के कार्यों को करना अपना कर्तव्य समझते हैं। सन्तः स्वयं परहिते विहितभियोगाः

विद्वान समर्थवान तो हर समस्या का समाधान-

वर्तमान युग में सत्य को कहना और सत्य का सुनना दोनों ही कठिन हो गया है-

इज्जतदार है लूटने वाले, उनको चोर बताए कौन।
नादां हो समझाने वाले, फिर उनको समझाए कौन।।

लेकिन सत्य तो वैकल्पिक होता है वह स्थिति या परिस्थिति के अनुसार परिवर्तित नहीं होता। विद्वानों में सत्य को कहने की सामर्थ्य होना चाहिए क्योंकि सत्य से जीवों का कल्याण और समाज का उपकार होगा। परंतु सत्य के प्रतिपादन में जोश के साथ अपने होश/विवेक को न जाने देवें और बुद्धिमानी से समाज से उपकारक और क्लेशनाशक वचन बोलें। विद्वान समाज के हर विवाद को आसानी से सुलझा सकते हैं।

वस्तु एक अनेकरूप है अनुभव सबका न्यारा।
हर विवाद का हल हो सकता स्यादवाद के द्वारा।।

विद्वान समाज के लिए आदर्श

विद्वान अपनी वैदुष्यता से समाज में सम्मान और सभाओं में बोलने की योग्यता प्राप्त करता है जो सत्य शील को धारण कर ज्ञान के साथ साथ चरित्रनिष्ठ, अध्ययन के साथ मार्गदर्शन होता है, ऐसे विद्वान को सर्वत्र पूज्यनीय कहा है-

वैदुष्येण हि वश्यत्वं वैभवं सदुपास्यता।
सदस्यतालमुक्तेन विद्वान सर्वत्र पूज्यते।।

मैं स्मरण दिलाना चाहता हूँ हमारे आदर्शों में से एक जैन साहित्य के भीष्म पितामाह पं. जुगल किशोर जी मुख्तार युगवीर जिनकी कृति मेरी भावना से कोई भी अपरिचित नहीं है। वह अनेकान्त मनीषी जिन्होंने समाज के घोर विरोध की परवाह किए बिना अपनी स्थापनाओं को दृढ़ता के साथ समाज के समझ प्रस्तुत किया। उनका काव्य संकलन वीर पुष्पांजली हम सभी के लिए प्रेरणास्पद है। इस ग्रन्थ के मुख्य पृष्ठ की उक्त पंक्तियां दृष्टव्य है जिसमें उन्होंने अपना परिचय ही दे दिया

सत्य समान कठोर, न्यायसम पक्षविहीन,
हूंगा मैं परिहास रहित, कूटोक्तिक्षीण।
नहीं करूंगा क्षमा, इंच भर नहीं टलूंगा,
तो भी हूंगा मान्य, ग्राह्य श्रद्धेय बनूंगा।।

सकरात्मक सोचें, सफलता पाएँ-राष्ट्र संत

❊ संत श्री चन्द्रप्रभ जी ❊

अगस्त, मुंबई। राष्ट्र संत संत श्री चन्द्रप्रभ जी महाराज ने कहा कि नकारात्मक सोच तोड़ती है, सकारात्मक सोच जोड़ती है। साधरण किस्म के लोग गिलास आधा खाली देखते हैं समझदार लोग गिलास आधा भरा देखते हैं। ऊँचाई छूने वाले लोग गिलास पूरा भरा देखते हैं। ताड़ासन से भी हम अपनी हाईट 2 इंच से ज्यादा नहीं बढ़ा सकते, पर सोच को ऊँची उठाकर एवरेस्ट से भी ज्यादा ऊँचे हो सकते हैं। उन्होंने कहा कि ईश्वर के ज्ञान से हम में से हर इंसान को बहुत बड़ी ताकत ली है, वह है- सोचने-समझने की क्षमता। अपनी इस एक क्षमता के बलबूते इंसान संसार के समस्त प्राणियों में सबसे ऊपर है। हम सोच सकते हैं इसीलिए हम इंसान हैं। यदि हमारे जीवन से सोचने की क्षमता को अलग कर दिया जाए तो हमारी औकात किसी चौपाये जानवर से अधिक न होगी।

श्री चन्द्रप्रभ जी यहाँ श्रद्धालुओं से खचाखच भरे कोरा केन्द्र मैदान ने बड़ी सोच का बड़ा जादू विषय पर जनमानस को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि आपकी सोच आपके विचारों को, विचार वाणी को, वाणी व्यवहार को, व्यवहार आपके व्यक्तित्व को प्रेरित और प्रभावित करता है। एक सुंदर और खूबसूरत व्यक्तित्व, व्यवहार, वाणी और विचारों का मालिक बनने के लिए आपकी सोच को कुतुबमीनार जैसी ऊँची, ताजमहल जैसी सुन्दर और देलवाड़ा के मन्दिरों जैसी खूबसूरत बनाया। उन्होंने कहा कि सोच को सुन्दर बनाना न केवल अपने संबध, सृजन और आभामंडल को सुन्दर तथा प्रभावी बनाने का तरीका है बल्कि सुन्दर सोच परमपिता परमेश्वर की सबसे अच्छी पूजा है।

संत श्री ने कहा कि सोच स्वयं ही एक सुन्दर मंदिर है जहाँ से सत्यम शिवम सुन्दरम का मन लुभावन संगीत अहर्निश फूटता रहता है। सोच अगर सुन्दर है तो स्वर्ग का द्वार सदा आपके लिए खुला है। सोच के बदसूरत होते ही शैतान का हम पर राज होता है। उन्होंने कहा कि एक अच्छी, सुन्दर और सकारात्मक सोच स्वयं की महावीर का समवसरण, बुद्ध का स्वर्ण- कमल, राम का रामेश्वरम और कृष्ण का वृंदावन धाम है।

संत श्री ने सभी श्रद्धालुओं को निवेदन किया कि जरा दो मिनट के लिए इस संसार के प्रति अच्छी सोच लाकर देखिए, आपको किसी दूसरे स्वर्ग को पाने की बजाय इसी धरती को स्वर्ग जैसा सुन्दर बनाने की तमन्ना जग जाएगी।

श्री चन्द्रप्रभ जी महाराज ने कहा कि लाल बहादुर शास्त्री और अब्दुल कलाम जैसे लोग गरीब घर में पैदा होकर भी और धीरूभाई अंबानी इंटरमीडियट होकर भी शीर्ष पर पहुँच जाए तो फिर हम ही मुँह लटकाए मायूस क्यों बैठे हैं। जीवन में फिर से जोश जगाएँ और कामयाबी के आसमान को छूने के लिए अभी इसी वक्त छलांग लगा दें। उन्होंने कहा कि आपकी हाइट अगर साढ़े पाँच फुट की है तो ताड़सन करके भी आप अपने सिर को छह फुट से ऊँचा नहीं कर सकते, आप अपनी सोच को ऊँचा उठाना चाहें तो हिमालय से भी ऊपर उठ सकते हैं।

संतप्रवर ने कहा कि संकीण सोच, स्वार्थी सोच, निराशा भरी सोच मंथरा सोच, धमंडी

सोच-सोच की विकृतियाँ हैं। इन विकृतियों के झाड़- झंखारों को अपने मन के खेत में उखाड़ फेंकिये। आपके दिमाग की जमीन उपजाऊ है, नई ऊर्जा और उमंग के साथ सबको मधुर फल खाने वाले बीज बोइए। उन्होंने कहा कि जिस पड़ौसी से आपको ईर्ष्या है, जिस सास से आपको शिकायत है जिस पिता से आपको पीड़ा है जिस ग्राहक से आपको ग्लानि है, कृपया उनके प्रति मात्र 10 मिनट के लिए अपनी सोच को सुन्दर और सकरात्मक बनाकर देखिए आप उन्हें गले लगाने को बावले हो उठेंगे।

राष्ट्र संत ने कहा कि सारे झगड़ों की जड़ है हमारी नकरात्मक सोच सारे समाधानों का आधार है हमारी सकरात्मक सोच। गिलास को आधा भरा हुआ देखेंगे तो कमजोर का भी उपयोग कर लेंगे। गिलास आधा खाली देखेंगे तो सगे भाई से भी पल्लू झाड़ बैठेंगे। उन्होंने कहा कि सफलता की चाबी है-गिलास हमेशा भरा हुआ देखो। किसी से कोई कमी है तो उससे समझौता कर लो ईंट के रूप में न सही, मिट्टी के रूप में तो सबका उपयोग किया ही जा सकता है।

समारोह का शुभारम्भ पूर्व विधायक संयम श्री लोढ़ा, लाभार्थी राजेन्द्र जी, महेन्द्र जी सुराणा परिवार एवं साहित्य वितरण के लाभार्थी श्रीमति कुसुम जी कासलीवाल परिवार, सुवाल दर्शन मंडल के बाबुलाल जी छाजेड़ एवं गेनीराम जी धाड़ीवाल ने दीपप्रज्वलन कर किया।

इस अवसर पर राष्ट्र-संतों के सान्निध्य में सैकड़ों भाई-बहनों ने यागी नगर स्थित मां मांगल्य भवन में एकासना व्रत की आराधना की।

कविता

वो लूटते रहे उम्र भर चमन के लिए

❊ समाधिस्थ : ऐलक सम्यक्त्व सागर जी ❊

वो लूटते रहे उम्र भर चमन के लिए
हम तरसते रहे एक सुमन के लिए
ये मधुशाला में बैठे हैं जाम पीते हुए
वो मर मिटे थे अपने वतन के लिए
उनकी महफिल के कालीन मखमल के थे
वो तरसती रही लाश कफन के लिए
बोए बिष के बीज उनने चारों तरफ
क्या बचेगा यहाँ संकलन के लिए
फैसा कैसा उन्माद ये फसादों का है
हम करते इबादत अमन के लिए

चलो देखें यात्रा

जैन तीर्थ बहोरीबंद

नाम एवं पता :- श्री दिगम्बर जैन अतिशय बहोरीबंद जिला कटनी
फोन : 07624-261736 प्रबंधक- श्री दिनेश जैन 9425153750 सम्पर्क सूत्र- सिंघई केवलचन्द्र जैन- 9425324221 श्री उत्तमचन्द्र कटनी-94291-53750

सुविधायें : सर्व सुविधा युक्त 10 कमरे हैं । भोजनशाला है। नवनिर्मित सदलगा भवन बन चुका है।

मागदर्शन: दमोह कटनी रेलवे मार्ग पर सलैया स्टेशन तथा कटनी जबलपुर रेल मार्ग पर सिहोरा स्टेशन से 25 किमी. है। रोड़ से कटनी 55 किमी. है। सिहोरा से नियमित बसें है। पनागर- 60 जबलपुर 65 पुष्पावती बिलहरी 30 कुंडलपुर 65 सिहोरा 25 कटनी 55 सलैया 25 किमी. है।

महत्व एवं दर्शन: क्षेत्र प्राचीन एवं ऐतिहासिक है। जिसका काफी जीणोद्धार हो चुका है। एवं हो रहा हैं । पूर्व में यह प्रसिद्ध एवं ऐतिहासिक नगर रहा हैं। बाहुबली की प्रतिमायें आकर्षक हैं। बाहुबली मन्दिर का निर्माण हो चुका है। क्षेत्र पर 3 मन्दिर है। आचार्य श्री विद्यासागर जी का 3 बार प्रवास हो चुका है। मन्दिर के सामने शान्ति भवन का निर्माण हो चुका है। क्षेत्र के विकास में बाबा कल्याणदास जी का योगदान पिसनहारी मड़िया की तरह से है।

विशेष :- पर्यटन स्थल है। कूडनटैक के मोर पहाड़ी व कुंजल कुंड 5 किमी. तंगवा ग्राम में 36 देवालयों के अवशेष है।

अन्य तीर्थ क्षेत्रों में पुष्पावती बिलहरी पनागर नजदीक है। जो यात्री पुष्पावती बिलहरी से जबलपुर आना चाहते हैं वे कटनी जबलपुर रोड़ पर पनागर के दर्शन कर जबलपुर पहुंच सकते हैं।

विशेष :- बटेश्वर महादेव का प्रसिद्ध मंदिर है। कार्तिक पूर्णिमा पर लाखों लोग यमुना में स्नान करने आते हैं। यहाँ पर पशुमेला भी प्रसिद्ध है। राजा शूरसेन की राजधानी सूर्यपुर थी जो बदलकर शौरीपुर हो गई। शौरीपुर में श्वेताम्बर मंदिर एवं धर्मशाला पास ही हैं। भोजनशाला नहीं है।

कविता

माँ

माँ औषधि है तू दुखहरणी
सुखमय जीवन सत्य सुधरणी

तेरा जब आशीष मिलो तो
कली खिले जीवन की वो

तेरे आँचल में बसंत है
तेरा जीवन स्वयं संत है

कौन भुलाये माँ उपकार
जीवन है उसका बेकार

माँ तू है तरण तारणी
लक्ष्मी, सरस्वती, वीणावादनी

डाक टिकटों पर जैन इतिहास एवं संस्कृति

जैन व्यक्तित्व

डॉ.जगदीश चन्द्र जैन

उत्तर प्रदेश के एक छोटे से गाँव बसेड़ा (जिला मुजफ्फर नगर) में डॉ. जगदीश चन्द्र जेन का जन्म 20 जनवरी 1909 ई. में हुआ था। इन के पिता श्री कांजीलाल जैन की गाँ व में छोटी सी युनानी दवाईयों की दुकान थी। सन् 1911 में इन के पिता कांजीलाल जैन के पलेग के रोग से निधन हो गया तथा परिवार को बड़ी कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। परिवार बेहद निर्धन था। जगदीश चन्द्र ने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा गाँव की पाठशाला से प्राप्त की, वह पढ़ने लिखने में बेहद योग्य विद्यार्थी थे। 9 वर्षों की आयु में इन्होंने पाठशाला की पढ़ाई समाप्त की, इसके बाद इनके बड़े भाई के आगे पढ़ने के लिए उनको गुरुकुल में भेज दिया जहाँ उन्होंने शिक्षा ग्रहण करने के साथ-साथ सख्त अनुशासन को सीखा जिसने उनके आनेवाले जीवन पर बड़ा प्रभाव डाला।

1923 में जगदीश चन्द्र जैन ने अपने बलबूते पर स्यादवाद जेन महाविद्यालय, वाराणसी में दाखिला लिया जहाँ उन्होंने संस्कृत, जैन धर्म, व्याकरण, साहित्य तथा न्याय को पढ़ा तथा उन्होंने शास्त्री की डिग्री प्राप्त की। उन्होंने अपनी पढ़ाई को जारी रखा तथा बाद में एम.ए फिलासफी की डिग्री प्राप्त की। जगदीश चन्द्र जैन का कॉलेज का जीवन कोई आसान नहीं था, उन्हें हर रोज अपने खाने के लिए संघर्ष कर के कुछ न कुछ कमाना पड़ता था।

1929 में इन की शादी कमल श्री से हो गई जो एक उच्च धन्डया तथा समृद्ध परिवार से आई थी, परन्तु उन्होंने जल्दी ही अपने ऐशो आराम की जिन्दगी को त्याग दिया तथा श्री जगदीश चन्द्र जैन के परिवार में अपने जीवन को ढाल लिया।

महात्मा गाँधी द्वारा चलाये गया अहिंसा पूर्वक सत्याग्रह का उन पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा। ई. सन् 1930 में वह सत्याग्रह आंदोलन में कूद पड़े तथा सत्याग्रहियों की प्रथम श्रेणी में उनका नाम शामिल हो गया। उन्होंने अजमेर में एक स्कूल अध्यापक के रूप में अपना केरियर शुरू किया, जब मुख्याध्यापक ने उनके गांधी टोपी पहनने पर आपत्ति की, तब जगदीश चन्द्र जैन ने नौकरी छोड़ देना बेहतर समझा। समय बीतता गया कुछ वर्षों के बाद उनको शोध छात्र के रूप में शांति निकेतन स्थित विश्वभारती-विश्वविद्यालय में पढ़ने के लिए छात्रवृत्ति मिली। यहाँ पर गुरुदेव रविन्द्र नाथ टैगोर के सान्निध्य में उनका बौद्धिक विकास हुआ तथा भारत की विरासज की महानता की अनुभूति हुई। बाद में डॉ. जैन ने राम नारायण रूइया कॉलेज, बम्बई में 30 वर्षों से भी अधिक समय तक हिन्दी, संस्कृत, तथा प्राकृति के प्रोफेसर के रूप में कार्य किया। यहीं पर उन्होंने SOCIOLOGY में PHD की।

1942 में डॉ. जगदीश चन्द्र जैन ने फिर भारत की आजादी के लिए सत्याग्रह में भाग लिया तथा उन्हें सितम्बर 1942 में वरली जेल में डाल दिया गया। सन् 1970 मे डॉ. जैन को कील (KIEL) जर्मनी में भारतीय विद्या विभाग के आंमत्रित अतिथि प्रोफेसर के रूप में 4 वर्षों तक कार्य किया। सन् 1980 में वह भारतीय दर्शन पर व्याख्यान देने ब्राजील गये। उनकी प्रसिद्ध पुस्तक जाइनिजम (जैन धर्म) का पुर्तगाली भाषा में अनुवाद किया गया। उच्च कोटि की जैन विचार धारा, प्राकृत भाषा तथा साहित्य के महान जानकार विश्वविख्यात विशेषज्ञ डॉ. जगदीश चन्द्र जैन ने प्राकृत भाषा ओर साहित्य को न केवल भारत में अपितु विदेशों में भी प्रचारित ओर प्रसारित किया वह एक प्रसिद्ध इतिहासकर और आगमदेत्त थे। वह जाने माने INDOLOGIST पुरानत्व विभाग विशेषज्ञ, खोजकर्ता, शिक्षा शास्त्री, लेखक तथा स्वतंत्रता सेनानी थे। उन्होंने भारत की आजादी की लड़ाई के दौरान जैन फिलासफी, प्राकृति साहित्य

तथा हिन्दी भाषा की 80 से अधिक पुस्तके लिखी। वह बिहार के प्राकृति जेन इंस्टीटूयूट में शोध निदेशक रहे। उन्होंने पेचिंग (चीन) में भी अध्यापन कार्य किया उन्होंने सरकार को बार-बार गांधी जी के मारे जाने के बारे में चेतावनी दी थी, लेकिन उनकी एक न सुनी गई, वह गांधी जी हत्या के सिलसिले में ई. सन् 1948 में लाल किले दिल्ली में चले मुकदमें में मुख्य गवाह थे। बाद में उन्होंने अपनी यादों को दो पुस्तकों में लिखा जिनके नाम हैं।

I Could Not Save Bapu तथा The Forgotten Mahatma

इन्हें ज्ञान भारती पुरस्कार के अलावा अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कार देशा तथा विदेशों में मिले। 28 जुलाई 1993 को (85 वर्ष) की आयु में उनको दिल का दौरा पड़ा , जिससे उनकी मृत्यु हो गई। बॉम्बे मयुनिसिपल कॉरपोरेशन (BMC) ने बॉम्बे की जिस स्ट्रीट में डॉ. जगदीश चन्द्र जैन रहते थे उस स्ट्रीट का नाम उनके नाम पर रखकर उनको श्रद्धांजली दी थी। इनकी याद में प्रो. जे.सी. जैन स्मारक ट्रस्ट कमेटी बनी हुई है जो इन के कार्यों, विचारों तथा साहित्य को आगे बढ़ा रही है।

डाक टिकट तथा डाक टिकट का डिजाईन

जैन जगत के महान सपूत डॉ. जगदीश चन्द्र जेन के चित्र वाला एक स्मारक डाक टिकट भारत सरकार के डाक विभाग द्वारा 28 जनवरी 1998 को जारी किया गया । भूरे रंग के 200 पैसे वाले इस डाक टिकट में बांयी ओर डॉ. जगदीश चन्द्र जैन का चित्र और दांयी ओर संभवतः सिन्धु सभ्यता से प्राप्त दो सीलों जो कि जैन धर्म से सम्बधित जान पड़ती हैं कि चित्र अंकित है। इस टिकट को फोटोग्राफर मुद्रण प्रक्रिया से 4 लाख संख्या से जारी किया गया था। इसका विवरण लंडनर (ईंग्लेंड) से छपने वाले स्टेनले गिब्णस केटालाग में नम्बर 1774 तथा अमेरिकी से छपने वाले सकाट केटालाग में नम्बर 1677 पर दिया गया है।

कविता

दीप मालिका आओ गृह-गृह

❊ रचयिता : कांति कुमार जैन (करूण खिमलासा) ❊

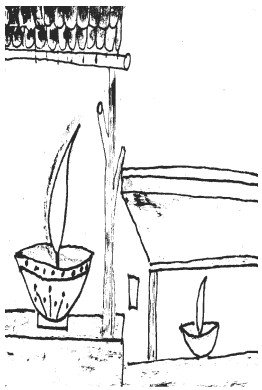

दीप मालिका आओं गृह गृह, ज्ञान की ज्योंति जलाने को ।
महावीर निर्वाण महोत्सव, आया पर्व मनाने को ।।
वीर के उत्सव के द्वारा ही, लाडू हम सब चढ़ा रहे ।
पूजन अर्चन प्रभु का करके, खुशियां हम सब मना रहे ॥
धन्य धन्य हो गया दिवस यह, मुक्ति के पद पाने को ।
दीप मालिका आयी गृह गृह, ज्ञान की ज्योंति जलाने को ।।
स्वच्छ हो गये अपने घर घर, खुशियाँ छाई जगती में ।
हम सब मिलकर दीप जलाने, प्रभु की अर्चन भक्ति में ॥
गणधर जी ने पायी मुक्ति, खुशियां अरे मनाने को ।
दीप मालिका आओं गृह गृह, ज्ञान की ज्योंति जलाने को ।।
त्रिशला माता सिद्धार्थ नृपवर, पाये वीर श्री तीर्थंकर ।
धन्य हो गया कुंडलपु र यह, पायें जगती ने प्रभुवर ॥
सत्य अहिंसा धर्म का शासन, भारत भूमि पाने को ।
दीप मालिका आओं गृह गृह, ज्ञान की ज्योंति जलाने को ।।
कार्तिक कृष्णा और अमावस, का दिन कितना शुद्ध हुआ ।
मना रहे हम प्रभुवर का दिन कितना शुद्ध और पवित्र हुआ ॥
गीत लिखेगा करूण प्रभु के , मुक्ति के पथ पाने को ।
दीप मालिका आओं गृह गृह, ज्ञान की ज्योंति जलाने को ।।

आगम दर्शन

क्या है प्रवचन सार में

प्रवचन सार ज्ञान ज्ञेय और चारित्र का दार्शनिक अध्यात्मिक ग्रंथ है । आचार्य कुन्दकुन्द के वाङमय में प्रवचन सार का विशिष्ट स्थान है। आचार्य कुंदकुंद देव जैन धर्म युग प्रभावक वीतरागी मंगलरूप संत हुए हैं। आचार्य कुंदकुंद का जीवनवृत्त अभी भी बहुत कुछ अज्ञात है । फिर भी आचार्य कुंदकुंद का जन्म स्थल वर्तमान भारत के आंध्र प्रदेश के अनंतपुरम् जिले के कोण्डकुण्डम में हुआ था आपका काल ईसापूर्व 8 के लगभग अनेक प्रमाणों से सिद्ध होता है । आपके अनेक नाम थे पद्मनंदी, वक्रग्रीव ऐलाचार्य गृध्रपिच्छाचार्य और कुंदकुंद इन पाँच नामों का उल्लेख प्राप्त होता है । आपको जमीन से चार अंगुल ऊपर आकाश में चलने की ऋद्धि प्राप्त थी आपश्री तीर्थंकर सीमंधर भगवान के समवसरण में गये विदेह क्षेत्र जाकर अपने तीर्थंकर सीमंधर स्वामी की वाणी का श्रवण साक्षात् किया। आचार्य श्री कुंदकुंद देव को कलिकाल सर्वज्ञ कहा जाता है । आपकी महत्ता जैन साहित्य अनेक स्थलों प्राप्त होती है। आपका उल्लेख अनेक प्राचीन शिलालेखों में प्राप्त होता है।

आचार्य कुंदकुंद देव ने 84 पाहुड़ ग्रंथों की रचना की उनमें समयसार, प्रवचनसार, पंचास्तिकाय, नियमसार, अष्टपाहुड, (दर्शनपाहुड , सूत्रपाहुड, चारित्रपाहुड, भावपाहुड, मोक्षपाहुड, शीलपाहुड, लिंगपाहुड) वारस अनुप्रेक्षा भक्ति संग्रह (सिद्ध भक्ति श्रुत भक्ति चौबीस तीर्थंकर भक्ति आचार्य भक्ति षट्खंडागम टीका रयणसार आदि अनेक अध्यात्म भक्ति दर्शन प्रधान ग्रंथ आज भी उपलब्ध हैं।

प्रवचनसार ग्रंथ में 3 अधिकार है प्रथम ज्ञान अधिकार है इस अध्याय में 92 गाथायें मूल में तथा 9 क्षेपक गाथायें है इन 6 क्षेपक गाथाओं पर टीका आचार्य जयसेन जी लिखी है द्वितीय ज्ञेय अध्याय में 108 गाथायें मूल है तथा 5 क्षेपक गाथायें हैं तृतीय चरणानुयोग चूलिका में 75 मूल गाथायें हैं। तथा 22 क्षेपक गाथायें हैं आचार्य अमृतचंद जी ने 275 गाथाओं पर तत्त्व प्रदीपिका टीका लिखी जबकि आचार्य जयसेन जी ने 311 गाथाओं का समावेश अपनी तात्पर्यवृत्ति टीका में किया है। प्रवचसार ग्रंथ पर आचार्य अमृतचंद जी ने तत्त्वप्रदीपिका नाम से टीका लिखी आचार्य जयसेन ने तात्पर्य वृत्ति नाम बालचन्द्र जी ने कन्नड़ तात्पर्य वृत्ति नाम से टीका लिखी सरोज भास्कर नाम से आचार्य प्रभाचंद ने टीका लिखी मल्लिषेण आचार्य ने टीका लिखी पाण्डे हेमराज ने हिन्दी बालबोध टीका लिखी इस प्रकार प्रवचन सार पर 6 टीकायें उपलब्ध है।

ज्ञानधिकार की विषयवस्तु

प्रथम पाँच गाथाओं में मंगलाचरण किया गया है 6वीं गाथा में सराग चारित्र और और वीतराग चारित्र का वर्णन है चारित्र ही धर्म है 7 वीं गाथा में विषय प्रस्तुत किया गया है 8वीं गाथा में धर्म को आत्मा से अभिन्न बताया गया है 9वी गाथा में जीव के

अशुभोपयोग शुभोपयोग और शुद्धोपयोग का वर्णन किया गया 10वीं परिणाम वस्तु का स्वभाव है ज्ञापित किया गया है शुभ और शुद्धपरिणाम को चारित्र कहा है अशुभोपयोग का फल तथा शुद्धोपयोग का फल गाथा 12,13 में तथा 14वी गाथा में शुद्धोपयोग का लक्षण निर्धारित किया गया है, शुद्धात्म उपलब्धिकार साधन शुद्धोपयोग बताया है (गाथा 15 में) स्वयंभू की सिद्धि 16 में शुद्ध स्वभाव को नित्य तथा कंथचित् उत्पाद व्यय ध्रौव्य रूप दिखाया है (गाथा 17 में) सभी द्रव्य एवं आत्मा उत्पाद व्यय ध्रौव्य रूप है (18) अतीन्द्रिय ज्ञान क्या है।

ज्ञान ओर सुख स्वभाव से उत्पन्न है (19) अतीन्द्रिय के शारीरिक सुख दुख नहीं होते है। (20) अतीन्द्रिय ज्ञान की प्रत्यक्ष है (21) अतीन्द्रिय ज्ञान में कुछ भी परोक्ष नहीं होता है। (22)आत्म ज्ञान प्रमाण है कि सिद्धि (23,24,25) आत्मा के ज्ञान के समान सर्वगतत्व होता है (26) आत्म और ज्ञान एक ही है कि सिद्धि (27) ज्ञान और ज्ञेय परस्पर गति नहीं करते हैं (28-32) केवलज्ञानी और श्रुतज्ञानी मात्र प्रत्यक्ष परोक्ष का अंतर है (33) आत्म और ज्ञान में भेद नहीं होता है। (35) त्रिकाल पर्यारु ज्ञाता ही सर्वज्ञ की सिद्धि असद्भूत पर्यायें भी ज्ञान में झलकती है । अतीन्द्रिय ज्ञान की सिद्धि (36-42) ज्ञान का बंध का कारण नहीं तीर्थंकर केवली की क्रिया पुण्य फल बंध का कारण नहीं (43-46) अतीन्द्रियज्ञान ही सबको जानता है जो एक को जानता है वह सबको जानता है तथा जो सबको जानता है वह एक को जानता है (47-49) युगपत-ज्ञान ही सर्वगत होता क्रम रूप ज्ञान नहीं (50-51)

सुखाधिकार ज्ञानाधिकार को अंतर्गत 53 से 68 गाथा तक है प्रस्तुत अधिकार में ज्ञान से सुख को अभिन्न बताया है अतीन्द्रिय ज्ञान अतीन्द्रिय सुख का साधन है इन्द्रिय ज्ञान इन्द्रिय सुख का साधन है अतीन्द्रिय सुख ज्ञान उपादेय होता इन्द्रियज्ञान सुख हेय होता है इन्द्रिय ज्ञान प्रत्यक्ष नहीं होता है परोक्ष और प्रत्यक्ष के लक्षण बताते हुए प्रत्यक्ष को पारमार्थिक कहा है- केवलज्ञानी खेद संभव नहीं होता है केवलज्ञानी के पारमार्थिक सुख होता है इन्द्रिय सुख दुख ही है शरीर सुख का साधन नहीं है आत्मा ही सुख का स्रोत है इन्द्रिय विषय नहीं।

ज्ञानाधिकार के अंतर्गत शुभोपयोग अधिकार भी है शुभोपयोग इन्द्रिय सुख का साधन कहा इन्द्रिय सुख वास्तव में दुख ही है पुण्य को दुख का बीज माना है । मोह का स्वरूप बताते हुए मोह जीतने के उपाये अरिहंत को द्रव्यगुणपर्याय से जानना कहा है। शुद्धात्म उपलब्धि में मोह को बाधक माना है भेदज्ञान मोह क्षय का श्रेष्ठ उपाय है । आगम श्रद्धा के बिना धर्म नहीं होता है।

ज्ञेय अधिकार में 108 और 5 क्षेपक गाथाएँ है सामान्यता का विवेचन किया गया है द्रव्य गुण पर्यायत्मक वस्तु मानी है स्वसमय पर समय का विवेचन कर के उत्पाद व्यय ध्रौव्य युक्त सत्ता स्वीकार की है उत्पाद के बिना व्यय और व्यय को बिना उत्पाद नहीं होता है उत्पाद व्यव अविनाभावी होते है स्वरूप अस्तित्व सदृश्य अस्तित्व का वर्णन भी किया गया हैं उत्पाद व्यय में समय का भेद नहीं होता है। सत्ता और द्रव्य एक ही पदार्थ में होती है । सर्वथा अभाव का कोई लक्षण नहीं

होता है। सत्ता/द्रव्य में गुण गुणी संबंध होता है गुणागुणी भिन्न नहीं होती है द्रव्य में अन्य पना नहीं होता है सप्तभंगी न्याय स्याद्वाद का विशद विवेचन प्राप्त होता है द्रव्य नहीं पर्याय बदलती है। मनुष्यादिपर्यायें जीव को क्रिया का फल है पर्यायें अस्थिर होती है। आत्मा परमार्थ से द्रव्य कर्म का अकर्ता होता है। कर्म चेतना कर्म फल चेतना और ज्ञान चेतना का वर्णन किया गया है। इस तरह से सामान्य द्रव्य वर्णन किया गया है।

विशेष द्रव्य अधिकार

यह अधिकार 127 गाथा से 144 गाथाओं समावेशित है जीव अजीव का निर्धारण करते हुए लोक और अलोक का निर्धारण किया गया है मूर्त अमूर्त के लक्षण स्पष्ट किये गये हैं सप्रदेशी द्रव्य अप्रदेशी द्रव्यों का विभाजन किया गया है। अप्रदेश कालाणु का विशद विवेचना की गई है । आकाश द्रव्य का वर्णन किया गया है।

व्यवहार जीव, प्राण शक्ति का वर्णन करते हुए पर्याय के भेद संयोग से आत्मा को भिन्न बताया है आत्मा को उपयोगात्मक बताते हुए शुभोपयोग अशुभोपयोग के लक्षण बताते शुभोपयोग को क्षायोपशमिक और अशुभोपयोग को औदयिक कहा है शरीर मन वाणी को परद्रव्य सिद्ध किया है परमाणु को अप्रदेशी बताते हुए उसके बंध होता बंध प्रक्रिया और सिद्धांत का सूक्ष्म वर्णन किया है।

पुद्गल पिंड का अकर्ता आत्मा को माना है अमूर्त आत्मा के बंध होता है भावबंध द्रव्य बंध के स्वरूप को ज्ञापित किया है शुभ-अशुभ परिणाम पुण्य पाप के हेतु बताये है आत्मा और पुद्गल कर्म के संदेह को दूर किया है । निश्चय नय और व्यवहार नय में विरोध नहीं है । शुद्धनय शुद्धात्म और अशुद्धनय से अशुद्धात्मा की उपलब्धि होती है शुद्धात्म उपलब्धि ही मोक्षमार्ग है मोह ग्रंथी टूटने से ध्यान सिद्ध होता है सर्वज्ञ शुद्धात्मा का ध्यान करते हैं।

चरणानुयोग चूलिका में मंगलाचरण दीक्षा विधि मूलगुण वर्णन छेद विधान अंतरंग बहिरंग परिग्रह त्याग उत्सर्ग अपवाद मार्ग का समन्वय का वर्णन युक्त आहार विहार का माहात्म्य चारित्र में आगम का स्थान आगम ज्ञान से तत्त्वार्थ श्रद्धान और संयतपना होता है। आगम चक्षु ही साधु के होता है। अनेकाग्रता से मोक्षमार्ग घटित नहीं हेाता है मोक्षमार्ग सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र की एकाग्रता से घटित होता है।

शुभोपयोगी भ्रमण के लक्षण बताते हुए शुभोपयोगी श्रमण की प्रवृत्तियाँ वन्दना नमस्कार अभ्युथान अनुभवन विनय वैय्यावृत्ति जिनेन्द्र भक्ति उपदेश षट्काय विराधना रहित श्रमण शुभोपयोगी होते हैं। शुभोपयोग को विपरित फलदायक कहा है श्रमणाभास का स्वरूप बताते हुए उनकी संगति का निषेध किया है हीनाचरण वाले की विनयवंदना करने वाला स्वयं भ्रष्ट हो जाता है लौकिकता का लक्षण बताते हुए लौकिक चर्या संगति का निषेध किया है पंचरत्न रूप अंत में 5 गाथायें कही हैं जिन में संसार तत्त्व मोक्ष तत्त्व साधन शास्त्र का फल प्रवचनसार प्राप्ति बताया है।

प्रवचन सार ग्रन्थ आचार्य कुंदकुंद रचित अद्वितिय ग्रंथ है इसका अध्ययन करके कोई भी सत्य तत्त्व को आत्मसात् करके अतीन्द्रिय सुख शान्ति को प्राप्त कर सकता है।

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता
अक्टूबर 2018

मैं रंग बिरंगी मोर

प्रथम-
मैं कुदरत की अलबेली शान
मुझे चाहता सकल जहान
सुन्दरता का न कोई तोड़
देखो मैं रंग बिरंबी मोर

विवेक कुमार जैन जामघाट

द्वितीय-
शुभ पक्षी है सुन्दर प्यारा
सबसे सुन्दर दिखता न्यारा
कभी नहीं यह करता शोर
भैया मैं रंग बिरंगी मोर

श्रीमति रश्मि जैन सागर

तृतीय-
नीली हरी श्याम कुछ सुन्दर
पिच्छी बनाते इसके ही पर
सुन्दरता है कहीं न और
देखो साधु मैं रंग बिरंगी

श्रीमति रजनी जैन राहतगढ़

प्रोत्साहन-
राष्ट्रपक्षी भारत भूमि का,
रंग-रूप-सौन्दर्य निराला
वीणापाणी का वाहन मैं,
घनघोर घटाओं का मतवाला।
नर्तक मुझसा नहीं है और,
हूँ मैं रंग बिरंगा मोर।

ऋषभ जैन उज्जैन (म.प्र.)

अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा
सितम्बर 2018 के विजेता

प्रथम : श्रीमतिसुगंधाबाई सुभाषचन्द्र जैन (धुले)
द्वितीय : श्रीमति इन्दु बड़जात्या (बाकानेर)
तृतीय : श्रीमति मुन्नी सुरेशचन्द्र चौधरी (गुना)

वर्ग पहेली क्र. 225
सितम्बर 2018 के विजेता

प्रथम : श्रीमति रजनी विमलचन्द्र जटाले (महाराष्ट्र)
द्वितीय : श्री विमल जैन (धार म.प्र.)
तृतीय : श्रीमति कमला जैन (खरगोन)

अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा : अक्टूबर 2018 का हल

01. बबीना उ.प्र.
02. देवास म.प्र.
03. सागर म.प्र.
04. खुरई सागर म.प्र.
05. श्रवणबेलगोल कर्नाटक
06. कोल्हापुर महाराष्ट्र
07. राजस्थान
08. कर्नाटक
09. जबलपुर
10. कोपरगांव महाराष्ट्र
11. दिल्ली
12. पिण्डरई म.प्र.
13. सागर म.प्र.
14. भोपाल
15. सागर म.प्र.
16. सांगली महाराष्ट्र
17. छपारा मंडला
18. जबलपुर
19. दमोह
20. टीकमगढ़ म.प्र.
21. दमोह म.प्र.
22. टीकमगढ़ म.प्र.
23. सागर
24. इन्दौर म.प्र.
25. इन्दौर म.प्र.
26. राजस्थान
27. बेलगांव कर्नाटक
28. बेलगांव कर्नाटक
29. मथुरा आगरा
30. बेलगांव कर्नाटक
31. धारवाड़ कर्नाटक
32. हैदराबाद
33. सीहोर म.प्र.
34. राजस्थान
35. मेहसाणा गुजरात
36. सम्मेद शिखर
37. कोल्हापुर महाराष्ट्र
38. कर्नाटक
39. सम्मेद शिखर झारखंड
40. बड़ौत उ.प्र.
41. कोल्हापुर महाराष्ट्र
42. हजारीबाग झारखंड
43. बडौदरा गुजरात
44. राजस्थान
45. राजस्थान
46. राजस्थान
47. राजस्थान
48. मलयगिरी इन्दौर
49. बांसवाड़ा राजस्थान
50. कानपुर उ.प्र.

पुराणप्रेरणा

इंद्रिय विषय: विष जैसा

विषयानुभवे सौख्यं यत्पराधीन मङ्गिनाम्।
साबाधं सान्तरं बन्धकारणं दुःखमेव तत्॥

विषयों का अनुभव करने पर प्राणियों को जो सुख होता है वह पराधीन है बाधाओं से सहित है, व्यवधान सहित है और कर्मबन्धन का कारण है, इसलिए वह सुख नहीं है किन्तु दुःख ही है।

आपातमात्ररसिका विषया विषदारूणाः।
तदुद्भं सुखं नृणां कण्डूकण्डमनोपमम्॥

ये विषय विष के समान अत्यन्त भयंकर हैं जो कि सेवन करते समय ही अच्छे मालुम होते हैं। वास्तव में उन विषयों में उनर विषयों से उत्पन्न हुआ मनुष्यों का सुख खाज खुजलाने से उत्पन्न हुए सुख के समान है अर्थात् जिस प्रकार खाज खुजलाने समय तो सुख होता है परन्तु बाद में दाह पैदा होने से उल्टा दुख होने लगता है उसी प्रकार इन विषयों के सेवन करने से उस समय तो सुख होता है बाद में तृष्णा की वृद्धि होने से दुःख होने लगता है।

दग्धव्रणे यथा सान्द्रचन्दन द्रवचर्चनम्।
किंचिदाश्वासजननं तथा विषयजंसुखम्।

जिस प्रकार जले हुए घाव पर घिसे हुए गीले चन्दन का लेप कुछ थोड़ा सा आराम उत्पन्न करता है उसी प्रकार विषय सेवन करने से उत्पन्न हुआ सुख उस समय कुछ थोडा सा संतोष उत्पन्न करता है।

(आदि पुराण से)

माथा पच्ची

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों कोक्रमबद्ध बनाकर रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।

1. ओ आ त् क् य् त् ओ र आ तो
2. आ र् व् अ ए आ म् अ त् न् क् अ ए ग् ह अ चे
3. अ ओ इ आ ब् म् अ त् ल् अ ग् उ व् अ क् ई इ
4. श् ए ओ व् य् प् अ द् अ दि
5. ई ग् ओ य् आ अ त् क् अ श् आ म् न् अ ह अ

परिणाम :
अक्टूबर 2018: (1) पर्यूषण पर्व (2) अष्टान्हिका पर्व (3) दशलक्षण पर्व (4) सोलहकारण पर्व (5) रत्नत्रय पर्व

विधि कानून में रोजगार

केरियर

विधि- विधि के क्षेत्र में कैरियर प्रतिष्ठा से जुड़ा है और इससे व्यक्ति समाज के संपन्न वर्गो से मेल-जोल रख सकता हैं और अति समृद्ध जीवन शैली के लिए आवश्यक धन का अर्जन कर सकता है दूसरी तरफ सफल अधिवक्ताओं को मीडिया द्वारा भी प्रचारित किया जाता है जिससे वह अति सम्मानित सामाजिक जीवन गुजार सकता है।

अच्छे एवं प्रतिष्ठित विधि विशेषज्ञों को पर्याप्त वेतन दिया जाता है, इस क्षेत्र में व्यवसाय प्रतियोगिता पूर्ण है, लेकिन अनुभव एवं मेहनत से एक अधिवक्ता एक माह में लाखों रूपये भी आर्जिक कर सकता है।

अधिवक्ता के लिए बुद्धिमत्ता, तर्क पूर्णता एवं स्पष्ट दृष्टिकोण की आवश्यकता है, उच्च न्यायालय स्तर पर कार्य करने के लिए उत्कृष्ट वाचन कला तथा पढ़ने व लिखने के लिए उच्च-स्तरीय अंग्रेजी भाषा की जानकारी की आवश्यकता होती है, इस व्यवसाय से जुड़े लोगों में ईमानदारी व कर्मढ़ता होना आवश्यक है क्योंकि उन्हें अपने मुवक्किलों के बारे में महत्वपूर्ण सूचनाएं प्राप्त होती हैं। इसलिए उनका विवेक पूर्ण होना आवश्यक है।

यदि आप लोगों से मिलने तथा उनकी समस्याएं सुलझाने में रूचि रखते हैं तो विधि आपके लिए सर्वोत्तम कैरियर का विकल्प है।

पाठ्यक्रम एवं संस्थान- एल.एल.बी. पाठ्यक्रम दो प्रकार के है 3 वर्षीय और 5 वर्षीय 3 वर्षीय हेतु स्नातक डिग्री तथा 5 वर्षीय पाठयक्रम हेतु 10+2 मूल योग्यता आवश्यक है। इस पाठ्यक्रम में प्रायः प्रातः व सांय दोनों समय कक्षाएं आयोजित की जाती हैं।

एल.एल.बी. हेतु प्रसिद्ध विश्वविद्यालय दिल्ली, पंजाब, बनारस, पटना, चेन्नई, कोचीन एवं राजस्थान। महाराष्ट्र के अधिकांश सरकारी कॉलेजों की अच्छा माना जाता है, दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा संचालित पाठ्यक्रम सर्वोच्च है जिसमें प्रवेश परीक्षा व साक्षात्कार लिया जाता है। इसमें सामान्यज्ञान, संख्यात्मक अभियोग्यता और कानूनी अभियोग्यता पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्न पूछे जाते हैं इसमें कानून व विश्लेषणात्मक तार्किकता, राष्ट्रीय व अंतराष्ट्रीय महत्व की नवीनतम घटनाएं जो विशेष रूप से कानून पर आधारित होती हैं सामान्य विज्ञान, भारत का इतिहास, भौगोलिक, भारतीय राजनीति एवं अर्थव्यवस्था पर आधारित प्रश्न पूछे जाते हैं।

5 वर्षीय विधि पाठ्यक्रम संचालित करने वाले विश्वविद्यालय- इस पाठ्यक्रम हेतु बैंगलोर स्थित नेशनल लॉ स्कूल भारत में सर्वोच्च माना जाता है, यहाँ प्रवेश परीक्षा एवं साक्षात्कार के द्वारा प्रवेश मिलता है हायर सेकेण्डरी स्तरीय बहु विकल्पी वास्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाते है।

इस हेतु संपूर्ण भारत अन्य कई संस्थाएं पाठ्यक्रम संचालित कर रही है। जिसे इंटरनेट पर आसानी से देखा जा सकता हैं।

रोजगार संभावनाएं- विधि स्नातकों के लिए विशेषज्ञता के कई क्षेत्र हैं जैसे फौजदारी कानून, कार्पोरेट कानून, कराधान कानून, संवैधानिक कानून, प्रशासनिक कानून, श्रम एवं औद्योगिक कानून एवं अंतराष्ट्रीय कानून।

अधिवक्ता- अधिवक्ता विभिन्न क्षेत्रों में विशेषता हासिल करके अपने जीवन को ऊँचाईया पर ले जा सकता है एवं आर्कषक आय प्राप्त कर सकता हैं।

राजनीतिक सलाहकार- विभिन्न मंत्रालयों में राजनीति से जुड़े कानूनी मुद्दों पर सलाह देने के लिए विभिन्न कानूनी सलाहकार होते हैं।

व्यवसायिक घराने- व्यवसायिक घरानों में होने वाली कानूनी लड़ाईयों एवं विभिन्न घरानों को कानूनी समस्याओं को सुलझानें में अधिवक्ताओं की सेवाएं यह घराने प्राप्त करते हैं।

सरकारी वकली- प्रतिवर्ष संघ लोक सेवा आयोग द्वारा साक्षात्कार के माध्यम से सैकड़ों अधिवक्ताओं को सरकारी मंत्रालयों में भर्ती किया जाता है। यह सरकार की ओर से मुकदमें में बहस करते हैं और नियमित वेतन पर सरकारी कर्मचारी होते हैं।

■ 1 सितम्बर

- कड़वे प्रवचन देने वाले जैन मुनि तरूणसागर जी का देहावसान

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आम लोगों के दरवाजे तक बैंकिग सुविधा पहुँचाने के मकसद से इंडिया पोस्ट पेमेट्स बैंक (आई पी पी बी) की शुरुआत की।

- राजस्थान के दौसा जिले के सरायगांव में एक स्कूल बस पलट जाने से उसमें सवार 28 बच्चे घायल हो गये।

■ 2 सितम्बर

- प्रवर्तन निदेशालय (ई.डी) द्वारा कुर्क की गई मेहुल चौकसी व उसके संबधितो की 1210 करोड़ रूपये मूल्य की 41 संपत्तियों सनी लांड्रिग के जारिए ही बनाई गई है।

-सुप्रीम कोर्ट ने विवाह तलाक व अन्य मामलों के निपटारे के लिये मुस्लिमों की शरिया अदालतों के गठन को चुनौती देने वाली याचिका विचारार्थ स्वीकार कर ली।

- जकार्ता 18 वें एशियाई खेलों का समापन समारोह इंडोनेशिया की राजधानी जकार्ता में हुआ। इन खेलों में भारत ने 15 स्वर्ण 24 रजत और 30 कांस्य सहित कुल 69 पदक जीतकार 8वां स्थान हासिल किया भारत का यह प्रदर्शन अब तक एशियाई खेलों में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है। अब अगले ऐशियाई खेल चीन के ग्वागझू में आयोजित किया जायेगा।

■ 3 सितम्बर

- आई. आई. टी बॉम्बे की एक स्टडी ने देश में नमक कई ब्रांइस में माइक्रो प्लास्टिक का दावा किया है।

- ग्वालियर स्थित महाराजपुरा एयरबेस पर आए तीन लड़ाकू विमान रफाल के पायलट व इंजीनियरों ने भारतीय वायुसेना के पायलटों के सामने प्रेजेंटेशन दिया।

- ब्राजील का 200 साल पुराना राष्ट्रीय संग्रहालय जलकर खाक हो गया है।

■ 4 सितम्बर

- इस्लामाबाद - डॉ. आरिफ अल्वी को पाकिस्तान का नया राष्ट्रपति चुना गया।

- मुख्यमंत्री की जनआशीर्वाद यात्रा पर चुरहट - सीधी में हुए पथराव और चप्पल फेंकने की घटना के खिलाफ कैबिनेट ने निंदा प्रस्ताव पारित किया।

- सतना बलवा और मारपीट के मामलें में 22 साल फरार चल रहे सतना विधायक शंकर लाल तिवारी को पुलिस ने गिरफ्तार किया।

■ 5 सितम्बर

- जापान में 25 साल का सबसे भयावह तूफान जेबी से भारी तबाही मचाई है हादसों में 10 लोग की मौत की पुष्टी हो चुकी है।

- नेशनल कॉन्फ्रेंस ने जम्मू कश्मीर में पंचायत और नगर पालिका का चुनाव के बहिष्कार का फैसला किया

- कोलारस पुलिस ने बीती रात तीन लुटेरों को 22 लाख रूपये नकदी के साथ दबोच लिया।

■ 6 सितम्बर

- सुप्रीम कोर्ट की संविधान पीठ ने ऐतिहासिक फैसले में आइ पी सी की धारा 377 के उन प्रावधानों को रद्द कर दिया।

- एस.सी.एस.टी एक्ट के विरोध में स्वर्ण समाज ओबीसी वर्ग और सपाक्स के भारत का व्यापक असर रहा।

- बांग्ला टेलीविजन की अभिनेत्री पायल चक्रवर्ती 35 ने बुधवार को खुदकुशी कर ली।

■ 7 सितम्बर

- केन्द्रीय सामाजिक न्याय व अधिकारिता राज्यमंत्री रामदास अठावले ने स्वर्ण गरीबों को 25 प्रतिशत आरक्षण देने और आरक्षण की अधिकतम

सीमा बढ़ाकर 75 प्रतिशत करने की मांग की है।

- मुरैना के नेशनल हाइवे क्रमांक-3 के वन जांच नाके पर तैनात एक डिप्टी रेजर को रेत माफिया ने ट्रेक्टर से कुचलकर मार डाला।

- दिल्ली पुलिस की विशेष शाखा ने लाल किले के पास से इस्लामिक स्टेट जम्मू एंड कश्मीर (आई एस जे के) से जुड़े दो संदिग्ध आंतकियों को गिरफ्तार किया।

■ 8 सितम्बर

- नेपाल के धने जंगल में शनिवार को एक हेलिकॉप्टर दुर्घटना ग्रस्त हो गया इसमें सवार सात लोगों में से 6 की मौत हो गई।

- लॉस एंजेलिस : अमेरिकी रैपर मैक मिलर की अधिक मात्रा में ड्रग्स लेने से मौत हो गई।

- केन्द्रीय सामाजिक न्याय व अधिकारिता राज्यमंत्री रामदास अठावले ने कहा है कि स्वर्णों को भी आरक्षण का लाभ मिलना चाहिए।

■ 9 सितम्बर

- वाट्सएप के जरिए सुनवाई पर सुप्रीम कोर्ट ने कहा- यह क्या मजाक है।

- शिवपुरी जिले में खोड़ चौकी क्षेत्र के ग्राम के नवाया के मजरा ड़ोडापुर में ऐर नदी के तेज बहाव में फंसे 8 लोगों को पुलिस-प्रशासन के बचाव दल ने सुरक्षित निकाल लिया है।

- पाकिस्तान सरकार ने पूर्व वित्त मंत्री इशाक डार का राजनायिक पासपोर्ट रद्द कर दिया।

■ 10 सितम्बर

- हैदराबाद- वर्ष 2007 के हैदराबाद दोहरे बम धमाके में यहां की एक मेट्रोपोलिटन कोर्ट ने दो दोषी आतंकियों को मौत की सजा और तीसरे को उम्र कैद की सजा सुनाई।

- मुंबईः बॉम्बे हाइकोर्ट ने चर्चित सोहरा बुद्दीन फर्जी मुठभेड़ काण्ड में गुजरात के पूर्व ए.टी.एस प्रमुख डी जी वजारा व चार अन्य अफसरों को दोषमुक्त करने का फैसला कायम रखा

- स्वदेश निर्मित हल्के लड़ाकू विमान तेजस में उड़ान के दौरान हवा में ही ईंधन भरकर भारत सोमवार को ऐसी क्षमता रखने वाले चुनिंदा देशों के प्रतिष्ठित क्लब में शामिल हो गया।

■ 11 सितम्बर

- हैदराबाद- जगतियाल जिले में मंगलवार को एक बस खाई में गिर गई, इसमें 55 लोगों की मौत हो गई।

- नई दिल्ली : सुप्रीम कोट ने मध्यप्रदेश में निर्माणों पर लगी रोक हटा दी।

- आगरा : कथावाचक देवकीनन्दन ठाकुर को आगरा पुलिस ने मंगलवार को गिरफ्तार कर लिया वे एट्रोसिटी एक्ट के विरोध में रणनीति बनाने पहुँचे थे।

■ 12 सितम्बर

- लखनऊः इलाहबाद हाइकोर्ट की लखनऊ बेच ने एस.सी.एस.टी एक्ट या फिर अन्य कानून जिसमें अपराध सात वर्ष से कम सजा के योग्य हो उनमें बिना नोटिस गिरफ्तारी नहीं की जा सकती

- कृषि अर्थशास्त्री और प्रधानमंत्री आर्थिक सलाहकार परिषद के सदस्य रहे प्रो. विजय शंकार व्यास का निधन हो गया।

- नरसिहंपुरः पुलिस अभिरक्षा में एक युवक की मौत के बाद करेली थाना के प्रभारी और 5 पुलिसकर्मियों को निलंबित कर दिया।

■ 13 सितम्बर

- उत्तर प्रदेश के अलग-अलग जिलों में अज्ञात वायरस से हुए बुखार से सैकड़ो बीमार हो चुके है ।

- जम्मू एवं कश्मीर में तीन अलग-अलग मुठभेड़ों में गुरुवार को 7 आतंकवादी मारे गये जबकि 12 सुरक्षाकर्मी घायल हो गये।

- राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द ने जस्टिस रंजन गोगोई को देश का अगला प्रधान न्यायाधीश (सीजेआई) नियुक्त कर दिया।

■ 14 सितम्बर

- इन्दौर : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी शुक्रवा र को दाउदी बोहरा समाज के 53वें दाई सैयदना मुफद्दल सैफुद्दीन से मिलने इन्दौर पहुँचे।

- पन्नाः उथली हीरा खदान में एक व्यक्ति को 12 कैरेट के जैम क्वालिटी का हीरा मिला है । इसकी कीमत 50 लाख रूपये बताई गई।

- अमेरीका : तूफान ने दी दस्तक फ्लोरेंस से

डेढ़ लाख घरों की बत्ती गुल।

■ 15 सितम्बर

- बड़वानी- शहर थाना क्षेत्र के ग्राम तलून में खून से सने मिले शव के मामले में 20 हजार रूपये के लेन-देन में एक दोस्त ने दूसरे की हत्या कर दी।

- श्रीनगरः जम्मू कश्मीर के कुलगाम जिले में मुठभेड़ में लश्कर ए-तैयवा और हिजबल मुजाहिदीन के पांच आतंकी मारे गये।

- हरियाण पुलिस ने हिसा में तीन लोगों को 1.43 करोड़ रूपये के बंद हो चुके नोटो के साथ गिरफ्तार करने का दावा किया है।

■ 16 सितम्बर

- ब्रिटेन से प्रत्यर्पण के केस का सामना कर रहे फरार उद्योगपति विजय माल्या से वित्तमंत्री अरूण जेटली की मुलाकात के कॉंग्रेस नेता पी एल पुनिया के दोव को भाजना ने सिरे से खारिज कर दिया है।

- चक्रवती तूफान मांगखुत ने फिलीपींस के लुजोन द्वीप में भारी तबाही मचाई है । मूसलधार बारिश आंधी और भूस्खलन की वजह से देश में 28 लोगों की जान चली गई।

- पूर्व पेट्रोलियम मंत्री सत्यप्रकाश मालवीय का दिल्ली में निधन हो गया 84 वर्षीय मालवीय पोस्टेट कैंसर से पीड़ित थे।

■ 17 सितम्बर

- भोपालः कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी ने सोमवार को भोपाल में मेगा रोड शो कर मध्यप्रदेश में चुनावी शंखनाद किया।

- करणी सेना ने रविवार को उज्जैन में बड़ा प्रदर्शन किया प्रदर्शन में जहाँ हजारों की संख्या में लोग पहुँचे थे।

- तमिलनाडु में एक दूल्हे को उसके दोस्तों ने शादी के रूप में 5 लीटर पेट्रोल दिया।

■ 18 सितम्बर

- देश की पहली महिला आइ. ए.एस अधिकारी अन्ना रजम मल्होत्रा का मुंबई में उनके आवास पर निधन हो गया वे 91 वर्ष की थी।

- केन्द्र सरकार ने मंगलवार को 9100 करोड़ रूपये के रक्षा सौदों को मंजूरी दी।

- जर्मनी ने दुनिया की पहली हाइड्रोजन से चलने वाली ट्रेन शुरु की।

■ 19 सितम्बर

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केन्द्रीय केबिनेट ने तीन तलाक को अपराध बनाने वाले अध्यादेश को मंजूरी दे दी।

- वरिष्ठ कवि और आलोचक विष्णु खरे का निधन हो गया। वे 78 वर्ष के थे।

- दुबई : भारतीय गेंदबाजों ने एशिया कप 2018 के मैच में पाकिस्तान को निर्धारित 43.1 ओवरों में 162 रनों पर ढेर कर दिया।

■ 20 सितम्बर

- सुप्रीम कोर्ट ने मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को घोटाले मामले में बड़ी राहत दी है।

- जम्मू कश्मीर डी जी पी का कार्यभार संभाल रहे दिलबाग सिंह अभी अपने पद पर बने रहेंगे।

- मुंबई से जयपुर जा रहे जेट एयरवेज के एक विमान में विमानकर्मियों की लापरवाही के चलते उस वक्त अफरा-तफरी मच गई जब 30 यात्रियों के कान से खून निकलने लगा।

■ 21 सितम्बर

- बियतनाम के राष्ट्रपति त्रान दाई क्वांग का निधन हो गया। 61 साल के क्वांग लंबे समय से बीमार थे।

चंडीगढ़- सीबीआई की कस्टडी से भागने के मामले में जिला अदालत ने पूर्व जिला कोट के जज सुरिदर सिंह भारद्वाज को एक साल कैद की सजा सुनाई है।

- दक्षिण कश्मीर के शोपियां जिले में हिजबुल मुजाहिदीन के आंतकियों ने तीन निहत्थे पुलिसकर्मियों को उनके घर से अगवा किया और गोली मारकर हत्या कर दी।

■ 22 सितम्बर

- नई दिल्ली : रफाल सौदे पर फ्रांस के पूर्व राष्ट्रपति फ्रांसुआ ओलाद के खुलासे के बाद देश राजनीति में भूचाल आया।

- तेहरानः खुजेस्तान में शनिवार को एक सैन्य परेड पर बन्दूक धारियों के हमले में 29 लोगों की मौत हो गई।

- इफाल : संदिग्ध जनजातीय उग्रवादियों ने मणिपुर में माकु ब्रिज पर 20 ट्रकों को लूट लिया।

■ 23 सितम्बर

- फिल्म निर्माता - निर्देशक व पटकथा लेखिका कल्पना लाजमी का रविवार सुबह 64 साल की उम्र में निधन हो गया।

- जम्मू कश्मीर के पुलवामा जिले में सुरक्षाबलों के साथ मुठभेड़ में पाकिस्तानी मूल का एक आंतकी मारा गया। वह आंतकी संगठन जैश-ए-मोहम्मद के टॉप कमांडरो मेंसे एक था।

- ज्यूरिखः स्विट्जरलैंड के एक और प्रांत सेंट गैलेन ने रविवार को दो-तिहाई बहुमत से एक प्रस्ताव पास कर सार्वजनिक स्थल पर बुर्का और नकाब पहने पर पाबंदी लगा दी।

■ 24 सितम्बर

- केरल नन दुष्कर्म मामले में गिरफ्तार रोमन कैथोलिक बिशप फ्रैंको मुलक्कल को यहाँ की मजिस्ट्रेट कोर्ट ने 12 दिन की न्यायिक हिरासत में भेज दिया।

- दाउदी बोहरा मुसलमानों में प्रचलित महिलाओं की खतना प्रथा को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर अब पाँच न्यायाधीशों की संविधान पीठ विचार करेगा

- गरोठ विस के प्रथम विधायक पूर्व राज्यसभा सदस्य स्वतंत्रता संग्राम सेनानी आर. एस.एस के पूर्व प्रान्त संघ चालक विमल कुमार चौरड़िया (94) का निधन हो गया।

■ 25 सितम्बर

- सुप्रीम कोट ने कहा कि राजनीति में अपराधियों की घुसपैठ रोकने के लिए संसद को ही कानून बनाया चाहिए।

- नई दिल्ली : सांसदो और विधायकों को कार्यकाल के दौरान बकालत करने से नहीं रोका जा सकता। सुप्रीम कोर्ट ने इससे जुड़ी याचिका खारिज कर दी।

- राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द ने भारतीय क्रिकेट कप्तान विराट कोहली और विश्व चैम्पियन महिला भारोत्तोलक मीराबाई चानू राजीव गांधी खेल रत्न और 20 अन्य खिलाड़ियों को अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया।

■ 26 सितम्बर

- अयोध्या जमीन विवाद मामले में कहा कि मस्जिद में नमाज पढ़ना इस्लाम का अभिन्न अंग नहीं है।

- हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल ने कहां विदेशी गाय के दूध से उन्माद बढ़ता है।

- सुप्रीम कोर्ट ने विवहेतर संबधों को अपराध मानने से इंकार किया। लेकिन तलाक बजिव आधार माना।

■ 27 सितम्बर

- अलवरः बलातकार मामले कोर्ट ने प्रपन्नाचार्य कोशलेन्द्र फलाहारी बाबा को उम्र कैद की सजा सुनाई

-सुप्रीम कोर्ट की संविधान पीठ ने आधारकार्ड को उचित ठहराया

- सुप्रीम कोर्ट ने एस.सी.एस.टी को प्रमोशन आरक्षण को उचित ठहराया

■ 28 सितम्बर

- केरल के शबरीमाल मंदिर में महिला प्रवेश मामले में सुप्रीम कोर्ट ने हर आयु की महिलाओं को प्रवेश की अनुमति दी।

- इंडोनेशिया में भूकम्प के बाद सुनामी ने घेरा 6 फुट ऊँची लहरें उठी 5 की मौत हुई।

- कारोबारी नीरव मोदी के विरूद्ध हांगकांग में केस दर्ज हुआ।

■ 29 सितम्बर

- लखनऊः गोमतीनगर में पुलिसकर्मियों ने एपल के एरिया मैनेजर विवेक तिवारी गोली मारकर हत्या कर दी।

- संयुक्त राष्ट्र : भारत की विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने संयुक्त राष्ट्र महासभा के 73वें सत्र में पाकिस्तान को जमकर लताड़ लगाई

- कोलारसः शहर स्थिति सराफा मोहल्ले में मनोज जैन के मुँह कट्टा अड़ाकर 6 लाख की लूट हुई।

■ 30 सितम्बर

- खजुराहो : मुख्यमंत्री शिवराज सिहं चौहान ने आचार्य विद्यासागर जी महाराज के समक्ष गौ मंत्रालय स्वतंत्र बनाने की घोषण की।

- म.प्र. का 50वां जिला निवाड़ी बना

- पाकिस्तानी हैलीकाप्टर कश्मीर में 700 मीटर तक घुसा जिसमें पी ओ के प्रधानमंत्री फारूक हैदर थे।

इसे भी जानिये

खाद्य वस्तु उत्पादक देश

क्र.	फसल	उत्पादक देश
1.	चावल	चीन, भारत, इंडोनेशिया, थाईलैण्ड, म्यांमार
2.	गेहूँ	चीन, भारत, सं.रा. अमेरिका, फ्रांस, कनाड़ा, रूस, युक्रेन
3.	मक्का	सं. रा. अमेरिका, ब्राजील, चीन, भारत, पाकिस्तान, मैक्सिको
4.	तिलहन	ब्राजील, चीन, अजैण्टीना, भारत
5.	मूँगफली	चीन, भारत, सं.रा. अमेरिका, इंडोनेशिया, नारजीरिया, ब्राजील, कोरिया
6.	कपास	चीन, सं.रा. अमेरिका, भारत, पाकिस्तान, सूडान, ब्राजील
7.	जौ	रूस, कनाड़ा, जर्मनी, स्पेन
8.	जई	रूस, कनाड़ा, सं.रा. अमेरिका, आस्ट्रेलिया
9.	सोयाबीन	सं.रा. अमेरिका, ब्राजील, अजैण्टीना, चीन, भारत
10.	मोटे अनाज	सं. रा. अमेरिका, चीन, भारत, रोमानिया
11.	चाय	भारत, चीन, श्रीलंका, कीनिया, जापान, बांग्लादेश, टर्की, यूंगाड़ा, मोजाम्बिक
12.	चुकुन्दर	रूस, फ्रांस, जर्मनी, सं.रा. अमेरिका
13.	कहवा	ब्राजील, कोलम्बिया, आरवरी कोस्ट, मैक्सिको, कीनिया, क्यूबा, भारत
14.	रबड़	थाईलैण्ड, मलेशिया, इंडोनेशिया, भारत, श्रीलंका
15.	तम्बाकू	चीन, सं.रा. अमेरीका, भारत, ब्राजील, हंगरी, वुल्गारियां, क्यूबा, जिम्बाम्बे
16.	नारियल	मलेशिया, इंडोनेशिया, थाईलैण्ड, नारजीरिया, भारत
17.	सूर्यमुखी	रूस, यूक्रेन, अजैण्टीना, चीन, भारत
18.	गन्ना	भारत, ब्राजील, क्यूबा, चीन, इंडोनेशियां, दक्षिण अफ्रीका, मॉरीरांस, फीजी

दिशा बोध

बुद्धि

1. बुद्धि समस्त आकस्मिक आक्रमणों को रोकने वाला कवच है। वह ऐसा दुर्ग है, जिसे शत्रु भी घेरकर नहीं जीत सकते।
2. यह बुद्धि ही है, जो इन्द्रियों को इधर-उधर भटकने से रोकती है, उन्हें बुराई से दूर रखती है और शुभकर्म की ओर प्रेरित करती है।
3. यह बुद्धि का काम है कि हर एक बात में झूठ को सत्य से पृथक् कर दे, फिर उस बात को कहने वाला कोई भी क्यों न हो।
4. बुद्धिमान् मनुष्य जो कुछ कहता है, इस तरह से कहता है कि उसे प्रत्येक व्यक्ति समझ सके। और दूसरों के मुख से निकले हुए शब्दों के आन्तरिक भाव को भी वह शीघ्र समझ लेता है।
5. बुद्धिमान् मनुष्य सबके साथ मिलन सारी से रहता है। उसकी प्रकृति सदा एक-सी रहती है, उसकी मित्रता न तो पहले अधिक बढ़ जाती है और न एक दम घट जाती है।
6. यह भी बुद्धिमानी का एक काम है कि मनुष्य लोकरीति के अनुसार व्यवहार करे।
7. समझदार आदमी पहले से जान जाता है 'क्या होने वाला है ?' परन्तु मूर्ख आगे आने वाली बात (आपत्ति) को नहीं देख सकता।
8. संकट के स्थान में सहसा दौड़ पड़ना मूर्खता है। बुद्धिमानों का यह भी कहना है कि 'जिससे डरना चाहिए, उससे डरता ही रहे।'
9. जो दूरदर्शी आदमी हर एक विपत्ति के लिए पहले से ही सचेत रहता है, वह उस वार सेभी बचा रहेगा, जो अति भयंकर है।
10. जिसके पास बुद्धि है, उसके पास सब कुछ है, परन्तु मूर्ख के पास सब कुछ होने पर भी कुछ नहीं है। अर्थात बुद्धि की सम्पूर्ण कुशलता को प्राप्त कराने वाला साधकतम कारण है।

भगवान महावीर की योग ध्यान विद्या है दीपावली महापर्व

❊ उमेश जैन शास्त्री (ललितपुर) ❊

दीपावली किसी विशेष सम्प्रदाय का पर्व नहीं है यह पर्व तो समस्त विश्व का पर्व हैं, इस दिन हम दीप जलाते हैं और अपने घरों में प्रकाश करते हैं यह पर्व हमें यही बतलाता कि अपने हृदय में सत्य का प्रकाश करों और ज्ञान रूपी दीपक जलाओं। दीपावली भारतीय संस्कृति का प्रतीक पर्व हैं इसके पीछे अनेक महापुरुषों के जीवन एवं कार्यों की घटनाओं का अपूर्व इतिहास हैं, भगवान महावीर, भगवान राम, आदि महापुरुषों का सम्बन्ध दीपावली पर्व से हैं। दीपावली का महत्व भारतीय संस्कृति रूप में भी है यह पर्व स्वच्छता व साफ-सफाई का पर्व हैं। इस दिन लोग अपने घरों में दीपकों द्वारा प्रकाश करते हैं जो रोशनी देखने योग्य होती हैं।

दीपावली धार्मिक दृष्टिकोण से जैनधर्मानुसार जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी ने अपनी आत्मा पर विजय प्राप्त करके आत्मा के वास्तविक शुद्ध आत्म स्वरूप को प्राप्त किया था। भगवान महावीर ने मोह रूपी शत्रु को जीतने के ध्येय से उत्तम ध्यान को जयशील अस्त्र बनाया। उनके बारह वर्ष शुभोपयोग एवं धर्म में व्यतीत हुयें। अभी तक उन्होंने क्षपक पर आरोहण नहीं किया था इस श्रेणी पर आरोहण करने के पूर्व धर्म ध्यान होता हैं। केवल ज्ञान के बाद महावीर ने तीस वर्ष अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, (आवश्यकता से अधिक संग्रह न करना) आचौर्य, (चोरी न करना) एवं ब्रह्मचार्य का उपदेश दिया उनका मुख्य उपदेश था कि सभी प्राणी जीना चाहते हैं, मरना कोई नहीं चाहता जो तुम अपने लिए चाहते हो, वहीं दूसरो के लिए चाहो, बाहरी शत्रुओं से युद्ध करने से क्या लाभ, अपनी आत्मा के साथ युद्ध करों। मनुष्य जन्म से नही कर्म से ही महान बनता हैं, किसी भी प्राणी की हिंसा न करना ही ज्ञानी होने का सार हैं। किन्तु भगवान महावीर स्वामी का मानना था, कि स्वर्ग भी संसार हैं और बंधन हैं। इन्द्रियों के द्वारा जब तक सुख और दुख का अनुभव होता रहेगा, तब तक संसार रहेगा इसलिए अतिन्द्रिय सुख को प्राप्त करना होगा।उन्होंने अपनी साधना का निष्कर्म बतलाया कि शुभोपयोग और अशुभोपयोग दोनों ही बंधन हैं यदि मुक्ति चाहिए तो इन दोनों से रहित होना ही योग हैं। उनके सिद्धांत जीवन में उतार कर ही समाज एवं राष्ट्र का भला हो सकता हैं, आज उनके उपदेशों की प्रासंगिकता पहले से भी अधिक बढ़ गयी हैं। उन्हें जीवन में उतार कर ही हम सुखी हो सकते हैं।

भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण के बाद देव-इन्द्रों ने उनका निवार्णत्सव धूमधाम से मनाया। जन-जन के हृदय में जहां भगवान महावीर से वियोग होने की पीड़ा थी, वही उनके अजन्मा बन सिद्धत्व प्राप्ति का हर्ष था अतः पूजन-विधान कर हर्षोल्लास से मोक्ष कल्याणकोत्सव मनाया गया। उसी दिन संध्याकाल में गुरु गौतम गणधर को केवल ज्ञान का प्रतीक दीपक और दीप से दीप जला दीप पन्तियां, दीप मालिका सजाई गयी अतः यह दिन दीपावली महापर्व बन गया।

दीपावली के इस पर्व पर हम अपने घरों को तो जगमग करें ही, परन्तु उनके घरों में भी उजाला करना नहीं भूले जिनके घरों में किसी कारणवश अंधकार छाया हुआ हैं। यदि हम ऐसा नहीं करते हैं तो दीपावली मनाना सार्थक नहीं होगा।

आओ सीखे : जैन न्याय

असत् ख्याति विपर्यय और एक चिंतन

बौद्धदर्शन की सौत्रांतिक और माध्यमिक शाखा असत् ख्याति वाद को मानती है। उसकी मूल अवधारणा है कि 'सीप मे यह चाँदी है' इस प्रकार

जोप्रतिभासित होता है, वह ज्ञान का धर्म है, अथवा अर्थ का

वह ज्ञान का धर्म तो नहीं हो सकता है क्योंकि उसकी प्रतीति अहंकार के रुप में न होकर बाहर मैं 'यह' इस रुप सेहोती है।

तथा अर्थ का धर्म भी नहीं हो सकता है क्योंकि उसके द्वारा जो होना चाहिये वह नहीं होता है। तथा उत्तर काल में होने वाले बाधक ज्ञान से उस वस्तु रुप का अर्थ का धर्म बाधित हो जाता है।

निष्कर्ष – अतः सीप में 'यह चाँदी है' असत् ख्याति रुप सिद्ध होता है।

जैनाचार्यो नेअसत् ख्यातवाद कोअविचारित कहते हुये इस वाद के खंडन करने हेतु तर्क प्रस्तुत किये वे निम्न है–

तर्क (1) - आकाश के फूल की तरह असत् का प्रतिभास होना संभव नहीं है। क्योंकि पदार्थो का प्रतिभास होना ही उनका अस्तित्व है।

तर्क (2) - असत् ख्यातिवाद न अर्थ में वैचित्र्य मानतेऔर ज्ञान में तो तब उस वैचित्रय के निमित्त से जो अनेक प्रकार की भ्राँतियाँ होती है वो कैसे हो सकेगी ?

तर्क (3) - यदि वे कहते हैं कि ऐसे ज्ञानों में अर्थ क्रिया नहीं देखी जाती तो जैनाचार्य कहते कि कौन सा अर्थक्रियाकारित्व ऐसे ज्ञानों में नहीं पाया जाता है, ज्ञान साध्य अर्थक्रियाकारित्व नहीं पाया जाता है अथवा ज्ञेय साध्य अर्थक्रियाकारित्व नहीं पाया जाता है।

प्रथम पक्ष – सिद्ध नहीं होता है क्योंकि 'यह चाँदी है' इस कथन से तो असत् की सिद्धि नहीं होती। हाँ ! वह ज्ञान का धर्म नहीं है, यह आप कह सकतेहै, किन्तु सर्वथा असत् नहीं कह सकते हैं, क्योकिं एक वस्तु दूसरी वस्तु का काम नहीं कर सके, इससे तो असत् की सिद्धि नहीं होती है, अन्यथा घट पट का काम नहीं कर सकने पर घट भी असत् सिद्ध हो जायेगा।

दूसरा पक्ष – भी सिद्ध नहीं होता है, क्योंकि मरीचिका मैं जल का ज्ञान होने पर जल से होने वाली अर्थ क्रिया जल पीने का इच्छा तोहोती है। इस पर बौद्ध मतानुयायी पूँछ सकते हैं फिर ज्ञान को भ्रान्त क्यों कहा जाता है ? तो उस जल से स्नानादि क्रिया नहीं हो सकती है इसलिये उस भ्रांत ज्ञान कहा जा सकता है।

निष्कर्ष – अतः असत् ख्यातिवाद सिद्ध नहीं होता है।

तर्क (4) - यदि बाह्य पदार्थो को ज्ञान का विषय न माना जाये तो'सीप में यह चाँदी है' इस प्रकार यह ज्ञान होता है। जैसे यह सीप है इस प्रकार यह ज्ञान क्यों नहीं होता है। कोई नियामक तो है नहीं, यदि अविद्या वासना नियामक है तो अमुक देश आदि में ही वैसा ज्ञान क्यों होता है ? संभवतः कोई कहे यदि अविद्या का महत्व है किन्तु यह कथन ठीक नहीं है, क्योकि ऐसा मानने पर असत् अर्थ ख्यातिवाद की ही सिद्धि होती है।

निष्कर्ष – अतः आत्मख्यातिवाद समुचित नहीं है।

कहानी

गाँव उजड़ जायेगा

आसमान में तारे टिमटिमा रहे थे साथ में ही चन्द्रमा आसमान में अपनी दस्तक दे रहा था चन्द्रमा कभी बादलों की छोटी टुकड़ियों के बीच में छुप रहा था 7 अप्रेल की रात आवन के डॉक्टर की छत पर बिताना सुनिश्चित हुआ था मैं कुंभराज से चलकर आवन पहुँच चुका था गर्मी ने अपनी तस्तक दी थी सभी छत पर सोना पसन्द कर रहे थे नीचे एक चिटाई और गर्म छत का संबंध पीठ को गर्म कर रहा था । कुंभराज के युवक राजेश ने मुझसे पूछा ब्रह्मचारी जी आप क्या इसी छत पर सोयेंगे मैने राजेश बर्तन से कहा कि आज रात तो इसी छत पर ही कटेगी परन्तु राजेश ने कहा ब्रह्मचारी जी मुझे तो नहीं लगता कि आप को रात में नींद आयेगी हाँ यह अवश्य है कि आप करवटें जरूर बदलते रहेंगे राजेश ने मेरे पैर पकड़ते हुए कहा ब्रह्मचारी जी मैं आपकी कुछ सेवा कर दूँ तब मैने उससे कहा तुम भी मेरे साथ चलकर आये हो थके तो तुम भी होगें इस पर राजेश ने कहा मैने तो डॉक्टर साहब का आतिथ्य स्वीकार कर लिया है । और मुझे कोई भी थकान नहीं है बढ़िया भोजन हो गया ठण्डा भी हो गया मुझे तो आपकी चिंता है एक ही बार भोजन और एक ही बार पानी और पैदल चलना और इतना मौसम गर्म कैसे आप सहन करते होंगे मुझे तो समझ में नही आता है।

एक बात पूंछू में आपसे मैंने कहा राजेश पूँछ लो तुम तो मेरे से सब कुछ पूँछ सकते हो आज कल तो क्षुल्लक भी गाड़ी में चलते हैं और आप ब्रह्मचारी होकर भी पैदल चलते हैं समझ मैं नहीं आता की मामला क्या है मैंने कहा राजेश जिसने भी आरंभ का त्याग कर दिया है और परिग्रह का त्याग कर दिया है उसे वाहन का प्रयोग नहीं करना चाहिए चूंकि मैं दसवी प्रतिमा की साधना कर रहा हूँ एक ही बार आरंभ परिग्रह को त्याग चुका हूँ इसलिए मैं वाहन का प्रयोग नहीं करता हूँ शायद तुम्हे ज्ञात हो कि विनोवाभावे सदैव पद यात्रा करते थे। वे जैन सन्त नहीं थे न उनका आरंभ परिग्रह का त्याग था फिर भी वे अपनी स्वाधीनता को महत्व देते हुए पदयात्रा ही करते थे दूसरी बात वाहन में चलने से ईर्या समिति का पालन भी नहीं होता है बड़े छोटे जीव जन्तु मर जाते हैं अहिंसा का पहला आधार ईया समिति है इसलिए मैं अपनी स्वाधीनता कायम करने के लिए और जीव दया का पालन करने के लिए मेरी चर्या चल रही थ्ज्ञी कि इसी बीच डॉक्टर विमल जैन ने दस्तक दी वे भी आकर इच्छामी करते हुए खाली दूसरे पैर की संवाहन क्रिया शुरु कर दी हल्के-हल्के से अपना हाथ पैर पर चलाने लगे ओर थोड़ा-थोड़ा सा पैर भी दबाने लगे अच्दा रहा डॉक्टर विमल ने कहा ब्रह्मचारी जी आप आवन आये बहुत अच्छा रहा संयोग बहुत

अच्छा है अभी वाराणसी के शास्त्री जी भी नगर में विराजमान हैं वे खूब सुलझी हुई विचारधारा के हैं कि शिलान्यास किया हुआ जैन मंदिर का निर्माण शीघ्र प्रारंभ हो और भव्य निर्माण हो इसके लिए वे लोगो से चर्चा कर रहे हैं मेरा सोच यह है कि आप भी एक बार उनसे मिलकर के ही आगे विचार करें मैंने विमल जी की बात पर सहमति जता दी और तय यह हुआ कि प्रातः शास्त्री जी भेंट करके राघोगढ़ की ओर बिहार करेंगे डॉक्टर साहब और राजेश बर्तन अपने अपने स्थान के लिए प्रस्थान कर गये अब उधेड़ बुन के लिए बचा अकेला मैं रात में गर्मी का प्रभाव अधिक होने से नींद नही आ रही थी।

कर्वट बदलते-बदलते मैं उस दिन की ओर सोचने लगा जब 12 दिसम्बर सन् 1986 का प्रभात था सेठ बाबूलाल एवं बाबूलाल जी मंत्री तथा गुना राघोगढ़ कुम्भराज बीनागंज सभी जगह की समाज एकत्रित हो चुकी थी शिलान्यास विधि ब्रह्मचारी परसराम जी के नेतृत्व में हुई थी। धर्म सभा को संबोधित करते हुए परूषराम बाबाजी ने कहा था धर्म की रक्षा के लिए एवं प्रभावना के लिए चार चीजें आवश्यक होती है। 1. भूमि 2. भूमिपति 3. दानपति 4. वाकपति

जब तक एक सा स्थान बैठने के लिए नहीं होगा तब तक धर्म का श्रवण कैसे संभव होगा अतः भव्य जिनालय धर्म की रक्षा और प्रभावना के लिए अति आवश्यक है भूमिपति अर्थात राजा का संरक्षण जिस धर्म के लिए मिलता है वह धर्म सदैव उन्नति करता है जैन धर्म एक ऐसा धर्म हैं जिस धर्म के अनुयायी सम्पूर्ण भारत के राजवंश शिशु नागवंश मगधवंश मोर्यवंश रहे हैं तथा दक्षिण भारत के राजवंशों में पाण्डेय वंश पालवंश कदम्बवंश चोलवंश चालुक्य वंशाचेदी वंश राष्ट्रकूट वंश होयशल वंश गंगवंश आदि अनेक वंश रहे हैं उत्तर भारत के मध्यकाल में चन्देलवंश कलचुरी वंश प्रातिहार्य वंश परमारवंश राजपूत वंश सोलंकी वंश आदि अनेक राजवंशो ने अकेले जैन धर्म का अनुकरण नहीं किया अपितु कलापूर्ण भव्य मनोहर मंदिर मूर्तियों का निर्माण भी कराया अनेक शिलालेख लिखवाकर जैन धर्म का इतिहास संबर्धित किया।

ब्रह्मचारी का उद्बोधन सुनकर उपस्थित सभा को जैन धर्म की गरिमा का बोध हुआ आगे ब्रह्मचारी जी ने कहा दान पति लोग जब अपनी अन्याय उपार्जित चंचल लक्ष्मी का उपयोग दान देकर धर्म आयतनों के निर्माण में लगाते हैं तो आवन जैसे छोटे से गांव में भी भव्य जैन मंदिर बन जाता है आज का यह शिलान्यास एक छोटा सा बरगद का बीज है और यही बड़ा होकर विशाल वट वृक्ष बनेगा जिसकी छाया में कितने ही लोग सामायिक स्वाध्याय पूजन और धर्म ध्यान करेंगे। जिसका दशांश पुण्य दान पतियों को भी मिलेगा ब्रह्मचारी जी का प्रवचन सुनकर लोगों ने मुक्त हस्त से दान दिया जिसकी घोषण माईक पर की गई गांव के लोगों ने भी सुना शिलान्यास सम्पन्न होने के बाद विघ्न आना शुरु हो गया मुझे वह भी दिन याद आया जब राघौगढ़ की धर्मशाला में बाबूलाल मंत्री ने आकर कहा कि हम लोग आवन में जैन मंदिर नहीं बना सकते हैं क्योंकि वहाँ के ग्रामवासी जैन मंदिर का विरोध कर रहे हैं यदि उनके विरोध के बाद भी हमने जैन मंदिर बनाया तो वो हमारी आंखो के सामने मूर्तियां उठाकर ले जायेंगे और हम कुछ नहीं कर पायेंगे। फिर भी आप यदि वहाँ मंदिर बनवाते हैं तो हम लोगों को आवन गांव छोड़ना पड़ेगा बाबूलाल मंत्री जी की पूरी बात सुनकर मैंने अपनी बात कहना प्रारंभ किया मंत्री जी आप कहेंगे तो मंदिर नहीं बनेगा वहाँ

लेकिन आवन में यदि मंदिर नहीं बना तो भी आपको गांव छोड़ना पड़ेगा क्योंकि किसी भी गांव में रहना था अपनी संपत्ति संस्कृति व परिवार की सुरक्षा करने के लिए शक्ति की आवश्यकता होती है जब आपके पास शक्ति नहीं है और आप अन्याय अत्याचार सहन करने के आदि हैं तो फिर आप उस आवन गांव में कैसे रह पायेंगे।

आपकी यह बात सुनकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि तब आपने कहा यदि वे लोग हमारे सामने ही भगवान उठाकर ले जायेंगे तो और हम कुछ न हीं कर पायेंगे तो मेरा सोच यह है कि यदि वो आपकी कभी बहु बेटी भी उठाकर ले जाने लगेंगे तो आप क्या कर पायेंगे मंत्री जी शक्तिवान का कोई मित्र होता है कमजोर का नहीं जिसकी खुद की हिम्मत होती है उसे ही परमात्मा भी बदल देता है आप हिम्मत से काम लीजिए डरपोक न बने पर मेरी बात का मंत्री जी पर कितना प्रभाव पड़ा कितना नहीं पड़ा ये नही कह सकते हैं पर हाँ डॉक्टर साहब के बताये अनुसार घने अंधेरे में एक रोशनी नजर आयी ग्राम के प्रसिद्ध हनुमान मंदिर के पास विराजमान शास्त्री जी ने यह कहा कि जिस मंदिर का शिलान्यास हो जाये और निर्माण न हो पाये उसे देखने से पाप का प्रसंग आता है और एक दिन नगर के ही प्रसिद्ध संभात नागरिक लोधी दीवानसिंह के यहाँ शास्त्री जी का भोजन हेतु निमंत्रण किया गया। अपनी एमवेशडर कार से शास्त्री जी को भोजन हेतु दीवान सिंह ले जा रहे थे जब वे उस रास्ते से ले जा रहे थे जिस रास्ते से शिलान्यास किया हुआ जैन मंदिर पड़ता था तब शास्त्री जी ने कहा कि मुझे कोई और दूसरे ही रास्ते ले जाना पड़ेगा मैं इस रास्ते तो नहीं जा सकूंगा किसी और दूसरे रास्ते से चलो इस रास्ते से जो जब मैं गुजरूंगा जब यह मंदिर पूरा बन जायेगा दीवानसिंह ने कहा शास्त्री जी इस मंदिर के बनने में बहुत अड़चने हैं और पूरे गांव का विरोध है शास्त्री जी ने कहा अभी मैं ये चर्चा नही करना चाहता हूँ।

पहले भोजन करूँगा फिर मैं चर्चा करूँगा यह सब जानकारी मुझे डॉक्टर विमल जी दे गये थे जिस पर मैं आशा और निराशा के झूले में झूलना प्रारंभ कर चुका था और मेरा रात का बहुत समय आवन जिनालय के निर्वाण विषय में सोचते-सोचत बीत गया। कब मुझे नींद आ गई यह पता नहीं चला पुनः प्रभात की वेला आई ब्रम्हमूर्हूत हुआ मैं प्रतिक्रमण और सामायिक किया तथा स्वयंभू स्तोत्र का पाठ चल रहा था तभी डॉक्टर विमल जी ने दस्तक दी और कहा महाराज जी शास्त्री जी आपका इंतजार कर रहे हैं मैं अपनी पाठ क्रिया पूर्ण कर शास्त्री जी के निवास तक पहुँच गया शास्त्री से चर्चा प्रारंभ हुई उन्होंने कहा महाराज श्री आप निश्चित रहे जैन मंदिर का निर्माण उसी जगह और भव्यरूप में होगा आप निश्चित रहें मैं गांव के लोगों का यह मिथक तोड़ रहा हूँ जो किसी फितरती ने गांव के भोले भाले लोगों के बीच में डाल दिया क्योंकि समाज में फितरती स्वार्थी लोगों का बोलबाला अधिक है जिसके कारण से समाज भ्रमित हो जाती है। जब भी कोई रचनात्मक कार्य कोई समाज में होता है लीक से हटकर तो समाज सुधार का कार्य होता है उसका विरोध लोग जरूर करते हैं तथा समाज के सामने भय की स्थिति पैदा करते हैं तो भय सिर्फ काल्पनिक होते हैं इसी तरह से आवन में जैन मंदिर को लेकर यह स्थिति पैदा हुई है यहाँ कोई जैन धर्म का विरोधी नहीं है न कोई जैन धर्म का विरोध करना चाहता है अपितु राजनीति करने वालों ने यह परिस्थिति पैदा कर दी है। कोहरा जरूर छटेगा और यह सोच बदलेगा कि जैन मंदिर बनने से गांव उजड़ जायेगा मुझे शास्त्री जी की बात सुनकर पूर्ण विश्वास हुआ कि शास्त्री जी बड़े सोच के व्यक्ति है।

हिन्दी जैन साहित्य में राजुल आख्यान का विकास

❊ डॉ. गजेन्द्र कुमार जैन ❊

राजुल आख्यान का सम्बन्ध मात्र जैन परम्परा से है। अन्य परम्पराओं में इसका अभाव है। प्राकृत एवं संस्कृत की राजुल विषयक रचनाओं में राजुल का नाम राजीमती मिलता है। उत्तराध्ययनसूत्र में **सुयणु** (सुतनु) शब्द से भी राजीमती को सम्बोधित किया गया है। इसका अर्थ सामान्यतः सुन्दर शरीरवाली ग्रहण किया जाता है, किन्तु विष्णुपुराण में उग्रसेन की चार पुत्रियों में एक का नाम सुतनु भी उल्लिखित है। राजुल का सम्बन्ध नेमिकुमार और नेमिकुमार का सम्बन्ध महाभारत के प्रमुख पात्रों -बलदेव, श्रीकृष्ण आदि से रहा है। अतः राजुल-चरित्र प्राचीनता की दृष्टि से निस्संदेह महाभारतकालीन है।

राजुल आख्यान में विवाह सुख से वंचित वाग्दता राजुल के असहय विरह व वेदना क भीषण ताप की व्यथा-कथा तथा करूणाजनित संवेग से प्रेरित नेमी कुमार का मूक जीवों की हिंसा में स्वयं निमित्त न बनने देने का दृढ़ संकल्प है। राजुल जूनागढ़ के राजा की पुत्री एवं नेमिनाथ (जैनधर्म के बाईसवें तीर्थंकर) की वाग्दत्ता थी। इस राजुल को पत्नी होने का सौभाग्य न मिल पाना ही उसकी व्यथा और कथा का स्रोत है। इस कथानक को आधार बनाकर प्राकृत, संस्कृत से लेकर हिन्दी साहित्य तक शताधिक ग्रन्थों की रचनाएँ प्राप्त होती है।

राजुल आख्यान के प्रारम्भिक सूत्र प्राकृत साहित्य में प्राप्त होते हैं। प्राकृत आगमों में यद्यपि परवर्ती साहित्य की तरह व्यवस्थित रूप कही नहीं है, तथापि उपलब्ध सामग्री के आधार पर नेमिनाथ का धर्मतीर्थ-प्रवर्तन करने वाला तीर्थंकर रूप हमारे सामने स्पष्ट होता है तथा राजुल का तेजस्विनी एवं स्थितिकरण अंग को पालने वाली साध्वी का रूप देखने को मिलता है।

प्राकृत के ग्रंथलेखकों की दृष्टि में राजुल का सांसारिक जीवन महत्वपूर्ण नहीं है। बल्कि तीर्थंकर नेमिनाथ को केन्द्रीय पात्र बनाकर कथा सूत्रों का विकास किया गया है। राजुल आख्यान को जीवन की दृष्टि से प्रमुखता परवर्ती संस्कृत, अपभ्रंश व हिन्दी रचनाओं में मिलती है। कथा की रचना और कथा सूत्रों के परवर्ती विकास की दृष्टि से वाग्भट कृत नेमिनिर्वाणम् विक्रम कृत **नेमिदूतम्** तथा मेरूतुंग कृत **जैनमेघदूतम्** महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं। इन रचनाओं में नेमि और राजूल दोनों ही महत्वपूर्ण पात्र हैं। केन्द्रीय पात्र की दृष्टि से राजुल को प्रस्तुत किया गया हे तथा पहली बार राजुल को विरह-विदग्ध नायिका के लौकिक धरातल पर प्रस्तुत किया है।

हिन्दी में राजुल आख्यान काव्यों की परम्परा 13वीं शती से प्रारम्भ हुई। 15वीं से 17वीं शताब्दी के मध्य रचनाएँ लिख गई। रचनाएँ बाद में भी लिखी गई, किन्तु गुणवत्ता और विधा वैविध्य की दृष्टि से भक्तिकालीन रचनाएँ अधिक महत्वपूर्ण हैं। मध्यकाल में जब समग्र उत्तर भारत राम व कृष्ण की भक्ति के प्रति समर्पित था तब जैन कवि राजुल-नेमि को आधार बनाकर उसी तरह की भक्ति एवं श्रृंगारपरक पदों की रचना करने लगे जिस तरह सूरदास व मीरा के पद रचे गये। ये समग्र रचनाएँ राजस्थान, गुजरात, दिल्ली, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, बिहार के विविध ग्रन्थागारों में उपलब्ध हैं।

जैनागम काल से आधुनिक युग तक राजुल का चरित्र निरन्तर विकसित होता आया है। आगम ग्रन्थों एवं संस्कृत के आदिकालीन राजुल विषयक रचनाओं में राजुल मूक दृष्टिगोचर होती है, जबकि नेमिनिर्वाणम् में वह अपनी थोड़ी भावनाएँ भी अभिव्यक्त करती हुई दिखायी पड़ती है। यहाँ वर्णित है नेमि का स्मरण कर-करके कमोद्रेक के कारण वह मूर्च्छित हो जाती है। उसकी मूर्च्छना

विविध प्रकार के शोतलोपचारों के प्रयोग से भी दूर नहीं हो पाती है। सखियों द्वारा प्रेमपूर्वक समझाने पर भी वह सुनयना मात्र हुंकार में ही उत्तर देती है। नेमिदूतम और जैन मेघदूतम तक आते-आते वह और अधिक मुखर होती हुई नेमिकुमार से घर लौटने का आग्रह तक करने लगती है। राजुल की यह मुखरता लम्बी अवधि में स्त्रियों में हुए भावनात्मक अभिव्यक्ति के विकास के कारण आई है, जो हिन्दी रचनाओं में अत्यधिक दिखलायी पड़ती है। राजुल की क्रमशः निरन्तर विकसित होती हुई यह मुखरता ही उसके चारित्रिक विकास का द्योतक है।

भक्तिकालीन जैन संतों की राजुल भावपूर्ण आत्मनिवेदन में एक बार लौटने का आग्रह करती है, वह सदैव रोती नहीं रहती, अपितु नेमिकुमार को लौटाने के उपाय करती है, पिता से तर्क करती है, वह विभिन्न माध्यमों, स्थितियों में अपना पक्ष प्रस्तुत करने का प्रयत्न करती है। भूधरदास तक पहुंचकर वह जैन शास्त्रों से तर्क देने लगती है। जैन परम्परा के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव का कच्छ सुकच्छ कुमारी से विवाह और बाद में दीक्षा राजुल को अपने पक्ष की समर्थ युक्ति लगती है।

उत्तरकालीन हिन्दी रचनाओं में इस प्रकार की तर्क प्रवणता से राजुल के मानवीय व्यक्तित्व की क्षति भी हुई। राजुल को विरह-पीड़ा के समाधान जैन दार्शनिक युक्तियों में मिलने लगे। वे नेमिनाथ की केवलज्ञानी मूरत पर न्यौछावर होने लगी। नेमिकुमार प्रिय की अपेक्षा प्रभुरूप में परिवर्तित होते गए। प्रभुरूप भक्तिकालीन राजुल साहित्य में भी था, किन्तु उसमें राजुल के मनोभावों का चित्रण को प्रमुखता प्राप्त थी। दीक्षा-पूर्व की राजुल के चरित्र का विस्तार अधिक था, जबकि परवर्ती राजुल द्यानतराय के यहां गाने लगी- अब हम प्रभु नेमि जी की शरण बखतराम की राजुल मिलने की अपेक्षा अपने को तारने की कामना करती है- हमकु हूं तारोगे करूणाकर भगवान दौलतराम के नेमकुमार मार मार तप धार जार विधि, केवल ऋद्धि लही देवत्व रूप में सामने आते हैं। उधर बीसवीं सदी के छत्रसाल की राजुल तपस्वी नेमकुमार को देख परम शान्ति अनुभव करने लगी। मानवोचित पीड़ापूर्ण आत्मनिवेदन भक्त की टेर में रूपांतरित हो गया।

राजुल विषयक आख्यान वस्तुतः राजुल-विरह-पीड़ा का ही आख्यान है। राजुल के जीवन-चित्रण में उसकी विरह-पीड़ा का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। राजुल विषयक बारहमासा काव्यों के प्रत्येक शब्द से विरह-व्यथा छिपी हुई है और रचनाकार परिणय की आशा लगाये विरही नवयौवना के विरह का सजीव चित्र उपस्थित करता है। राजुल को प्रत्येक महीने में विरह-वेदना सताती है। नेमि के बिना विरह-पीड़ा को सहन करने में स्वयं राजुल असमर्थ है।

विरह-व्यथा से पीड़ित राजुल की कथा सामान्यतया पौराणिक स्रोत से निसृत कथात्मक संदर्भ प्रतीत होती है, किन्तु रचनाकारों की विवेकपूर्ण दृष्टि से एक नवीन आयाम भी इसमें जुड़ गया है, और यह है- स्त्री की सामाजिक स्थिति के प्रति रचनाकारों के सूक्ष्म चिन्तन का संदर्भ। राजुल की विरह-व्यथा सामाजिक परिस्थितिके व्यापक संदर्भ में जुड़कर समसामायिक सामाजिक चेतना की भी अभिव्यक्ति बन गयी है।

विवेच्य काव्यों में यो तो सभी रस यथा स्थल व्यंजित हुए हैं, किन्तु प्रधानता शांत रस की ही रही है। प्रायः सभी काव्यों का अवसान शांत रस में हुआ है। इतना होते हुए भी श्रृंगार रस के भावपूर्ण एवं मार्मिक स्थल यथास्थान देखने को मिल जाते हैं। संयोग के चित्रों में रूपवर्णन की ही प्रधानता रही है। विप्रलंभ के चित्र बड़े मर्मस्पर्शी और हृदय को गद्‌गद् करने वाले हैं। श्रृंगार की आंगिक चेष्टाएँ एवं मांसल वर्णनों से जैन भक्त कवि दूर रहे हैं। प्रकृति का कोई भी अंग जैन कवियों की पैनी दृष्टि से नहीं बच सका है। प्रकृति के रम्य चित्र प्रस्तुत करने में इन कवियों ने अपनी पूरी प्रतिभा का परिचय दिया

है। प्रकृति के विविध रूप-आलम्बन, उद्दीपन, आलंकारिक संदेश एवं मानवीकृत चित्रों को अपनी लेखनी की रंग विरंगी तूलिका से सजाया है।

राजुल विषयक काव्यों का भाषा के विकासात्मक अध्ययन की दृष्टि से विशेष महत्व है। राजस्थानी और ब्रजभाषा का मूल रूप इन काव्यों में सुरक्षित है। भाषा के क्षेत्र में ही नहीं अपितु छन्द और संगीत के क्षेत्र में भी सहजता देखने को मिलती है। शास्त्रीय छन्दों के अतिरिक्त जैन कवियों ने लोक रूचि को ध्यान में रखकर कुछ नये छन्द भी निर्मित किये हैं। संगीत में विभिन्न लोक शैलियों का अपनाया है। काव्यों की ढालों में भी अनेक प्रकार की लोक शैलियों का प्रयोग किया गया है।

मध्यकालीन कवियों ने आचार्यों द्वारा प्रतिपादित काव्य-रूपों के निर्माण के साथ-साथ प्रचलित काव्य रूपों को नयी भावभूमि और मौलिक अर्थवत्ता प्रदान की है। राजुल को केन्द्रिय पात्र बनाकर जिन रचनाओं की शुरुआत होती है वे हिन्दी साहित्य में बेलि, चउपई, बारहमासा, रास, फागु, व्याहुलों, बसंत, मंगल, हिंडोलना, संवाद, लूहरि, दूतकाव्य, धमाल, चूनरी, सज्झाय, विनती, हमची, उरगानौ, पच्चीसी, बत्तीसी, छत्तीसी, शतक संज्ञक आदि विभिन्न काव्य की विधाओं के रूप में विस्तीर्ण परिलक्षित होती है। जैन कवियों के रासो या रास काव्य यहां केवल युद्धपरक वीर काव्य का व्यंजक न रहकर प्रेमपरक गेय काव्य के रूप में व्यंजित हुए हैं। बारहमासा काव्यों में विरह-वेदना प्रणाली को आध्यात्मिक रूप देकर इसे श्रृंगार के क्षेत्र से निकालकर भक्ति, नीति ओर वैराग्य के क्षेत्र में प्रवाहित किया है। लूहरि भी बारहमासा की भांति ऋतु काव्य है। अधिकांश विवाहलो या मंगल काव्य विवाह-संस्कार प्रधान काव्य हैं। हिन्दी काव्यों में नायक का किसी लौकिक स्त्री से विवाह ने दिखाकर संयम श्री और दीक्षा कुमारी जैसी अमूर्तभावनाओं से विवाह कराया गया है। चूनडी संज्ञक रचनाओं में रंग विरंगी चूनड़ी में भी आत्यात्मिकता का पुट दिया गया है। जैन कवियों द्वारा रचे गये फागु काव्यों में बसंत-वर्णन प्रमुख है। धार्मिक निरूपण और संयमश्री में इनका पर्यवसान हुआ है।

काव्य रूपों की यह परम्परा शतधिक परिमाण में प्रकाशित व अप्रकाशित पाण्डुलिपियों के रूप में राजस्थान व अन्य हिन्दी प्रांतों के ग्रंथागारों में उपलब्ध हैं। डॉ. सुमन राजे का शोध **काव्य-रूप संरचना उदभव और विकास** तथा अगरचन्द्र नाहटा के शोध नवीन काव्य-रूपों के अध्ययन की दृष्टि से महत्पूर्ण हैं।

राजुल विषयक रचनाओं में सम-सामयिक लोक-जीवन, आस्था, विश्वास रीति-रिवाज आदि के स्पष्ट चित्र हैं। पूर्व मध्यकालीन हिन्दी जैन साहित्य में भोग-विलास के चित्र भी है। तो उत्तर मध्यकालीन साहित्य में वर्णित पात्र भी आनन्द और समृद्धि का जीवन व्यतीत करते हैं। मुनिवर्गीय पात्र संयमित जीवन व्यतीत करते थे, जबकि श्रावक भोग-विलास का जीवन व्यतीत करते हुए भी अन्ततः उससे अतृप्त होकर शास्वत सुख की प्राप्ति हेतु अपरिग्रह मार्ग को अपनाते हुए चित्रित किये गये हैं। वासुदेव, बलदेव, पाण्डव, समुद्रविजयादि भौतिक सुखों से सम्पन्न होने पर भी अन्ततः तपस्या का ही आश्रय ग्रहण करते हैं। नेमिनाथ और राजुल भी भौतिक विभूति को त्यागकर वैराग्य का अवलम्बर लेते हैं। इस प्रकार जैन रचनाकारों द्वारा चित्रित समाज भोग और त्याग का संगम स्थल रहा है।

हिन्दी साहित्य की सीता, राधा, पार्वती, उर्मिला, यशोधरा और दमयन्ती आदि आदर्श नारी पात्र त्याग, तपस्या, स्वाभिमान, साहस, ममत्व और पातिव्रत्य धर्म के कारण समाज में जिस सम्मानीय स्थान पर प्रतिष्ठित हुई हैं, राजुल का चरित्र भी त्याग सतीत्व एवं पातिव्रत्य धर्म के कारण उक्त नारी पात्रों से कम महनीय नहीं है। वाग्दत्ता के रूप में राजीमति का त्याग भारतीय साहित्य में अपना एक अलग स्थान रखता है। निःसंदेह राजुल के अनूठे चरित्र और उसकी काव्यात्मक अभिव्यक्ति हिन्दी साहित्य की अमूल्य और चिरन्तन थाती है।

आचार्य श्री वीरसेन स्वामी का अवदान

❊ डॉ. कमलकुमार जैन (पुणे) ❊

नवीं शताब्दी के प्रमुख सिद्धान्वेत्ता, षट्खण्डागम टीकाकार आचार्य श्री वीरसेन पंचस्तूपान्वय के प्रसिद्ध विद्वान भट्टारक थे। यह पंचस्तूपान्वय बाद में सेनान्वय अथवा सेन-संघ के नाम से प्रसिद्ध है। उनके विद्या-गुरु एलाचार्य तथा दीक्षा-गुरु आर्यनन्दि एवं दादा गुरु चन्द्रसेन थे। आचार्य वीरसेन गणित, ज्योतिष, व्याकरण, न्याय (प्रमाण) इत्यादि शास्त्रों के कुशल विद्वान थे। आचार्य जिनसेन ने आदिपुराण में अपने गुरु वीरसेन की स्तुति की है और उनको भट्टारक-पद से विभूषित किया है। उन्हें वादि-वृन्दारक मुनि, लोकविज्ञ, कवित्व-शक्ति तथा वाचस्पति के समान वाग्मिता की प्रशंसा करते हुए उन्हें, सिद्धान्तो-पनिबन्धकर्त्ता कहा है तथा उनके द्वारा रचित धवला टीका भारती को भुवनव्यापनी कहा है।

आचार्य वीरसेन ने षट्खंडागम पर 72 हजार श्लोकप्रमाण प्राकृत और संस्कृत मिश्रित धवला टीका लिखी।तथा कषायप्राभृत की चार विभक्तियों पर 20 हजार श्लोकप्रमाण जयधवला टीका की रचना की है। आचार्य श्री वीरसेन की अन्य कोई रचना प्राप्त नहीं होती। उनके शिष्य आचार्य जिनसेन ने उन्हें जिन 7 विशेषणों से विभूषित किया है उन सबके प्रमाण उनकी धवला एवं जयधवला टीका में बहुलता से प्राप्त होते हैं। उनकी सूक्ष्म मार्मिक-बुद्धि, अपार पाण्डित्य, तथा विशाल स्मरण शक्ति उनकी रचनाओं में जगह-जगह झलकती है।

धवला एवं जयधवला टीका में अनेक ग्रन्थों और ग्रन्थकारों का भी उल्लेख किया गया है। और अनेक प्राचीन ग्रन्थों के उद्धरणों से टीका को पुष्ट किया गया है। इससे आचार्य वीरसेन के बहुश्रुत विद्वान होने के प्रमाण मिलते हैं।

षट्खंडागम के प्रथम पांच खंडों की टीका बहुत ही महत्वपूर्ण है। टीका होते हुए भी यह एक स्वतन्त्र सिद्धांत ग्रंथ है। परन्तु विषय विवेचन की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इसमें तत्त्वों का विवेचन प्रश्नोत्तर शैली में अनेक प्राचीन ग्रन्थों के उद्धरण लेकर प्रस्तुत कर विषय को पुष्ट करने की उनकी अपनी विशेषता रही है। दक्षिण प्रतिपत्ति और उत्त प्रतिपत्ति के द्वारा विभिन्न सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया है। उन्होंने टीका के माध्यम से न केवल सूत्रों का अर्थ बताया, बल्कि कर्म-सिद्धान्त का विस्तृत व्याख्यान किया है। प्रसंगानुरुप दर्शन-शास्त्र की मौलिक मान्यताओं का भी समावेश निहित किया है। उनके योगदान को एक निबंध या एक पुस्तक में विवेचन करना संभव नहीं है, परन्तु संक्षेप में उनके योगदान को निम्न प्रकार प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है -

सम्यक्त्वोन्मुख जीव के परिणामों की बढ़ती हुई विशुद्धि और उसके द्वारा शुभ प्रकृतियों का बन्धविच्छेद, सत्वविच्छेद और उदय विच्छेद इत्यादि कथन के द्वारा सम्यग्दर्शन का स्वरूप स्पष्ट किया है। जीव के सम्यक्त्वोन्मुखी होने पर बंधयोग्य कर्म प्रकृतियों का निरूपण किया है।

प्रथमोपशम सम्यक्त्व की प्राप्ति का विधान- इस चूलिका के प्रारंभ में सूत्रकार द्वारा प्रथम दो (5-7) चूलिकाओं मे कर्मों की उत्कृष्ट एवं जघन्य स्थिति का विवेचन किया गया है। उतने काल की स्थिति वाले कर्मों के रहते हुए जीव सम्यक्त्व को प्राप्त नहीं करता। इसके अभिप्राय को स्पष्ट करते हुए वीरसेन स्वामी कहते हैं कि यह देशामर्षक है। तदनुसार कर्मों के जघन्य-स्थितिबन्ध और उत्कृष्ट स्थितिबन्ध के साथ उनके जघन्य व उत्कृष्ट स्थिति-सत्व, जघन्य व उत्कृष्ट अनुभाव-सत्व और जघन्य व उत्कृष्ट प्रदेश-सत्व के होने पर जीव सम्यक्त्व को प्राप्त नहीं करता।

इस पर प्रश्न उपस्थित होता है कि इस स्थिति में कर्मों की कैसी अवस्था में जीव सम्यक्त्व को प्राप्त करता है। इसके उत्तर में कहा गया है (सूत्र 1.9.8.3) कि जीव जब इन्हीं सब कर्मों की अन्तः कोडाकोडी प्रमाण स्थिति को बांधता है तब वह प्रथम सम्यक्त्व को प्राप्त कर लेता है। इस सूत्र की व्याख्या करते हुए धवलाकार ने लिखा है कि यह औपचारिक कथन है। वस्तुतः कर्मों की इस स्थिति में भी जीव प्रथम सम्यक्त्व प्राप्त नहीं करता, वह तो अधः प्रवृत्तकरण आदि तीन करणों के अन्तिम समय में सम्यक्त्व को प्राप्त करता है। इस सूत्र के द्वारा क्षयोपशम, विशुद्धि, देशना और प्रयोग्य इन चार लब्धियों का विवेचन किया गया है। आगे धवला में इन लब्धियों का स्वरूप बतलाते हुए कहा है कि विशुद्धि के बल से जब पूर्वसंचित कर्मों के अनुभागस्पर्धक प्रतिसमय अनन्तगुणितहीन होकर उदीरणा को प्राप्त होते हैं तब क्षयोपशमलब्धि होती है। उत्तरोत्तर प्रतिसमयहीन होने वाली अनन्तगुणी हानि के क्रम से उदीरणा को प्राप्त उन अनुभागस्पर्धकों से उत्पन्न जीव का जो परिणाम सातावेदनीय शुभकर्मों के बन्ध का कारण और असातावेदनीय अशुभकर्मों के बन्ध का रोधक होता है उसका नाम विशुद्धि है और उसकी प्राप्ति को विशुद्धिलब्धि कहा जाता है। 6 द्रव्य एवं 9 पदार्थों के उपदेश का नाम देशना है। इस देशना और उसमें परिणत आचार्य आदि की उपलब्धि के साथ जो उपदिष्ट अर्थ के ग्रहण, धारण एवं विचार करने की शक्ति का समागम होता है उसे देशनालब्धि कहते हैं । समस्त कर्मों की उत्कृष्ट स्थिति और उत्कृष्ट अनुभाग का घात करके उनका जो अन्तः कोड़ाकोड़ी प्रमाण स्थिति में और द्विस्थानिक अनुभाग में अवस्थान होता है, उसे प्रयोग्यलब्धि कहते हैं।

ये चारों लब्धियाँ भव्य एवं अभव्य मिथ्यादृष्टि दोनों के समान रूप से संभव हैं। किन्तु 5 वी करणलब्धि भव्य मिथ्यादृष्टि के ही संभव है, वह अभव्य के संभव नहीं है। (ध. 6.203.5)

गणितीय कुशलता-

1. गणित शास्त्र के वृत्त, व्यास, परिधि, सूचीव्यास, धन, अद्धच्छेद घातांक, वलय व्यास और चाप आदि गणित की अनेक प्रक्रियाओं का महत्त्वपूर्ण विवेचन। गणनकृति नोकृति, अवक्तव्यकृति और कृति के भेद से तीन भेदरूप अथवा कृतिगत संख्यात, असंख्यात व अनंत भेदों से अनेक प्रकार भी हैं। इनमें से एक संख्या नोकृति दो संख्या अवक्तव्यकृति और तीन को आदि लेकर संख्यात, असंख्यात व अनन्त तक संख्या कृति कहलाती है। संकलना, वर्ग, वर्गावर्ग, धन व धनाधन राशियों की उत्पत्ति में निमित्तभूत गुणकार, कलासवर्ण तक भेद प्रकीर्णक जातियाँ, त्रैराशिक व पंचराशिक इत्यादि सब धन-गणित है । व्युत्कलना व भागहार आदि ऋण-गणित कहलाते हैं । गति-निवृत्तिगणित और कुट्टिकार आदि धन-ऋण -गणित के अन्तर्गत आते हैं । यहाँ कृति , नोकृति और अवक्तव्यकृति के उदाहरणार्थ ओघानुगम, प्रथमानुगम, चरणानुगम और संचयानुगम ये चार अनुयोगद्धार कहे गये हैं । इनमें संचयानुगम की व्याख्या सत्-संख्या आदि आठ अनुयोगद्वारों के माध्यम से की गई है। (पु. 9.276 से 288 इत्यादि) इन सब गणितीय प्रक्रियाओं की पुष्टि के लिए आचार्य ने कम से कम 50 अन्य ग्रंथों के उद्धारणों के पुष्ट किया है। आचार्य वीरसेन द्वारा गणित भाग को कितना स्पष्ट किया गया है एवं उस गणित का कितना महत्व रहा है, इसके लिए धवला पुस्तक 5 की प्रस्तावना में पृ. 1-28 डॉ. अवधेशनारायण सिंह का लेख पठनीय है।

2. आचार्य वीरसेन जिस प्रकार सिद्धान्त के पारगामी रहे हैं उसी प्रकार वे माने हुए गणितज्ञ भी रहे हैं। यह भी उनका धवला टीका से ही प्रमाणित होता है। उदाहरण के रूप में यहाँ कृति अनुयोगद्वार को लिया जा सकता है। वहाँ कृति के नाम कृति आदि सात भेदों के अन्तर्गत चौथी गणना कृति के प्रसंग में सूत्र 66 को देशामर्शक बतलाकर धवला में धन, ऋण और धन-ऋण गणित सबको

प्ररूपणीय कहा गया है। तदनुसार आगे उन तीनों स्वरूप को प्रकट करते हुए संकलना, वर्ग, वर्गावर्ग, धन, धनाधन, कलासवर्ण, त्रैराशिक, पंचराशिक, व्युत्कलना, भागहार, क्षयक और कुट्टाकार आदि का उल्लेख करते हुए उन तीनों को यहाँ वर्णनीय कहा गया है।

प्रकारान्तर से यहाँ अथवा कहकर यह निर्देश किया गया है कि कृति यह उपलक्षण है, अतः यहाँ गणना, संख्यात और कृति का लक्षण भी कहना चाहिए। तदनुसार एक को आदि लेकर उत्कृष्ट अनन्त तक गणना, दो को आदि लेकर उत्कृष्ट अनन्त तक संख्येय और तीन को आदि लेकर उत्कृष्ट अनन्त तक कृति कहा गया है। आगे वुत्त च कहकर प्रमाण के रूप में यह गाथा उदधृत की है-

तत्पश्चात् यहाँ कृति, नोकृति और अवक्तव्य-कृति इनके उदाहरणों के लिए यह प्ररूपणा की जाती है ऐसी प्रतिज्ञा करके उसकी प्ररूपणा में ओघानुगम, प्रथमानुगम, चरमानुगम और संचयानुगम इन चार अनुयोगद्धारों को निर्देश किया गया है। उनमें ओघानुगम के मूलओघानुगम और आदेश ओघानुगम इन दो भेदों का निर्देश और उनके स्वरूप को स्पष्ट किया गया है। पश्चात प्रसंगप्राप्त चौथे संचयानुगम के विषय में सत्प्ररूपणा व द्रव्यप्रमाणानुगम आदि आठ अनुयोगद्वारों का निर्देश करते हुए यथाक्रम से उनके आश्रय से संचानुगम की विस्तारपूर्वक व्याख्या की है। (ध. पु. 9, पृ. 276-321)

इसके पूर्व जीवस्थान खण्ड के अन्तर्गत आठ अनुयोगद्वारों में जो दूसरा द्रव्यप्रमाणानुगम अनुयोगद्वार है वह पूरी ही गणित से सम्बद्ध है। उस के अन्तर्गत सूत्रों की व्याख्या दुरूह गणित प्रक्रिया के आश्रय से ही की गई। उदाहरणस्वरूप, वहाँ मिथ्यादृष्टि जीवराशि की प्ररूपणा द्रव्य, काल, क्षेत्र और भाव की अपेक्षा विस्तार से की गई है। भाव की अपेक्षा उसकी प्ररूपणा करते हुए धवलाकार कहते हैं कि मिथ्यादृष्टि राशि के प्रमाण के विषय में श्रोताओं को निश्चय उत्पन्न कराने के लिए हम मिथ्यादृष्टि राशि के प्रमाण की प्ररूपणा वर्गस्थान में खण्डित, भाजित, विरलित, अवहित, प्रमाण, कारण और निरूक्ति इन विकल्पों के आधार से समाधान में उन्होंने कहा है कि वह सूत्र से सूचित है। (धवला पु. 3, पृ. 40)

आगे कृतप्रतिज्ञा के अनुसार वीरसेनाचार्य ने धवला में यथाक्रम से उन खण्डित-भाजित आदि विकल्पों के आश्रय से मिथ्यादृष्टि राशि के प्रमाण को दिखाया है। (धवला पु. 3, पृ.40-66)

इससे सिद्ध है कि आचार्य, वीरसेन गणित के अधिकारी विद्वान रहे हैं , क्योंकि गणित विषयक गम्भीर ज्ञान के बिना उक्त प्रकार से विशद प्ररूपणा करना सम्भव नहीं है। उन्होंने गणित से सम्बद्ध अनेक विषयों को स्पष्ट करते हुए प्रसंगानुसार जिन विविध करणसूत्रों व गाथाओं आदि का उदधृत किया है उनकी अनुक्रमाणिका यहाँ दी जाती है-

लोक स्वरूप संबंधी मान्यता

लोक के स्वरूप विवचन में नये दृष्टिकोण को स्थापित किया है। अपने समय तक प्रचलित वर्तुलाकार लोक की प्रमाण प्ररूपणा करके उस मान्यता का खंडन किया है। क्योंकि इस प्रक्रिया से सात राजु धन प्रमाण-क्षेत्र प्राप्त नहीं होता। अतएव उस आयतचतुरस्त्राकार होने की स्थापना की है और स्वयंभूरमण समुद्र की बाह्यवेदिका से परे भी असंख्यात योजन विस्तृत पृथ्वी का अस्तित्व सिद्ध किया है।

मुह-तलसमास-अद्धं वुस्सेधमुणं गुणं च वेधेसण।
धनगणिदं जाणेज्जो वेत्तासणसंठियो खेत्ते।।
मूलं मज्झेण गुणं मुहसहिदद्धमुस्सेहधक्कदिगुणिदं।
धणगणिदं जाणेज्जो मुइंगयंठाणघेत्तम्हि।। (ध. 4.20-21 इ.)

मुख भाग और तलभाग के प्रमाण को जोड़कर आधा करो, पुनः उसे उत्सेध से गुणा करो, पुनः मोटाई से गुणा करो। ऐसा करने पर वेत्रासन आकार से स्थित अधोलोकरूप क्षेत्र का धनफल जानना

चाहिए।

मूल के प्रमाण को मध्य से प्रमाण से गुणा करो, पुनः मुखसहित अर्ध भाग को उत्सेध की कृति अर्थात् वर्ग से गुणा करो। ऐसा करने पर मृदंग के आकार वाले क्षेत्र में प्राप्त धनफल जानना चाहिए।

ऐसा उन्होंने मूलसूत्रों की प्रामाणिकता को सुरक्षित रखते हुए वीरसेनाचार्य ने उन सूत्रों पर आधारित युक्ति के बल से कद पूर्वाचार्यों के मत के अलग होने पर भी मुहूर्त से अधिक (असंख्यात आवली प्रमाण) अन्तमुर्हूत को, आयत चतुरस्र लोक को और स्वयंभूरमण-समुद्र के बाह्य भाग में तत्प्रायोग्य राजू के संख्यात अर्धच्छेदों को सिद्ध किया है।

सिद्धान्तपारिगामिता-

उन्होंने अपनी इस धवला टीका में अनेक सैद्धान्वित गूढ विषयों का विश्लेषण कर उन्हें विशद व विकसित किया है। यह उनकी सिद्धान्तविषयक कुशलता का प्रमाण है। इसकी पुष्टि में यहाँ कुछ उदाहरण दिये जाते हैं।

1. आचार्य वीरसेन ने सत्प्ररूपणासूत्रों की व्याख्या को समाप्त करके उनके विवरणस्वरूप 1. गुणस्थान, 2. जीवसमास, 3. पर्याप्ति, 4. प्राण, 5. संज्ञा, 6-19 गति-इन्द्रियादि चौदह गार्मणाएँ और 20 उपयोग इन बीस प्ररूपणाओं से वर्णन किया है।

2. जीवस्थान-चूलिका के अन्तर्गत सम्यक्त्वोत्पति नाम की 8 वीं चूलिका में सूत्र 14 को देशामर्शक बतलाकर धवलाकार ने यह स्पष्ट किया है कि वह एक देश का प्ररूपक होकर अपने में गर्भित समस्त अर्थ का सूचक है। इतना स्पष्ट करते हुए आगे वहाँ धवला से संयमा-संयम व संयम की प्राप्ति आदि के विधाने की विस्तार से प्ररूपणा की गई है। (ध. पु. 6, पृ3 270-342)

इसी चूलिका में आगे वहाँ सूत्र 15-16 को भी देशामर्शक प्रकट करके उनके सूचित अर्थ की प्ररूपणा धवला में बहुत विस्तार से की गई है। अन्त में यह स्पष्ट किया गया है कि इस प्रकार दो सूत्रों से सूचित अर्थ की प्ररूपणा करने पर सम्पूर्ण चारित्र की प्राप्ति का विधान प्ररूपित होता है। इस प्रकार से धवलाकार ने इस आठवीं चूलिका को महती चूलिका कहा है। (ध. पु. 6. पृ. 343-418) यहाँ ये दो उदाहरण दिये गये हैं। वैसे तो धवला में बीसों सूत्रों को देशामर्शक बतलाकर उनमें गर्भित अर्थ की विस्तार से व्याख्या की गई है। वस्तुतः आचार्य वीरसेन के सैद्धान्तिक ज्ञान के महत्व को शब्दों में प्रकट नहीं किया जा सकता है।

ज्योतिष - ज्ञाता

ज्योतिष और निमित्त-सम्बन्धी प्राचीन मान्यताओं का विवेचन करते हुए नक्षत्रों के नाम, गुण, स्वभाव, ऋतु, अयन और पक्ष आदि का विवेचन भी किया है।

आचार्य वीरसेन का ज्योतिषविषयक ज्ञान कितना बढ़ा रहा है, यह उनके द्वारा धवला की प्रशस्ति में निर्दिष्ट सूर्य-चन्द्रादि ग्रहों के योग की सूचना से स्पष्ट है। इसके अतिरिक्त उन्होंने कालानुगम के प्रसंग में जो दिन व रात्रिविषयक 15-16 मुहूर्तों का उल्लेख किया है तथा नन्दा-भद्रा आदि तिथि विशेषों का भी निर्देश किया है वह भी उनके ज्योतिष शास्त्रविषयक विशिष्ट ज्ञान का बोधक है। (ध. पु. 4, पृ. 318-19)

(मलयगिरि सूरि ने ज्योतिष करण्डक की टीका (गाथा 52-53) में उक्त च जम्बू द्वीपप्रज्ञप्ती इस सूचना के साथ तीन गाथाओं को उदधृत करते हुए 30 मूहूर्तों का उल्लेख किया है, जिनमें कुछ नाम समान और कुछ असमान हैं । इसी प्रकार मलयगिरि सूरि ने उक्त ज्यो. क. की टीका (103-4) में तथा चोक्तं चन्द्रप्रज्ञप्ती ऐसी सूचना करते हुए नन्दा-भद्रादि तिथियों का उल्लेख किया है। साथ ही वहाँ

उग्रवती भोगवती आदि रात्रितिथियों का भी उल्लेख है।)

आगे कृति अनुयोगद्वार में आगमद्रव्य कृति के प्रसंग में वाचना के इन चार भेदों का निर्देश किया गया है- नन्दा, भद्रा, जय और सौम्या। अनन्तर उनके स्वरूप को स्पष्ट करते हुए कहा गया है कि जो तत्त्व का व्याख्यान करते हैं अथवा उसे सुनते हैं उन्हें द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की शुद्धिपूर्वक ही तत्त्व का व्याख्यान अथवा श्रमण करना चाहिए। इन शुद्धियों के स्वरूप को दिखलाते हुए कालशुद्धि के प्रसंग में कब स्वाध्याय करना चाहिए और कब नहीं करना चाहिए, इसका धवला में विस्तार से विचार किया गया है। इसी प्रसंग में आगे अत्रोपयोगिश्लोकाः ऐसी सूचना करते हुए लगभग 25 श्लोकों को कही से उदधृत किया गया है। उक्त शुद्धि के बिना अध्ययन-अध्यापन से क्या हानि होती है, इसे भी वहाँ बताया गया है। (ध.पु. 9 पृ. 252-251) यह सब वीरसेनाचार्य के ज्योतिर्वित्त्व का परिचायक है।

भाषा एवं व्याकरणिक अवदान-

मूलग्रंथ षट्खण्डागम एवं धवला टीका की भाषा शौरसेनी है। प्राचीन समय में मथुरा के आस-पास के प्रदेश को शूरसेन कहा जाता था। इस प्रदेश की भाषा होने के कारण उसे शौरसेनी कहा गया है। व्याकरण में उसके जिन लक्षणों को निर्देश किया गया है वे सब प्रस्तुत षट्खण्डागम, धवला और प्रवचनसार आदि दिगम्बर ग्रन्थों की भाषा में पाये जाते हैं, परन्तु आधुनिक भाषा-शास्त्रियों ने इस भाषा का जैन शौरसेनी प्राकृत कहा है। प्रवचनसार व तिलोयपण्णत्ती आदि प्राचीन दिगम्बर ग्रन्थों की प्रायः यही भाषा रही है। शौरसेनी गद्य-साहित्य की दृष्टि से आचार्य वीरसेन स्वामी का सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। उसका शुद्ध रूप संस्कृत नाटकों मे पात्रकों में पात्र विशेष के द्वारा बोली जाने वाली प्राकृत में कहीं-कहीं देखा जाता हैं। आचार्य वीरसेन की शब्दशास्त्र में भी अबाध गति रही है। उन्होंने अपनी इस धवला टीका में यथाप्रसंग अनेक शब्दों के निरूक्तार्थ को प्रकट करते हुए आवश्यकतानुसार उन्हें व्याकरणसूत्रों के आश्रय से सिद्ध भी किया है। यथा-

1. सत्प्ररूपणा अनुयोगद्वार के प्रारम्भ में आचार्य पुष्पदन्त द्वारा किये गये पंच-परमेष्ठि नमस्कारात्मक मंगल के प्रसंग में धवलाकार ने धातु, निक्षेप, नय, निरूक्ति और अनुयोगद्वार के आश्रय से मंगल के निरूपण की प्रतिज्ञा की है। इनमें धातु क्या है, इसे स्पष्ट करते हुए धवला में कहा गया है कि सत्तार्थक भू धातू को आदि लेकर जो समस्त अर्थवस्तुओं के पाचक शब्दों की मूल कारणभूत हैं उन्हें धातु कहा जाता है। प्राकृत में मंगल शब्द को मगि धातु से निष्पन्न कहा गया है। यहाँ यह शंका की गई कि धातु की प्ररूपणा यहाँ किस लिए की जा रही है। इसके उत्तर में धवलाकार ने कहा है कि जो शिष्य धातुविषयक ज्ञान से रहित होता है उसे उसके बिना अर्थ का बोध होना सम्भव नहीं है। इस प्रकार शिष्य को शब्दार्थ का बोध हो, इसके लिए धातु की प्ररूपणा की जा रही है। आगे अपने अभिप्राय की पुष्टि में इस श्लोक को उदधृत करते हुए यह स्पष्ट कर दिया है कि पदों की सिद्धि शब्दशास्त्र से हुआ करती है। (धवला पु. 1, पृ. 9-10)

शब्दात् पदप्रसिद्धिः परसिद्धेरर्थनिर्णया भवति। अर्थात् तत्त्वज्ञानं तत्त्वज्ञानात् परं श्रेयः॥

अभिप्राय यह है शब्द (व्याकरण) से पदों की सिद्ध होती है, पदों की सिद्धि से अर्थ का निर्णय होता है,अर्थ से वस्तु-स्वरूप का बोध होता है, और वस्तु- स्वरूप का बोध होने से उत्कृष्ट कल्याण होता है। इस प्रकार इस सबका मूल कारण धातु-ज्ञान है व्याकरण सापेक्ष है।

आगे धवला में मंगल (पु.1, पृ. 32-34) अरिहन्त, (पृ. 42-44), आचार्य (पृ. 48) साधु (पृ. 51), जीवसमास (पृ. 131) और मार्गणार्थता (पृ. 131) आदि शब्दों की निरूक्ति की गयी है।

2. जीवस्थान खण्ड के अन्तर्गत आठ अनुयोगद्वारों में दुसरा द्रव्यप्रमाणानुगम अनुयोगद्वार है।

उसमें उसके शब्दार्थ को स्पष्ट करते हुए धवला में प्रथमतः द्रवति, द्रोष्यति, अदुद्रवत्, पर्यायान् इति द्रव्यम्। अथवा द्रूयते, द्रोष्यते, अद्राविं पर्याय इति द्रव्यम् इस प्रकार द्रव्य शब्द की निरुक्ति की गई है। तत्पश्चात द्रव्यभेदों को प्रकट करते हुए उनमें जीवद्रव्य को प्रसंगप्राप्त बतलाकर प्रमाण शब्द की निरूक्ति इस प्रकार की गई है- प्रमीयन्ते अनेन अर्थाः इति प्रमाणम्। अनन्तर द्रव्य और प्रमाण इन दोनों शब्दों मे द्रव्यस्य प्रमाणं द्रव्यप्रमाणम् इस प्रकार से तत्पुरुष समास किया गया है।

3. धवला में आगे यथाप्रसंग इन समासों का उपेयाग भी किया गया है। उदाहरणस्वरूप भावानुगम में यह सूत्र आया है- **लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिय-णीललेस्सिय-काउलेस्सिएसु चदुट्ठाणी ओघं।** (सूत्र 1.7.51)

इसमें प्रयुक्त चदुट्ठाणी पद में चदुण्हं ठाणाणं समाहारो चदुट्ठाणी इस प्रकार से धवला में द्विगु समास का उल्लेख करते हुए सूत्रोक्त कृष्णादि तीन लेश्याओं में से प्रत्येक में ओघ के समान पृथक-पृथक चार गुणस्थानों का सद्भाव प्रकट किया गया है। (धवला पु. 5, पृ. 221)

4. विभक्तिलोप- सूत्र 1.1.4 (पृ. 1) में गइ और लेस्सा भविय सम्मत्त सण्णि इन पदों में कोई विभक्ति नहीं है। इस सम्बन्ध में धवला में यह स्पष्ट किया गया है कि आईमज्झंतवण्ण-सरलोवो (कीरइ पयाण काण वि आई-मज्झंतवण्ण-सरलोवो। - जयधवला 1.133) सूत्र के अनुसार यहाँ इन पदों मे विभक्ति का लोप हो गया है। आगे अहवा कहकर विकल्प के रूप में यह भी कह गया है कि लेस्सा-भविय-सम्मत्त-सण्णि-आहारए यह एक पद है, इवसलिए उसके अवयव पदों में विभक्तियाँ नहीं सुनी जाती है। (धवला पु. 1, पृ. 133)

5. वेदनाखण्ड के प्रारम्भ में जो विस्तार से मंगल किया गया है उसमें यह एक सूत्र है- णमो अमोसहिपत्ताणं (2.1.30)। इसकी व्याख्या करते हुए धवला में आमर्षः औषधत्वं प्राप्तो येषां ते आमषो षधप्राप्ताः इस प्रकार से बहुव्रीहि समास किया है। इस प्रसंग में वहाँ यह शंकार उठायी गई है कि सूत्र में सकार क्यों नहीं सुना जाता। इसका उत्तर में कहा गया है कि आई-मज्झंतवण्ण-सरलोवो इस सूत्र के अनुसार यहाँ सकार का लोप हो गया है। पश्चात् वहीं दूसरी शंका यह की गई कि ओसहि में इकार कहाँ से आ गया। **इसके उत्तर में कहा गया है कि एए छच्च समाण दोण्णिय संझक्खरा अट्ठ। अण्णोण्णस्स परोप्परमुवेंति सव्वे समावेसं ।।** (धवला पु. 12, पृ. 286) इस सूत्र के आधार से यहाँ हकारवर्ती अकार के स्थान में इकार हो गया हे। (धवला पु. 9, पृ. 15-16)

णमोकार मंत्र के कर्ता - संबंधी विचार-

जो ख्याति और प्रचार हिन्दुओं में गायत्री मन्त्र का है तथा बौद्धों में त्रिसरण मन्त्र का था, वहीं जैनियों में णमोकार मन्त्र का है। धार्मिक तथा सामाजिक सभी कृत्यों व विधानों के आरम्भ में जैन लोग इस मन्त्र का उच्चारण करते हैं। यही उनका दैनिक जपमन्त्र है। इसकी प्रख्यातिका एक पद्य निम्न प्रकार है, जो नित्य पूजनविधान में उच्चारण किया जाता है।

एसो पंच-णमोयारो सव्वपापप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होइ मंगलं ।।

अर्थात् यह पंच नमस्कार मन्त्र सब पापों का नाश करने वाला है और सब मंगलों में प्रथम (श्रेष्ठ) मंगल है। इस मन्त्र का प्रचार जैनियों के तीनों सम्प्रदायों-दिगम्बर, श्वेताम्बर और स्थानकवासियों में समान रूप से पाया जाता है। तीनों सम्प्रदायों के प्राचीनतम साहित्य में भी इसका उल्लेख मिलता है। किन्तु अभी तक यह निश्चय नहीं हुआ कि इस मन्त्र के आदिकर्ता कौन हैं। यर्थार्थतः यह प्रश्न ही अभी तक किसी ने नहीं उठाया और इस कारण इस मन्त्र को अनादिनिधन जैसा पद प्राप्त हो गया है। किन्तु षट्खंडागम और उसकी टीका धवला के अवलोकन से इस णमोकार मन्त्र के कृर्तत्व के सम्बन्ध में

कुछ प्रकाश पड़ता है, और इसी का यहां परिचय कराया जाता है।

षटखंडागम का प्रथम खण्ड जीवट्ठाण है और इस खंड के प्रारम्भ में यही सुप्रसिद्ध मन्त्र पाया जाता है। टीकाकार वीरसेनाचार्य अनुसार यही उक्त ग्रन्थ का सूत्रकारकृत मंगलाचरण है। वे लिखतेहैं कि-

मंगल-णिमित्त-हेऊ -परिमाणं णम तह य कत्तारं।

वागरिय छप्पि पच्छा वक्खाणउ सत्थमाइरियो ।।

इदि णायमाइरिय-परंपरागयं मणेणावहारिय पुव्वाइरियायाराणुसरणं तिरयणहेउ त्ति पुप्फदंताइरियो मंगलादीणं छण्णं सकारणाणं सुत्तमाह-णमो अरिहंताण, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं (मूलसूत्र 1.1.1., ध. 1, पृ. 7-8)

अर्थात् मंगल निमित्त, हेतु, परिमाण, नाम और कर्ता इन छहों का प्ररूपण करके पश्चात् आचार्य को शास्त्र का व्याख्यान करना चाहिए। इस आचार्य परम्परागत न्याय को मन में धारण करके पुष्पदन्ताचार्य मंगलादि छहों के सकारण प्ररूपण के लिये सूत्र कहते हैं, णमो अरिहंताण आदि।

इसके आगे धवलाकरने इसी मंगल सूत्र को तालपलंब सूत्र के समान देशामर्षक बतलाकर पूर्वोक्त मंगल, निमित्त आदि छहों का प्ररूपक सिद्ध किया है। तत्पश्चात मंगल शब्द की व्युत्पत्ति व अनेक दृष्टियों से भेद प्रभेद बतलाते हुए मंगल के दो भेद इस प्रकार किये हैं।

तच्च मंगलं दुविहं णिबद्धमणिबद्धमिदि। तत्थ णिबद्धं णाम, जो सुत्तस्सादीए सुत्तकत्तारेण णिबद्ध-देवदा-णमोक्कारो तं णिबद्ध-मंगलं। जो सुत्तस्सादीए सुत्तकत्तारेण कय-देवदा-णमोक्कारो तमणिबद्ध-मंगलं। इदं पुण जीवट्ठाणं णिबद्ध-मंगलं। जो सुत्तस्सादीए सुतकत्तारेण कयदेवदाणमोक्कारो तमणिबद्ध-मंगलं। इदं पुण जीवट्ठाणं णिबद्ध-मंगलं, यत्तो इमेसिं चोद्दसण्हं जीवसमासाणं इदि एदस्य सुत्तस्सादीए णिबद्ध णमो अरिहंताणं इच्चादि-देवदा-णमोक्कारदंसणादो।

अर्थात मंगल दो प्रकार का है, निबद्ध और अनिबद्ध। सूत्र के आदि में सूत्रकर्ता द्वारा जो देवता-नमस्कार निबद्ध किया जाय वह निबद्ध मंगल है और जो सूत्र के आदि में सूत्रकर्ता द्वारा देवता को नमस्कार किया जाता है (किन्तु वह नमस्कार लिपिबद्ध नहीं किया जाता) वह अनिबद्ध-मंगल है। यह जीवट्ठाणं निबद्ध मंगल है, क्योंकि इसके इमेसिं चोद्दसण्हं आदि सूत्र के पूर्व अरिहंताणं इत्यादि देवता नमस्कार पाया जाता है।

इससे यह सिद्ध हुआ कि जीवट्ठाण के आदि में जो यह णमोकार मंत्र पाया जाता है वह सूत्रकार पुष्पदन्त आचार्य द्वारा ही वहां रखा गया है और इससे उस शास्त्र को निबद्ध-मंगल संज्ञा प्राप्त हो जाती है। किन्तु इससे यह स्पष्ट ज्ञात नहीं होता कि यह मंगलसूत्र स्वयं पुष्पदन्ताचार्य ने रचकर यहां निबद्ध किया है, यहाँ कहीं अन्यत्र से लेकर रख दिया है। पर अन्यत्र धवलाकार ने इसका भी निर्णय किया है।

वेदनाखंड आदि में में णमो जिणाणं आदि मंगलसूत्र पाये जाते हैं, जिनकी टीका करते हुए धवलाकर ने उनके निबद्ध अनिबद्ध स्वरूप का विवेचन किया है (ध.पु. 1)। वे लिखते है-

तत्थेदं किं णिबद्धमाहो अणिबद्धमिदि ? ण ताव णिबद्ध-मंगलमिदं, महाकम्मपयडिपाहुडस्स कदियादि-चउवीस-अणियोगावयवस्स आदीए गोदसामिणा परूविदस्य भूदबलिभडारएण वेयणाखंडस्स आदीए मंगलट्ठ तत्तो आणेदूण ठविदस्स णिबद्धत्त-विराहोदा। ण च वेयणाखंड महाकम्मपयडिपाहुडं अवयवस्स अवयवित्त-विरोहादा। ण च भूदबली गोदमो, विगलसुदधारयस्स धरसेणाइरियसीसस्स भूदबलिस्स सयलसुधारय-वड्ढमाणंतेवासि-गोदमत्त-विरोहादा। ण चण्णो पयारो णिबद्धमंगलतस्स हेदुभूदो अत्थि।

अर्थात् यह मंगल (णमो जिणांण, आदि) निबद्ध है या अनिबद्ध। यह निबद्ध-मंगल तो नहीं है।

क्योंकि महाकर्म प्रकृति पाहुउ के कृति आदि चौबीस अनुयोगद्वारों के आदि में गौतम स्वामी ने इस मंगल का प्ररूपण किया है ओर भूतबलि भट्टारक ने उसे वहां से उठाकर मंगलार्थ यहां वेदना खंड के आदि में रख दिया है, इससे इसके निबद्ध-मंगल होने में विरोध आता है। न तो वेदनाखंड महाकर्म प्रकृति पाहुड है, क्योंकि अवयवको अवयवी मनाने में विरोध आता है। और भूतबली ही गौतक हैं क्योंकि विकलश्रुत के धारक और धरसेनाचार्य के शिष्य भूतबलि को सकलश्रुत के धारक और वर्धमान स्वामी के शिष्य गौतम मानने में विरोध उत्पन्न होता है। और कोई प्रकार निबद्ध मंगलत्वका हेतु हो नहीं सकता।

आगे टीकाकार ने इस मंगल को निबद्ध मंगल भी सिद्ध करने का प्रयन्त किया है, पर इसके लिए उन्हें प्रस्तुत ग्रन्थ का महाकर्म प्रकृति पाहुड से तथा भूतबलि स्वामी का गौतम स्वामी बड़ी खींचातानी द्वारा एकत्व स्थापित करना पड़ा है। इससे धवलाकार का यह मत बिलकुल स्पष्ट हो जाता है कि दूसरे के बनाये हुए मंगल को अपने ग्रन्थ में जोड़ देने से वह शास्त्र निबद्ध-मंगल मानते हैं तब वे स्पष्टतः उस मंगल सूत्र को सूत्रकार पुष्पदन्त की ही मौलिक रचना स्वीकार करते हैं, वे यह नहीं मानते कि उस मंगल को उन्होंने अन्यत्र कहीं से लिया है। इससे धवलाकार आचार्य वीरसेन का यह मत सिद्ध हुआ कि इस सुप्रसिद्ध णमोकार मंत्र के आदिकर्ता प्रातः स्मरणीय आचार्य पुष्पदन्त ही हैं।

विवेचन पद्धती :

आचार्य वीरसेन एक लब्धप्रतिष्ठ प्रामाणिक टीकाकार रहें हैं। वे प्रतिभाशाली बहुश्रुत विद्वान थे। उनके सामने पूर्ववर्ती विशाल साहित्य रहा है, जिसका उन्होंने गम्भीर अध्ययन किया था व यथावसार उसका उपयोग अपनी इस धवला टीका की रचना में किया-यह बात उनके द्वारा लगभग 700 से 800 उद्धरण वाक्यों से (ग्रन्थ, ग्रन्थाकार और उक्तं च आदि वाक्यों से स्पष्ट हो जाती है।)

प्रतिपाद्य विषय का स्पष्टीकरण व उसका विस्तार करते हुए भी धवलाकर ने अपनी ओर से कुछ नहीं लिखा , जो कुद भी उन्होंने लिखा है वह परम्परागत श्रुत के आधार से ही लिखा है। इस प्रकार से उन्होंने अपनी प्रमाणिकता को सुरक्षित रक्खा है। मतभेद का प्रसंग उपस्थित होने पर उन्होंने सर्वप्रथम सूत्र को महत्व दिया है। यथा-

जीवस्थान-चूलिका के अन्तर्गत सम्यक्त्वोत्पत्ति चूलिका में चारित्रप्राप्ति के विधान की प्ररूपणा करते हुए उस प्रसंग में धवलाकार ने कहा है कि जो मिथ्यादृष्टि जीव वेदक सम्यक्तत्व और संयमासंयम दोनों को एक साथ प्राप्त कर रहा है कि उसके अनिवृत्तिकरण के बिना दो ही करण होते हैं । कारण यह है कि अपूर्वकारण के अन्तिम समय में वर्तमान इस मिथ्यादृष्टि का स्थितिसत्त्व से संख्यातगुणा हीन होता है। इसे स्पष्ट करते हुए इसी प्रसंग में आगे धवला में कहा गया है कि अपूर्वकरण परिणाम सभी अनिवृत्तिकरण परिणामों से अनन्त गुणहीन होते हैं, यह कहना योग्य नहीं है, क्योंकि उसका प्रतिपादक कोई सूत्र नहीं है। इसके विपरीत उपर्युक्त संख्यातगुणे हीन स्थितिसत्त्व की सिद्धि इसी सूत्र (1.9-8.14) से हो जाती है।

इस प्रकार यहाँ उपयुक्त सूत्र के बल पर धवला में यह सिद्ध किया है जो मिथ्यादृष्टि वेदकसम्यक्त्व और संयमासंयम दोनों को एक साथ प्राप्त करने के अभिमुख है उसका स्थितिसत्त्व प्रथम सम्यक्त्व के अभिमुख हुए अनिवृत्तिकरण के अन्तिम समयवर्ती मिथ्यादृष्टि की अपेक्षा संख्यातगुणा हीन होता है, अनन्तगुणा हीन नहीं।

पुनरूक्ति दोष का निराकरण अर्थात् सूत्र-प्रतिष्ठा:

मूल सूत्रों में कहीं-कहीं पुनरूक्ति भी हुई है। इसके लिए शंकाकार द्वारा जहाँ-जहाँ पुनरूक्ति दोष को उदभावित किया गया है। किन्तु धवलाकार वीरसेन स्वामी ने उसे दोषजनक न मानकार उस तरह के अनेक सूत्रों को सुव्यवस्थित व निर्दोष सिद्ध किया है। इसके लिए यहाँ कुछ उदाहरण दिये जाते हैं-

प्रकृतिसमुत्कीर्तन चूलिका- 1. में णाणावरणीयस्स कम्मस्य पंच पयडीओ ।13। आभिणिबोहिय-णाणावरणीयं सुदणाणावरणीयं ओहिणाणरवरणीयं मणपज्जवणाणावरणीयं केवलणाणावरणीयं चेदि। (मूलसूत्र 1.9.1.13-14) के द्वारा प्रश्नोत्तर रूप में ज्ञानावरणीय की पाँच प्रकृतियों का उल्लेख किया जा चुका था। फिर भी आगे स्थानसमुत्कीर्तन चूलिका, (2) में उनका पुनः यही सूत्र 1-9-2.4 पर उल्लेख किया गया है।

इसकी व्याख्या करते हुए उस प्रसंग में यह आशंका प्रकट की गयी है कि पुनरुक्त होने से इस सूत्र को नहीं कहना चाहिए। इसके समाधान में धवलाकर कहते हैं कि ऐसी आशंका करना उचित नहीं है, क्योंकि सब जीवों के धारणावरणीय (आभिनिबोधिक ज्ञानावरणी विशेष) कर्म का क्षयोपशम समान नहीं होता। यदि सब जीवों के द्वारा ग्रहण किया गया अर्थ टाँकी से उकेरे गये अक्षर के समान विनष्ट नहीं होता तो पुनरुक्त दोष हो सकता था, पर वैसा सम्भव नहीं है, क्योंकि किन्हीं जीवों में जल में लिखे गये अक्षर के समान उस गृहीत अर्थ का विनाश उपलब्ध होता है। इसलिए भ्रष्ट संस्कार वाले शिष्यों को स्मरण कराने के लिए इस सूत्र का कथन करना उचित ही है। (धवला, पु. 6, पृ. 81)

इस प्रकार प्रकृत सूत्र के पुनरुक्त होने पर भी धवलाकर ने उसकी विधिवत् संगति बैठा दी है। धवला में ऐसे अनेक उदाहरण देखे जा सकते हैं।

सूत्र-विरूद्ध व्याख्यान का निषेध:

जीवस्थान-स्पर्शानानुगम में ज्योतिषी देव सासादनसम्यग्दृष्टियों के स्पर्शन की प्ररूपणा करते हुए उनके स्वस्थान क्षेत्र के प्रसंग में धवलाकर को ज्योतिषी देवों के भागहार के प्ररूपक सूत्र (1.2.55) के साथ संगति बैठाने के लिए स्वयम्भूरमणसमुद्र के आगे राजु के अर्धच्छेद मानना पडे हैं। इस पर शंकाकार ने कहा है कि ऐसा स्वीकार करने पर जितने द्वीप-समुद्र हैं तथा जितने जम्बूद्वीप के अर्धच्छेद है, एक अधिक उतने ही राजु के अर्धच्छेद होते हैं इस परिकर्म के साथ यह व्याख्यान क्यों न विरोध को प्राप्त होगा। इसके उत्तर में धवलाकार ने कहा है- हाँ, यह व्याख्यान उस परिकर्म के साथ तो विरोध को प्राप्त होगा, किन्तु सूत्र के साथ विरोध को नहीं प्राप्त होता हैं, इसलिए इस व्याख्या को ग्रहण करना चाहिए, न कि उस परिकर्म के कथन को, क्योंकि वह सूत्र के विरूद्ध है। और सूत्र के विरूद्ध व्याख्यान होता नहीं है, क्योंकि वैसा होने पर अव्यवस्था का प्रसंग प्राप्त होता है। (धवला, पु.4, पृ. 155-56) इस प्रकार यहॉ धवलाकार ने सूत्र के विरूद्ध जाने से उपर्युक्त परिकर्म के कथन हो अग्राह्य घोषित किया है।

परस्पर-विरूद्ध सूत्रों के सदभाव में धवलाकार का दृष्टिकोण :

धवलाकार के समक्ष ऐसे भी अनेक प्रसंग उपस्थित हुए हैं जहाँ सूत्रों में परस्पर कुछ अभिप्रायभेद रहा है। ऐसे प्रसंगों पर धवलाकार ने कहीं दोनों ही सूत्रों को प्रमाणभूत मानने की प्रेरणा की है, तो कहीं पर उपदेश प्राप्त कर उनकी सत्यता-असत्यता के निर्णय करने की प्रेरणा की है। कहीं उनमें समन्वय करने का प्रयन्त किया है, तथा कही पर आगमानुसारिणी युक्ति के बल पर अपना स्वतंत्र अभिप्राय भी व्यक्त कर दिया है।

सूत्र के अभाव में आचार्य-परम्परागत व गुरु के उपदेश को महत्व :

धवलाकार के समक्ष जहाँ तक विवक्षित विषय से सम्बन्धित सूत्र रहा है, उन्होंने उसे ही महत्त्व दिया है । किन्तु जब उनके समक्ष विवक्षित विषय से सम्बद्ध सूत्र नहीं रहा है तब उन्होंने आचार्यपरम्परागत उपदेश या गुरुपदेश को भी महत्त्व दिया है। इसके लिए यहाँ कुछ उदाहरण दिए जाते हैं।

जीवस्थान- द्रव्यप्रमाणानुगम में सूत्रकार में सूत्रकारद्वारा प्रमत्तसंयतों का प्रमाण कोटिपृथकत्व

निर्दिष्ट किया गया है। (पमत्तसंजदा दव्वपमाणेण केवडिया ? कोडिपुधत्तं। सूत्र 1.2.7)

इसकी व्याख्या के प्रसंग में धवला में यह शंका की गयी है कि कोटिपृथक्त्व से तीन करोड के नीचे संख्या को ग्रहण करना चाहिए। पर उसके अनेक विकल्प होने से में उनमें से प्राकृत में कौन सी संख्या अभिप्रेत रही है, यह नहीं जाना जाता। इसके स्पष्टीकरण में धवलाकर ने कहा है कि वह परमगुरु के उपदेश से जानी जाती है। तदनुसार उन प्रमत्तसंयतों का प्रमाण पाँच करोड तेरानवँ लाख अट्ठानवै हजार दो सौ छह (59398206) है। इस पर पुनः यह पूछा गया है कि वह संख्या इतनी मात्र ही है, यह कैसे जाना जाता है। इसके उत्तर में धवलाकार ने कहा है कि वह आचार्य परम्परागत जिनोपदेश से जाना जाता है। यही प्ररूपणा का क्रम अप्रमत्तसंयतों के विषय में भी रहा है। (धवला, पु. 13, पृ. 88-89)

दक्षिण-उत्तर-प्रतिपत्ति (पवाइज्जंत-अपवाइज्जंत)

धवलाकार के समक्ष आचार्य परम्परा से चला आया उपदेश रहा है, जिसके बल पर उन्होंने विवक्षित विषय का स्पष्टीकरण किया है। धवला में ऐसे उपदेश का उल्लेख कहीं पर दक्षिणप्रतिपत्ति और कहीं पर पवाइज्जंत (प्रवाह्यमान) के नाम से भी किया गया है। यथा-

जीवस्थान-द्रव्यप्रमाणनुगम में सूत्रकार ने चार उपशामकों की संख्या का निर्देश प्रवेश की अपेक्षा एक, दो, तीन व अधिक- से अधिक चौवन तक किया है। काल की अपेक्षा उन्हें संख्यात कहा गया है। (सूत्र-1.2.9-10)

इस प्रसंग में धवला में कहा गया है कि अपने उत्कृष्ट प्रमाणयुक्त जीवों से सहित सब समय एक साथ नहीं पाये हैं, इसलिए कुछ आचार्य पूर्वोक्त (304) प्रमाण से पाँच कम करते हैं। इस पाँच कम के व्याख्यान को धवलाकार ने पवाइज्जमाण, दक्षिण प्रतिपत्ति व आचार्य- परम्परागत कहा है। इसके विपरीत पूर्वोक्त (304) व्याख्यान को उन्होंने अपवाइज्जमाण, वाम (उत्तरप्रतिपत्ति) व आचार्य परम्परा से अनागत कहा है। (धवला, पु. 3, पृ. 91-92)। 2. चार क्षपकों व अयोगिकेवलियों की वह संख्या उपशामकों से दूनी (304 गुणे 2 =608) है। यहाँ भी धवलाकार ने उपरोक्त दोनों प्रकार के व्याख्यान का निर्देश करते हुए दस (5 गुणे 2) कम के व्याख्यान को दक्षिण प्रतिपत्ति और संपुणे छह सौ आठ के व्याख्यान को उत्तरप्रतिपत्ति कहा है।

स्वतन्त्र अभिप्राय:

जैसा कि पूर्व में स्पष्ट किया जा चुका है, धवलाकार आचार्य वीरसेन ने विवक्षित विषय के स्पष्टीकरण में सर्वप्रथम सूत्र को महत्व दिया है। पर जहाँ उन्हें सूत्र उपलब्ध नहीं हुआ वहाँ उन्होंने प्रसंगप्राप्त विषय का स्पष्टीकरण आचार्य परम्परागत उपदेश और गुरुपदेश के बल पर भी किया है। किन्तु जहाँ उन्हें ये दोनों भी उपलब्ध नहीं हुए वहाँ, उन्होंने आगमानुसारिणी युक्ति के बल पर अपने स्वतन्त्र मत को प्रकट किया है।

षट्खण्डगम पर इस महत्त्वपूर्ण विशाल धवला टीका के रचयिता बहुश्रुतशाली आचार्य वीरसेन रहे हैं। उन्होंने मूल ग्रंथ में निर्दिष्ट विषय का विशदीकरण ग्रन्थकार के मनोगत अभिप्राय की सीजा से सम्बद्ध रहकर ही किया है। प्रसंग प्राप्त विषय का विस्तार यदि कहीं अपेक्षित रहा है तो मूलग्रन्थकार के अभिप्राय का ध्यान रखते हुए ही उन्होंने उसे परम्परागत श्रुत के आधार से विस्तृत किया है। उनकी इस धवला टीका से निम्नलिखित विशेषताएँ सामने आती हैं-

1. ज्ञानाचार के चतुर्थ भेदभूत बहुमान ज्ञानाचार का पूर्णतया निर्वाह करते हुए उन्होंने प्रसंगप्राप्त विषय के विवेचन में सूत्र ओर सूत्रकार ओ आसादना नहीं होने दी है, दोनों की प्रतिष्ठा को निर्बंध रक्खा है।

2. सूत्रकार द्वारा निर्दिष्ट, पर स्वयं उनके द्वारा अप्ररूपित, प्रसंगप्राप्त विषय की प्ररूपणा उन्होंने आगमाविरोध पूर्वक प्राप्त श्रुतज्ञान के बल पर विस्तार से की है।

3. विरूद्ध मतों के प्रसंग में उन्होंने सूत्राश्रित व्याख्यान को प्रधानता दी है।

4. सूत्र के उपलब्ध न होने पर विवक्षित विषय के व्याख्यान में उन्होंने आचार्य-परम्परा-गत उपदेश को और गुरु के उपदेश को भी प्रधानता दी है।

5. कुछ प्रसंगों पर सूत्र के विरूद्ध जाने वाली अन्य आचार्यों की मान्यताओं को अप्रमाण घोषित कर सूत्रानुसारिणी युक्ति के बल पर उन्होंने उस प्रसंग में दृढ़तापूर्वक स्वयं के अभिमत को भी प्रस्थापित किया है।

6. प्रसंगप्राप्त विषय का विशदीकरण करते हुए उन्होंने व्याख्यात तत्त्व की पुष्टि प्राचीन आगम-ग्रन्थों के अवतरणों द्वारा की है।

7. धवलाकार के ही समय से मूल सूत्रों में कुद पाठ-भेद हो चुका था, जिसे उन्होंने प्रसंग के प्राप्त होने पर स्पष्ट भी कर दिया है।

8. कुछ सूत्रों के विषय में शंकाकार द्वारा पुनरूक्ति व निरर्थकता आदि दोषों को उद्भावित किया गया है। उनका प्रतिषेध करते हुए आगमनिष्ठ वीरसेनाचार्य ने उनकी निर्देषिता व प्रामाणिकता को पुष्ट किया है।

9. प्रस्तुत टीका दुरूह संस्कृत का आश्रय न लेकर सार्वजनिक हित की दृष्टि से सरल व सुबोध प्राकृत-संस्कृत मिश्रित भाषा में रची गई है।

आद्योपान्त इस धवला टीका का परिशील करने से, जैसा कि उसकी प्रशस्ति में निर्देश किया गया है, आचार्य वीरसेन की सिद्धान्त-विषयक अगाध विद्वत्ता, व्याकरणवैदुष्य, गम्भीर गणितज्ञता, ज्यातिर्वित्त्व और तार्किकता प्रकट है।

संदर्भ ग्रंथ-

1. षटखंडागम-शहा सुमति बाई, आचार्य शांतिसागर दिगम्बर जैन जिनवाणी जीणोद्धारक संस्था, श्रुतभंडार व ग्रंथप्रकाशन समिति, फलटण (महाराष्ट्र) 1965.
2. षट्खंडागम धवला टीका भाग 1 ते 16 जैन हीरालाल, श्रीमंत सेठ लक्ष्मीचंद्र शिताबराय, जैन साहित्योद्धारक फंड, अमरावती (महाराष्ट्र), 1939 ते 1955.
3. षट्खंडागम परिशीलन, शास्त्री पं. बालचंद्र, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली 1987

हमारे गौरव

महारानी कुन्दब्बे

महाराज विमलादित्य की पट्टरानी थी वह तंजोरी के राजराजा चोल की पुत्री और राजेन्द्र चोल की बहन थी जो बड़ी धर्मात्मा और जिनभक्त थी। सम्भवतया इस रानी के प्रभाव से ही राजा भी जैनधर्म का अनुयायी हुआ था। महारानी कुन्दब्बे ने अपने भाई राजेन्द्र चोल के राज्य में पवित्र पर्वत तिरमलै के शिखर पर कुन्दब्बे-जिनालय नाम का भव्य मंदिर बनवाया था, और उसके लिए ग्राम आदि दान दिये थे। लेख राजेन्द्र चोल के राज्य के 12 वें वर्ष सन् 1023 ई. का है। लगता है कि उसके कुछ पूर्व विमलादित्य की मृत्यु हो गयी थी और विधवा महारानी कुन्दब्बे अपने मायके जाकर अपने भाई के आश्रय में रहती हुयी धर्मसाधन पूर्वक जीवन व्यतीत कर रही थी।

हास्य तरंग

1. एक नेता जी मैदान से पत्थर चुन रहे थे। यह देखकर उनके परिचित ने पूछा अरे नेता जी ! आप इतनी गर्मी में यह श्रमदान क्यों कर रहे हो ?

नेता जी-बात यह है कि मैंने अमीर नई पार्टी ज्वाईन कर ली है कल मेरा इसी मैदान पर चुनावी भाषण होने वाला है।

2. रास्ते में बस लूटने के बाद कुछ दूरी पर पुनः डाकुओं ने बस रूकवाई जिससे सभी यात्री घबराकर चुप हो गये कि अचानक डाकुओं ने सभी यात्रियों को पूछ कर उनकी लूटी रकम वापिस करने लगे। इस दृश्य को देख सभी यात्री आश्चर्य चकित हो गये एक व्यक्ति ने साहस जुटा कर पूछा कि आपका अचानक हृदय परिवर्तन किसकी प्रेरणा से हुआ। डांकु नहीं भाई बस लूटने पर मुश्किल से 5 लाख रूपये का माल मिला है, जबकि पुलिस थाने पर ही 10 लाख रूपये देने पड़ेगे।

3. जन्मदिन पार्टी में एक लड़की लड़के से बोली क्या आप डांस करना पसंद करेंगे ? लड़के ने खुश होते हुए कहा हाँ क्यों नहीं। लड़की बोली तो फिर आपकी कुर्सी ले जाऊँ।

4. वकालत का फार्म भरते समय पास खड़े चौकीदार से लड़की ने पूंछा ये कॉलेज कैसा है। चौकीदार बहुत ही बड़िया हमने भी यही से वकालत की है।

5. नवविवाहित पति पत्नी से अभी तक भोजन नहीं बना रहने दो मैं बाहर खा लूंगा। पत्नी बस दस मिनिट रूको पति क्या दस मिनिट में भोजन बन जायेगा ? पत्नी नहीं मैं भी दस मिनिट में तैयार होकर आपके साथ चल रही हूँ। **जिनेन्द्र कुमार जैन (गौरीनगर)**

मोतियाबिन्द रोग व नियंत्रण

वृद्धावस्था में प्रायः दो रोग सभी को सताते हैं एक है मोतियाबिन्द तथा दूसरा प्रोस्टेट। मोतियाबिन्द व्यक्ति के शारीरिक स्वास्थ्य गिरावट होने का संकेत देता है। आँख की दोनों पलकों को अंदर श्लैष्मिक झिल्की को चक्षुकला कहते हैं। इसके बाद आँख में सफेदी दिखती है उसे कार्निया कहते हैं। इसके आगे आँख के पर्दे पर एक छेद दिखाई देता है जिसे प्यूपिल कहते हैं इसके बाद एक लेंस होता है जिसमें बाहर की वस्तुऐं की शक्ल गुजर कर रेटीना पर पड़ती है, ओर हम देखते हैं। आँख का लेंस स्वच्छ तरल पदार्थ से भरा रहता है जो पारदर्शक होता है, तब तक हमें सब वस्तुऐं साफ दिखाई देती है। परन्तु स्वच्छ पदार्थ अस्वच्छ कड़ा हो जाने पर (जैसे जल जमकर बर्फ) लेंस अपारदर्शक हो जाने पर धुंधला या कुछ दिखाई नहीं देता है इसी को मोतियाबिन्द या कैटरेक्ट कहते हैं। मोतियाबिन्द होने पर प्यूपिल के ऊपर एक छोटी सी सरसों के दाना जैसा मोती की भांति दिखाई देने से मातियाबिन्द नाम पड़ा है।

मोतियाबिन्द साधारण तथा दो प्रकार का होता हे एक कोमल जो बचपन से 30 वर्ष की उम्र तक दूसरा कठोर 45 वर्ष के बाद प्रायः होता है। मोतियाबिन्द होने के तीन प्रमुख कारण हैं । 1. अधिक नमक का उपयोग 2. अधिक मीठा खाना 3. कठोर जल चूना मिला पीना इसके अतिरिक्त अधिक मात्रा से क्विनाइन खाना, बहुत दिनों तक बदहजमी, अर्जीव रोग, बवासीर होना, आँखों में चोट, इन्फेक्शन , हाथ पैरों से निकलता पसीना अचानक बंद अत्याधिक शराब धुम्रपान करना, प्रदूषण भरे क्षेत्रों में देर तक रहना होना, गठिया,वातरोग, सिफिलिस आदि कारण है। ऐलोपेथिक दवाईयों का बहुत अधिक सेवन करना

अत्याधिक व्यक्तियों की धारणा है कि ऑपरेशन ही अंतिम विकल्प है, वास्तव में ऑपरेशन में बहुत बार जो फायदा होता है। किन्तु यह देखने में आया है कि कुछ समय बाद कुछ व्यक्तियों को आँखों से दिखाई देना बंद हो गया है। ऑपरेशन में दूषित लैंस निकालकर कृत्रिम लगाया जाता है।

हैम्योपैथी चिकित्सा पद्धति में रोग का कारण ज्ञात करके लैंस को अपारदर्शन होने पकने से बचाने पर कई रोगी सम्पूर्ण आरोग्य हो जाते है और कुछ रोगी पूर्ण अरोग्य न होने पर दृष्टि शक्ति में उन्नत होती है। रोग के आरम्भ में औषधि सेवन से रोग नहीं बढ़ता है। इस रोग को 5-6 माह तक औषधि लेनी पड़ती है किसी योग्य अनुभवी चिकित्सक से इलाज करायें।

उक्त जिन तीन प्रमुख कारणों से रोग होता है उनके परहेज जैसे नमक, मीठा कम या बंद कर देना। मीठा जल उपयोग, रसदार फलों का उपयोग। आँखों को स्वस्थ्य रखने हेतु प्राकृति क चिकित्सा कसरत करना आदि द्वारा ईश्वर द्वारा प्रदत्त बहुमूल्य अंग आँखों की सुन्दरता को पूरी उम्र सुरक्षित रखा जा सकता है। **जिनेन्द्र कुमार जैन (गौरीनगर)**

बाल कहानी

डॉक्टर की सिगरेट

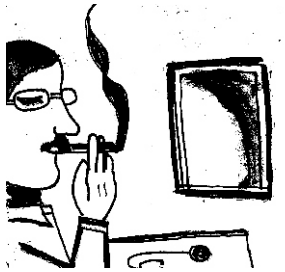

डॉ. विश्वास का दवाखाना हमेशा भरा रहता था। डॉ. विश्वास के ऊपर लोगों को इतना विश्वास था कि उनकी कोई भी दवा हर रोगी को फायदा करती थी। सस्ती फायदाकारी डॉ. विश्वास की दवा लेकर आदमी खुशी खुशी अपने घर जाता था। डॉ. विश्वास का पूरा नाम तपन विश्वास था ग्रामीण अंचल के व्यक्ति लाइन में लगकर अपना इलाज कराने आते थे। नरेन्द्र भी एक बार तीर्थ यात्रा पर निकला था। अचानक उसके सीने में दर्द हो गया चन्देरी जैसी जगह में नरेन्द्र को दिखाने के लिये मैनेजर सोनू से पूछताछ की सोनू ने बताया भाई साहब आप एक काम करें डॉ. विश्वास के पास मेरे साथ चले मेरा यकीन है कि डॉ. विश्वास की सीढ़ी चढ़ते ही आपका दर्द कम होना शुरु हो जायेगा नरेन्द्र को तो अपने सीना दर्द को लेकर न जाने कितनी आशंकाये हो रही थ्झी। गाजियाबाद से तीर्थयात्रा पर निकले नरेन्द्र को 15 दिन हो गये थे। 15 दिन में पहली बार वह बीमार हुआ था और वह भी सीने में दर्द पर सोनू की बात सुनकर उसे ऐसा लगा कि सचमुच सुषेण नाम का वैद्य यहाँ रहता हो सोनू और नरेन्द्र अपने परिवार सहित डॉ. तपन विश्वास के यहाँ पहुँचे।

क्लीनिक का समय समाप्त होने वाला ही था कि सोनू ने जाकर डॉ. तपन को नरेन्द्र के सीना दर्द के बारे में बताया डॉ. तपन ने सबसे पहले नरेन्द्र से पूँछा आप सिगरेट पीते हैं क्या ? नरेन्द्र ने कहाँ मैं सिगरेट पीता हूँ तब डॉ. विश्वास ने सिगरेट से हानि के बहुत सारे चार्ट और चित्र नरेन्द्र को दिखाये जिन्हें देखकर नरेन्द्र ने अपने मन में निश्चित कर लिया कि अब मुझे सिगरेट पीना छोड़ना है। और सचमुच में डॉ. विश्वास की एक डोज ने नरेन्द्र के दर्द को कम कर दिया दर्द कम होते ही नरेन्द्र ने खन्दागिरी के दर्शन बहुत आस्था के साथ किये परन्तु उसके मन में एक बात आयी कि वह अपनी पत्नी को भी दिखाले हो सकता है कोई अच्छा फार्मूला मिल जाये। घर के सामने से गाड़ी निकाल रहा था डॉ. तपन विश्वास अपने क्लीनिक के बाहर खड़े-खड़े सिगरेट पी रहे थे नरेन्द्र बहुत आश्चर्य में पढ़ गया कि जिस डॉक्टर की प्रेरणा से मैंने आजीवन सिगरेट का त्याग कर दिया अब में सिगरेट तो नहीं पीऊँगा पर सिगरेट की बुराईया जानने वाला डॉक्टर सिगरेट क्यों पी रहा है। डॉ. का यह दुसरा चरित्र देखकर नरेन्द्र ने निश्चय किया कि डॉक्टर की सिगरेट अलग होती होगी पर मैं तो सिगरेट नहीं पीऊँगा

कविता

मानवता का दीप जले

✻ राजकुमार जैन राजन (राजस्थान)✻

फट फटाक, धूम धड़ाक, क्या शान से जले पटाखे ।
फूल झरे फुलझड़ियों से, बम करता है शोर भड़ाके ।।
फैला उत्साह जन-जन में, खुशियाँ-मिठाई घर-घर में ।
आई जगमग जगमग दीवाली, ज्योति बरसती जग भर में ।।
दीप खड़े कतारों में कहते, भुलाओं नही यह सीख साथी
जग भर में प्रकाश फैला कर, तम में रह जाती बाती ।।
द्वन्द्व द्वेष की करो विदाई, हर मन-मंदिर में प्रेम फले ।
चलें निरंतर सद् -पथ पर सब, मानवता का दीप जले ।।

संस्कार गीत

प्यारी पिच्छी का

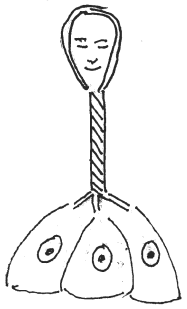

पिच्छी कोमल लघु सुन्दर
बडी प्यारी सी लगती है
बडे वे भाग्यशाली है
जिस कर में पिच्छी रहती है।

1.
मनोहर पंख जब मोर
स्वयं ही छोड देता है
श्रावक बीन कर उनको
पिच्छी का रूप देता है
दिगम्बर साधु के कर में
सदा पिच्छी सुहाती है।

2.
अहिंसा धर्म है सच्चा,
जिसे जो पालते हर दम
दया उर में बसे
जिनके सदा ही पालते संयम
असंख्यों जीव जन्तु को
अरे पिच्छी बचाती है।

3.
मुनि पहचान पिच्छी है
मुनि का प्राण पिच्छी है
नहीं झाड़ा फूँकी करने
कभी मिलती ये पिच्छी है
मुनि की साधना पिच्छी
साथ पग पग निभाती है।

बाल कविता

चलें चंदेरी

चलें चंदेरी गिरि खंदार
जीवन का कर लें उद्धार

ऊँची पहाड़ी मनोहरी
चारों और से हरी भरी
आदिनाथ की मूरत है
वीतरागमय सूरत है
गुफा मंदिर अति सुन्दर है
रमते देव पुरंदर है

सप्त जिनालय है सुखकार
सहज शांति का दे उपहार
अड़तालीस फिट ऊँचे भगवान
देते पथ मुक्ति पथ अभिराम

समाचार

समाधिमरण

धुवड़ी आसाम- मुनि श्री पुण्यसागर महाराज जी के संसघ सान्निध्य में उनके ही शिष्य मुनि श्री क्षेमन्कर सागर जी महाराज का समाधिमरण श्री दिगम्बर जैन मंदिर धुवड़ी आसाम में 15 अक्टूबर 2018 को रात्रि 8.30 बजे हुआ।

आगरा (उ.प्र.)- आचार्य श्री ज्ञानसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में उनके ही शिष्या आर्यिका अर्चितमति माताजी की समाधि श्री गर्वमेन्ट इन्टर कॉलेज आगरा में दिनांक 15 अक्टूबर 2018 को दो. 12.30 बजे हुई।

मरसलगंज (उ.प्र.)- आचार्य सौभाग्य सागर महाराज जी संसघ सान्निध्य में उनके ही शिष्य मुनि श्री सौम्यसागर जी महाराज का दिनांक 15 अक्टूबर 18 को प्रातः 10.15 महामृत्युंजय तीर्थ उदी मोड़ ईटावा में समतापूर्वक समाधिमरण हुआ।

शरद पूर्णिमा गुरु आराधना दिवस

इन्दौर- श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर इन्दौर में दिनांक 24 अक्टूबर 2018 बुधवार को आर्यिका श्री आदर्शमति माताजी के संघ के आर्यिका श्री श्वेतमति माताजी, आर्यिका विदेहमति माताजी, आर्यिका श्री अवायमति माताजी के संसघ सान्निध्य में आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के 73वाँ जन्मोत्सव को गुरु आराधना दिवस के रूप में मनाया गया। जिसमें रात्रि में सामुहिक आरती नृत्य प्रतियोगिता आयोजित की गई। जिसमें त्रिशला आरती मंडल रहली ने प्रथम स्थान तथा परदेशीपुरा महिला मंडल ने द्वितीय स्थान महालक्ष्मी महिला मंडल ने तृतीय स्थान प्राप्त किया पंचबालयति बालिका मंडल ने विशेष स्थान प्राप्त किया। जिसमें भैया सुन्दर लाल जी शांतिलाल जी गोधा चित्रानावरण किया राजीव सेठी श्रीमति विमला देवी लाला ने दीप प्रज्जवलन किया , अध्यक्षता श्री मनोज कासलीवाल मुख्य अतिथि प्रकाश छाबड़ा विशेष अतिथि हंसमुख गांधी, श्री सुशील डबडेरा रहे। श्री विरेन्द्र जी ,एम के जैन साहब, श्री हर्ष जैन, श्री आजाद मोदी, धमेन्द्र जैन, आलोक जैन कोयला, प्रदीप बड़जात्या, सचिन जैन, हंसमुख गांधी, मनोज बाकलीवाल,प्रदीप जैन आदि ने आचार्य श्री की आरती करने का एवं शास्त्र भेंट करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

निःशुल्क चिकित्सा शिविर एवं नेत्र जांच चश्मा वितरण सम्पन्न

इन्दौर- श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर इन्दौर में दिनांक 24 अक्टूबर 2018 बुधवार को शैल्वी हॉस्पिटल के डॉक्टरों द्वारा निःशुल्क चिकित्सा की गई। जिसमें डॉ. राकेश जैन, डॉ. राहुल शुक्ला, डॉ. गजराथ सिंह पंवार, डॉ. प्रियंका जैन, डॉ. अर्पणा जैन, डॉ. सुमित सिन्हा, डॉ. ऋषि खन्ना, डॉ. केशव सिंह, डॉ. गौरव जैन ने चिकित्सा परामर्श देकर मरीजों को सन्तुष्ट किया। तथा डॉ अनुपमा विकास जैन, श्रीमति विमला अजित कासलीवाल, काला फाउन्डेशन की ओर से निःशुल्क नेत्र जांच शिविर तथा चश्मा वितरण का कार्य सम्पन्न हुआ।

श्री 1008 कल्पद्रुम महामंडल विधान सम्पन्न

इन्दौर-श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर विजयनगर इन्दौर में दिनांक 16 से 24 अक्टूबर 2018 तक आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के शिष्या आर्यिका श्री

आदर्शमति माता जी, आर्यिका श्री श्वेतमति माताजी, आर्यिका श्री विदेहमति माताजी, आर्यिका श्री अवायमति माताजी आदि के संसघ सान्निध्य में 1008 कल्पद्रुम महामंडल विधान सम्पन्न हुआ। जिसमें चक्रवर्ती बनने का सौभाग्य श्रीमति संध्या धमेन्द्र जी सागर वाले, सोधर्म इन्द्र बनने का सौभाग्य श्रीमति स्वीटी शेलेन्द्र जी, कुबेर बनने का सौभाग्य श्रीमति हर्ष तृप्ती जैन, बाहुबली बनने का सौभाग्य श्रीमति आराधना विजय जी जैन को प्राप्त हुआ। जिसमें विधानाचार्य ब्र. अनिल भैया अधिष्ठाता उदासीन आश्रम, ब्र.जिनेश मलैया प्रधान सम्पादक संस्कार सागर पंचबालयति मंदिर इन्दौर रहे। दिनांक 21 अक्टूबर 2018 रविवार को दिगविजय यात्रा निकाली गयी। प्रतिदिन महाआरती विभिन्न स्थानों प्रारम्भ होकर विधानमंडप पर पहुंची। जिसके निर्देशक ब्र. सुरेश मलैया पंचबालयति मंदिर इन्दौर रहे।

प्राकृत भाषा में परीक्षा दें

इन्दौर- श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर इन्दौर में प्राकृत भाषा में पत्राचार कोर्स से प्रथमा, मध्यमा, विशारद, प्राकृत रत्न आदि की परीक्षा होती है। जैन धर्म की मूल भाषा प्राकृत है। जिसका अध्ययन पंचबालयति मंदिर में कराया जाता है। अतः आप कोई भी परीक्षा देना चाहते है तो 15 नवम्बर तक फार्म भरे जा सकते है। सम्पर्क सूत्र ब्र. समता दीदी मारौरा इन्दौर मो. 8989845294, ब्र.जिनेश मलैया प्रधान सम्पादक संस्कार सागर श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर इन्दौर 8989505108 को शीघ्र ही सूचित कर फार्म भरने का सौभाग्य प्राप्त करें। तथा प्राकृत का ज्ञान अर्जन करें।

झांकी में प्रथम पुरस्कार

इन्दौर- श्री दिगम्बर जैन सामाजिक सांसद इन्दौर द्वारा श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर इन्दौर को पयुर्षण में धूपदशमी के दिन झांकी लगाने पर प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। पुरस्कार वितरण 14 अक्टूबर 2018 को हुआ। पुरस्कार लेने पंचबालयति मंदिर से भागचन्द्र जी मलैया, इंजी. अभिषेक जैन, डी.के. जैन डी.एस.पी., ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष डॉ. अरविन्द जैन, सुबोध मारौरा आदि गये। इस झांकी में राकेश जैन अर्पणा गारमेन्ट का सक्रिय सहयोग रहा।

हथकरघा सद्भावना सम्मेलन सम्पन्न

खजुराहो- आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज जी के संसघ सान्निध्य में हथकरघा सद्भावना सम्मेलन दिनांक 14 अक्टूबर 2018 को श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र खजुराहो में सम्पन्न हुआ। जिसमें सागर केन्द्रीय जेल के बंदियों द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम किये गये। जिसका संयोजन डॉ. रेखा जैन पूर्व डी.एस.पी, तथा डॉ नीलम जैन, भैया अमित जैन आदि ने किया। जिसमें ब्र. जयनिशांत टीकमगढ़, ब्र. संजीव भैया कटंगी, ब्र. शैलू भैया कटंगी, ब्र. विजय भैया लखनादौन आदि का राखी में सक्रिय सहयोग देने पर सम्मान किया गया।

स्वास्थ्य शिविर सम्पन्न

टीकमगढ़- मुनि श्री प्रत्यक्षसागर महाराज की स्मृति में स्वास्थ्य शिविर सम्पन्न हुआ। जिसमें 47 सम्भावित केंसर के रोगियों का निदान किया गया। जिसमें डॉ. अंशुमान दीवान, डॉ. अखिलेश जैन सागर, डॉ. अमित चौधरी ने लोगों को परामर्श देकर लाभान्वित किया। डॉ. निधिशा अग्रवाल ने केंसर रोग से बचाव एवं सावधानियाँ लोगों को समझायी। केंसर चिकित्सा एवं शोध संस्थान ग्वालियर से डॉ. मोनिका दीवान, डॉ. जाहीद जहेरी, डॉ.निधिशा अग्रवाल ने केंसर रोगों का परिक्षण कर लगभग 47 रोगियों के नमूने जांच हेतु ग्वालियर भेजे गयें।

अखिल भारतीय संस्कार सागर परीक्षा

माह : नवम्बर 2018

01. आचार्य श्री सुबल सागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
02. आचार्य श्री युधिष्ठिर सागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
03. आचार्य श्री यतिन्द्र सागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
04. आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
05. आचार्य श्री विद्यानंद जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
06. आचार्य श्री विमल सागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
07. आचार्य श्री विराग सागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
08. आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
09. आचार्य श्री सुप्रभ सागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
10. आचार्य श्री सुयश सागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
11. आचार्य श्री आदित्य सागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
12. आचार्य श्री आस्तिक्य सागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
13. आचार्य श्री अरिजित सागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
14. आचार्य श्री विशद सागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
15. आचार्य श्री विश्वानंद सागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
16. आचार्य श्री विगुण सागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
17. आचार्य श्री विभव सागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
18. आचार्य श्री आचरण सागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
19. आचार्य श्री अध्ययन सागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
20. आचार्य श्री विमर्श सागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
21. आचार्य श्री विश्वक्ष सागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
22. आचार्य श्री विहर्ष सागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
23. आचार्य श्री विहसंत सागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
24. आचार्य श्री विनिश्चय सागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
25. आचार्य श्री संस्कार सागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
26. आचार्य श्री विमद सागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?

27. आचार्य श्री विनम्रसागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
28. आचार्य श्री प्रज्ञसागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
29. आचार्य श्री विनिश्चल सागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
30. आचार्य श्री विभास्वर सागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
31. मुनि श्री विशेष सागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
32. मुनि श्री विश्रुत सागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
33. मुनि श्री विश्रांत सागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
34. मुनि श्री विश्वनाथ सागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
35. मुनि श्री विकसंत सागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
36. मुनि श्री विभंजन सागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
37. मुनि श्री विहसंत सागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
38. आर्यिका श्री विशाश्री माता जी का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
39. आर्यिका श्री विभाश्री माता जी का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
40. आर्यिका श्री विंध्यश्री माता जी का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
41. आर्यिका श्री विज्ञाश्री माता जी का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
42. आर्यिका श्री विनतश्री माता जी का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
43. आर्यिका श्री विदक्षाश्री माता जी का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
44. आर्यिका श्री ज्ञेयश्री माता जी का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
45. आचार्य श्री विवेक सागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
46. आचार्य श्री विनीत सागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
47. आचार्य श्री वासुपूज्य सागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
48. आचार्य श्री विभक्त सागर जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
49. आचार्य श्री वैराग्यनंदी जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
50. आचार्य श्री वसुनंदी जी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?

संस्कार सागर चातुर्मास विशेषांक अगस्त 2018 से

अगले माह से दिव्योपदेश आचार्य श्रीविद्यासागर महाराज जी के प्रवचनांश से प्रश्न पूछे जायें गे। अतः जो ग्रंथ मंगाना चाहते है। वह कार्यालय में सम्पर्क करें। फोन 0731- 4003506, मो. 8989505108

अखिल भारतीय संस्कार सागर परीक्षाः नवम्बर 2018

प्रश्न पत्र भरकर भेजने की अंतिम तिथि माह की 25 तारीख रहेगी

नाम .....स्थान .....

उम्र .....सदस्यता क्र. .....

पूर्ण पता .....

पिन कोड ..... फोन नं..... (एस.टी.डी.) .....

1	2	3	4	5
6	7	8	9	10
11	12	13	14	15
16	17	18	19	20
21	22	23	24	25
26	27	28	29	30
31	32	33	34	35
36	37	38	39	40
41	42	43	44	45
46	47	48	49	50

आपके नगर के संवाददाता का नाम ..... हस्ताक्षर

नियम :– ..... जब तक दूसरा प्रश्न–पत्र भरकर नहीं भेजतेतब तक के लिए।

वर्ग पहेली 235

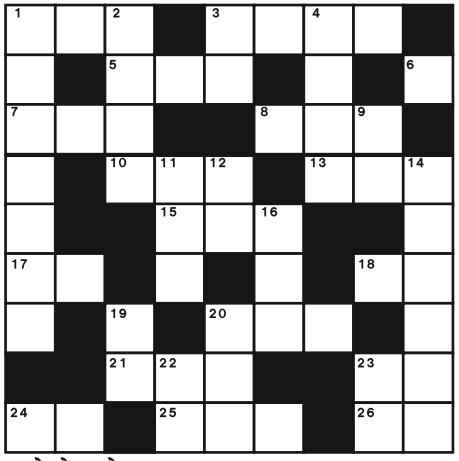

ऊपर से नीचे

01. एक प्राकृत भाषा अनुप्रेक्षा ग्रंथ -7
02. पक्षियों की आवाज -4
03. उत्साही व्यक्ति, भगवान महावीर एक नाम -2
04. पथिक, यात्री -4
06. मेरा अर्थवाची अव्यय संस्कृत -1
09. पराग, धूल -2
11. मात्र, केवल -3
12. ईसाई, साध्वी -2
14. राजवार्तिक ग्रंथ का दूसरा नाम -6
16. दृष्टि -3
20. कुसमाकर गुलशन -3
22. रसन इन्द्रिय का विषय -2
23. एक शहर का नाम -2

बाये से दाये

01. वह कौन सा माह है जिसमें भगवान महवीर को निर्वाण प्राप्ति हुई हो -3
03. वीत गया है राग जिनका वह -4
05. तरंग, कलोल, उर्मी, हिलोर -3
07. बाजूबंद -3
08. रियासत, मालगुजारी -3
10. उल्टी -3
13. चाँदी, रूक्मी -3
15. मारना, हिंसा, हत्या -3
17. प्यार, लव, मुहब्बत -2
18. अर्जुन का दूसरा नाम -2
19. ख्याति, प्रतिष्ठा, वर्चस्व -1
20. अंतिम, आखरी -3
21. कर्म, कर्तव्य -3
23. पूर्ण होने का भाव -2
24. जनता, पब्लिक -2
25. प्रेमी, प्रेमपात्र, प्रियतम -3
26. नासिका, स्वर्ग -2

वर्ग पहेली 234 का हल

1 अ	2 यो	3 ध्या	■	4 अ	5 म	रा	6 व	ती
7 म	ग	न	■	8 नु	त	■	9 न	त
न	■	■	10 त	प	■	11 ज	■	र
■	12 ते	■	13 रा	म	■	14 न	य	■
15 पा	■	16 वा	जु	■	17 म	■	18 दि	न
19 नी	20 र	ज	■	21 पा	द	22 प	■	■
■	घु	■	23 ह	वा	■	24 ग	25 ज	रा
26 ता	वी	ज	■	27 पु	28 र	■	29 ल	व
30 ला	र	■	31 सु	र	क्षा	■	32 ज	ल

.....सदस्यता क्र. .....

पता : .....

वर्ग पहली प्रतियोगिताओं के विजेताओं को **हरसाहमल सत्येन्द्रकुमार जैन** (गोकुल बाजार, रेवाड़ी, हरियाणा) की ओर से पुरस्कृत किया जाएगा। प्रथम पुरस्कार : 101रु. द्वितीय पुरस्कार 51 रू., तृतीया पुरस्कार 41 रू.)
प्रतियोगिता भरकर भेजने की अंतिम तिथि माह की 25 तारीख रहेगी